स्वामी सच्चिदानन्द गिरि

भैषज्य भास्कर

(आयुर्वेद के राम बाण नुस्खे)



स्वामी सच्चिदानन्द गिरि

भैषज्य भास्कर

डायमंड पॉकेट बुक्स में स्वास्थ्य, योग, सैक्स एजुकेशन व महिलापयोगी पुस्तकें

रेकी (स्पर्श चिकित्सा के अद्भूत रहस्य)*	99.00
रेकी (स्पर्श से सुखी प्राकृतिक चिकित्सा)*	60.00
रेकी (सार्वभौमिक उर्जा)*	60.00
भोजन द्वारा स्वास्थ्य*	40.00
मानसिक रोग, कारण और निवारण*	30.00
अस्थमा, एलर्जी, कारण और निवारण*	30.00
दादी माँ के घरेलु नुस्खे*	30.00
आँखों के रोग और उनका इलाज*	30.00
घरेलू इलाज*	30.00
नशा एवं एड्स का उपचार*	30.00
कमर दर्द, कारण और निवारण*	30.00
श्वांस संबंधी रोग और उनका उपचार*	30.00
स्त्री रोगों की सहज चिकित्सा*	30.00
त्वचा रोग एवं सौन्दर्य (Skin Care)*	30.00
पेट, पथरी, गैस रोग कारण और निवारण*	30.00
चुम्बक चिकित्सा*	30.00
मोटापा कैसे घटाएं*	20.00
कद कैसे लम्बा करें*	20.00
मधुमेह : कारण और इलाज*	30.00
हार्ट अटैक: कारण और इलाज*	30.00
एक्यूपंचर गाइड*	30.00
एक्यूप्रेशर गाइड*	30.00
पारिवारिक होम्योपैथिक गाइड*	40.00
आयुर्वेदिक औषधियां	40.00
ऐलोपैथिक गाइड	45.00
प्राकृतिक चिकित्सा*	30.00
सूर्य चिकित्सा*	30.00
तनाव मुक्ति के उपाय*	30.00
अपना स्वास्थ्य अपने हाथ*	40.00
फलों व सब्जियों के रस से चिकित्सा*	30.00
भैषज्य भास्कर*	50.00
जड़ी-बूटियों से इलाज*	30.00
नाड़ी भविष्य*	30.00
योगासन और स्वास्थ्य*	40.00
स्वमूत्र चिकित्सा*	25.00
एड्स	5.00
मैरिज मैनुअल (युवा दम्पनि के लिए सैक्स गाइड)*	30.00
मेडिकल सैक्स गाइड*	40.00

वृहद् वात्सयन कामसूत्र*	30.
सैक्स समस्याएं और समाधान*	30.
सैक्स और पति पत्नी	25.
सैक्स के 101 सवाल	25.
सैक्स समस्याएं और उनकी औषधियां	25.
सैक्स और स्त्री पुरुष	25.
सैक्स पावर कैसे बढ़ाएं	25.
सैक्स शक्ति कैसे बढ़ाएं*	40.
संभोग शक्ति कैसे बढ़ाएं	25.
तंत्र शक्ति साधना और सैक्स*	30.
विवाहित जीवन और सैक्स*	40.
लेडीज स्लिमिंग कोर्स*	30.
मनचाही सन्तान कितनी आसान*	30.
लेडीज हैल्थ गाइड*	40.
गर्भवती व शिशु पालन	30.
बेबी हैल्थ गाइड*	30.
ब्यूटी गाइड*	40.
बच्चों के सुन्दर नाम*	25.
लेडीज संगीत	25.
स्तन सौंदर्य	20.
डायमंड कुकरी गाइड	25.
अचार, मुरब्बे, चटनी	25.0
शाकाहारी व्यंजन	25.0
मांसाहारी व्यंजन	25.0
नाश्ते के व्यंजन	25.0
मेंहदी से श्रृंगार*	20.0
आधुनिक मेंहदी डिजाइन	30.0
सूखी, भरवां, रसेदार सब्जियां कढ़ियां व दालें*	40.0
दक्षिण भारतीय व्यंजन*	40.0
पंजाबी व्यंजन*	40.0
गुजराती व्यंजन*	40.0
मिठाइयां, आइस्क्रीम, पुडिंग, केक और पेस्ट्री*	40.0
चाईनीज व्यंजन*	40.0
जूस, शरबत तथा अन्य पेय पदार्थ*	40.0
मुगलई कुक बुक*	40.0
चावल के व्यंजन*	40.0
माइक्रोवेव कुकिंग*	40.0
लोकलोरिज व्यंजन*	40.0

डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़–2, नई दिल्ली–110020

पुस्तक V.P.P से मंगाने के लिये 10/- की Postal Stamps आर्डर के साथ अवश्य भेजें। कोई भी तीन पुस्तकें मंगवाने पर डाक व्यय फ्री। डाक व्यय प्रति पुस्तक 5/-

* पुस्तकें 23X36 (डिमाई साईज में)

भैषज्य भास्कर

लेखक
स्वामी सच्चिदानन्द गिरि

डॉयमण्ड पॉकेट बुक्स

प्रकाशक :
डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
वितरक :
पंजाबी पुस्तक भंडार
दरीबा कलां, दिल्ली-110006
मूल्य : पचास रुपये-50/-
मुद्रक : आदर्श प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा

BHAISHAJYA BHASKAR : SWAMI SHACHCHIDANAND GIRI

Rs. 50/-

ॐ

समर्पित



भगवान शंकर
को जिन्होंने मेरे अन्दर
ज्ञान का दीप जलाया

भैषज्य भास्कर

॥ पाठकों तथा स्वकुटुम्बियों से नम्र निवेदन ॥



श्री शुभ संवत् 2052 मासानाम उतमे मासे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्थीयाम को इस ग्रन्थ का नवीन संस्करण आरम्भ किया गया। गुरुजनों के अनुभूत प्रयोग तथा अनेक ग्रन्थों के अच्छे लघु तथा महान योगों का संकलन किया गया है। इसमें रोगों के निदान (लक्षण) तथा उत्पत्ति के कारण और उनसे मुक्त होने के प्रयोग जो सिद्ध हो चुके हैं, अंकित किये गए हैं। इनका अध्ययन करके अनुभव द्वारा रोगों की चिकित्सा सरलता के साथ की जा सकती है, जो नुस्खा प्रयोग किया जाये, उसको अनुमान करे कि इस योग से रोगी को लाभ है, या हानि। यदि हानि है तो उस दवा के प्रतिकूल यानि उलटी दवा देना चाहिये, अर्थात् यदि गर्म दवा दी गई लाभ नहीं हुआ तो सर्द दवा दें, यदि ठंड़ी दवा दी गई और लाभ नहीं हुआ तो गर्म दवा दें। बस इस प्रकार से औषधि का कार्य करने से धन की बचत होती है। वर्तमान समय में रोगों की इतनी बाढ़ है कि यदि धन देकर दवा कराई जाये तो हजारों रुपये में भी पूर्ति नहीं हो सकती। अतः गृहस्थ आश्रम में औषधि विज्ञान की जानकारी होना आवश्यक है। इससे धन की बचत, स्वास्थ्य का सुधार और धन का उपार्जन तथा गौरव, मान-प्रतिष्ठा होती है। पुरुष का धर्म है कि जिस मान-प्रतिष्ठा से धन भी मिले, ऐसे गुण अवश्य सीखे। इसमें कोई

कठिनाई नहीं है। धीरे-धीरे अभ्यास करने से नाड़ी ज्ञान हो जाता है। नाड़ी व निदान एक ही है, कोई अंतर नहीं होता। अतः हमेशा कार्य में आने वाली कुछ औषधियों का स्टॉक अवश्य रखना चाहिये, जैसे— आनन्द भैरव अभ्रक भस्म, तवकी हरताल भस्म, ताम्र भस्म, प्रवाल भस्म, मलेरिया ज्वर की वटी, जुलाबी इक्षाभेदी रस, हिंग्वाष्टक चूर्ण, दर्द कान का तेल। इन औषधियों से सम्पूर्ण पारिवारिक रोग अच्छे होते हैं। इसके अलावा अन्य रोगों की औषधि समय पड़ने पर बना लें बनाने में कोई परेशानी नहीं है। आलस्य न करें, औषधियों के बनाने का विधान इस पुस्तक में लिखे हैं। इस पुस्तक में एक-एक योग हजारों रुपयों का है। न जानने वाले के लिये कुछ नहीं है। प्रदर रोग, रक्तविकार के योग, धातु, नामर्दी के योग हजारों रुपया पैदा करा सकते हैं। बनाने में भी कठिनता नहीं है, क्योंकि हमारे प्रयोग ज्यादातर भस्मों द्वारा सब बन जाते हैं। भस्म इन्जेक्शन का कार्य करते हैं, इसको खायें तो फौरन रोग को हरण करता है। अब लेख को समाप्त करता हूं। चिकित्सा खंड में सब क्रियायें पढ़कर कार्य करें, अवश्य सफलता मिलेगी। धनोपार्जन करने की एक यह भी विद्या है। इसे अवश्य सीखो। बस यही प्रार्थना है मेरे परिश्रम को सफल करें। श्री अशोक भुटानी के सहयोग के लिये मैं निजी रूप से उनका धन्यवाद करता हूं।

संस्थापक एवं चेयरमैन:

स्वामी सच्चिदानंद गिरि

श्री ब्रह्मधाम सच्चिदानंद
चैरिटेबल ट्रस्ट, रजिस्टर्ड 80 जी के अन्तर्गत
कैलाश हिल्स
नजदीक सी-ब्लॉक मार्केट,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली-110065
फोन : 6922808

अनुक्रम

नाड़ी ज्ञान

पारब्रह्म परमेश्वर ने इस भौतिक शरीर की रचना पंच तत्त्वों द्वारा किया है। वायु, अग्नि, जल—पृथ्वी, आकाश यह शरीर में स्थित है। इन्हीं के द्वारा जीवन है। वायु, अग्नि, जल इन्हीं के अंश नाडियां हैं, जो वायु अर्थात् वात, पित्त, कफ कहलाते हैं। यह तत्त्व जब तक सम दशा में रहते हैं, तब तक शरीर को पालन करते हैं। जब कोई तत्त्व घट-बढ़कर विषमता पर हो जाते हैं, तब रोग को उत्पन्न कर देते हैं। इस विषमता को नष्ट करना ही औषधि क्रिया है। गर्म तथा ठंडी औषधियों से विषमता नष्ट होती है।

वायु—हवा का नाम है। शीतल वस्तुओं से उत्पन्न होती है। गर्म वस्तु से शमन होती है। यह भी पेट में गर्मी अर्थात् दाह उत्पन्न करती है।

पित्त—अग्नि का अंश है। गर्म वस्तुओं के सेवन से उत्पन्न होता है। गर्म तथा शरीर का पालक है, खाये हुए पदार्थ हजम करता है।

कफ—जल का अंश है। शीतल वस्तुओं के खाने से उत्पन्न होता है। दूषित जल के द्वारा बिगड़ जाता है। यह भी गर्मी उत्पन्न करता है इसकी सहायक वायु रहती है।

वायु के लक्षण

अंगूठे के मूल में प्रथम नाड़ी वायु की है, जो सर्प, जोक की तरह रनक देकर सरकती है। नाड़ी के देखने में तर्जनी अंगुली इस पर रहती है। हलके रूप में रखकर देखना चाहिये। किसी-किसी पुरुष की नाड़ी मांस में दबी हुई चलती है। उनकी नाड़ी दबाकर देखना चाहिये। यह गर्म औषधि से शमन होता है।

1. शरीर में कंपकंपी होती है। 2. पीड़ा उत्पन्न होती है। 3. शरीर को जकड़ देता है। 4. सिर में दर्द, चक्कर पैदा करता है। 5. कंठ एवं

मुख सूख जाता है। 6. प्यास ज्यादा लगती है। 7. मुख फीका बेस्वाद का रहता है। 8. भूख को बन्द करता है, मिचली आती है। 9. पेट में दाह जलन होती है। 10. पेट में दर्द पैदा करता है, फूला हुआ रहता है। 11. शरीर में गर्मी बनी रहती है। 12. शरीर में पसीना नहीं आता, गर्म रहता है, ज्वर पैदा करता है। 13. मूर्छा-बेहोशी पैदा करता है। 14. आलस-सा बना रहता है। 15. बकवाद पैदा करता है। 16. पेट में मल को संचय करता है, मटीला रंग का होता है, पेशाब का रंग लाल कर देता है। 17. कभी-कभी मल सूख कर गोटा बांध देता है, मल काला हो जाता है, अनपचा दस्त होता है और बार-बार दस्त होते हैं। 18. वायु रक्त को बिगाड़ देती है। 19. फोड़े-फुंसी, खुजली, चर्म रोग उत्पन्न कर देता है। 20. नींद कम आती है, व्यक्ति स्वप्न सा देखता रहता है, जम्हाई आती रहती है।

पित्त के लक्षण

पित्त अग्नि का अंश है। दूसरी नाड़ी है, जो मध्यमा उंगली के स्पर्श से ज्ञात होता है। सीधी टंकोर से नाड़ी चलती है। काक, मेढक की तरह कूदती चला करत्ती है। गर्म तथा तेज चाल से चलती है। पित्त ठंडी शीतल वस्तुओं से शमन होता है।

1.शरीर ठंडा रहता है। 2. पसीना अधिक आता है। 3. मुख का स्वाद कड़वा रहता है। 4. प्यास उत्पन्न होती है। 5. अधिक पित्त के बढ़ने पर क्षुधा बंद होती है। 6. मल पीले रंग का पतला या गाढ़ा हो जाता है, पेशाब पीला हो जाता है। 7. दिमाग में गर्मी के बढ़ने पर बकवाद पैदा करता है, मूर्छा या बेहोशी लाता है। 8. सिर में दर्द होता रहता है। 9. खाये हुये भोजन को पचाता है। 10. ज्वर पैदा करता है, खट्टे-कड़वे कै होते हैं।

कफ का लक्षण

कफ जल का अंश है। दूषित पानी से उत्पन्न होता है। यह तीसरी नाड़ी है। अनामिका उंगली से परीक्षा होती है। सीधी टंकोर से नाड़ी चला करत्ती है। मोर, बत्तख की तरह चलती है। गर्म औषधियों से शमन होता है।

1. छाती में पीड़ा, जलन होती है। 2. गले में खराश, खांसी आती है। 3. बदन में दर्द, ज्वर बना रहता है। 4. मुख का स्वाद मीठा सा रहता है। 5. मल श्वेत रंग का होता है, मूत्र भी श्वेत रंग का होता है।

अन्य कारणों पर नाड़ी-परीक्षा

ज्वर में नाड़ी तीव्र गर्म चलती है। कामातुर तथा भूखे मनुष्य की नाड़ी तीव्र गर्म चलती है। क्रोध से, चिंता से, भयभीत नाड़ी होने पर मंद-मंद तथा खाना खाये हुये पुरुष की नाड़ी क्षीण चलती है। सर्प के काटे रोगी की, हैजा के रोगी की नाड़ी क्षीण मंद-मंद चलती है। आंव के दस्तों में नाड़ी दबी हुई चलती है। मल से नाड़ी दबी हुई चलती है, सुखी पुरुष की नाड़ी सम गति से चलती है।

मल से उत्पन्न रोगों के लक्षण

हाथ-पैरों में जलन, हड़फूटन, पीनस, मष्तक की पीड़ा, वायु की उर्ध्वगति होती है जिससे डकारें तथा हिचकी आती है। गुदा से वायु नहीं खुलती। हृदय में पीड़ा का होना तथा पेट में दर्द पैदा करता है। कोष्ठ कड़ा करता है। वायु गोला हो जाता है। कमर में दर्द पैदा करता है। नेत्रों में रोग उत्पन्न करता है। रक्त को बिगाड़ देता है। ज्वर पैदा करता है। उक्त रोगों की दवा करने से पूर्व जुलाब द्वारा मल को निकालकर कोष्ठ को साफ करना उचित है, नहीं तो दवा से लाभ नहीं होता।

पृथक्-पृथक् रोगों के लक्षण

वात ज्वर के लक्षण

जब शरीर में जाड़ा लगे, कंठ होंठ सूखने, छींक तथा निद्रा न आये, बदन में पीड़ा, रूखापन, सिर में दर्द, प्यास बहुत लगे, भूख तथा स्वाद जाता रहे, दस्त न आये, पेट में शूल, अफारा, डकारें आयें, पेट फूल जाये, सांस में उवासी आये, पसीना नहीं निकले, प्रलाप, बकवाद करे तो समझ लें कि वातज्वर है।

पित्त ज्वर के लक्षण

नेत्रों में दाह, मुख में कड़ुवापन, प्यास लगे, अथवा न लगे, चक्कर आये, शरीर गर्म, ज्वर का वेग, पसीना आये, वमन हो, हरे-पीले दस्त पेशाब का रंग पीला हो तो पित्त ज्वर समझना चाहिए।

कफ ज्वर के लक्षण

अन्न में अरुचि, सिर भारी रहे, रोमांच हो, खांसी श्वास हो, हृदय-छाती में दर्द, नख सफेद हों, निद्रा बहुत आये, आलस-सा बना रहे, मुख का स्वाद मीठा हो, ज्वर का वेग कम हो तो समझना चाहिए कि कफ ज्वर है।

वात-पित्त ज्वर के लक्षण

शरीर में कंप, पीड़ा, मुख-होंठ सूखे, प्यास अधिक लगे, दस्त न हो और यदि आये तो पतले, वमन हो, पेट में अफारा-अरुचि, डकारें आये, मुख का स्वाद फीका हो, सिर में दर्द हो, ज्वर का वेग हो, पसीना नहीं निकले तो समझो वात पित्त ज्वर है।

वात-कफ-ज्वर के लक्षण

शरीर में कंप, बदन में दर्द, अरुचि, प्यास अधिक लगे, निद्रा न आये, खांसी श्वास का वेग हो, अफारा, पेट फूला रहे, मल बंद हो, दस्त न आये, मुख का स्वाद कसैला-मीठा-सा बना रहे, पसली व छाती में दर्द बना रहे तो समझो कि वात कफ ज्वर है।

पित्त-कफ-ज्वर के लक्षण

मुख-जिह्वा सूखे, कफ से युक्त खांसी, तन्द्रा, नेत्र झांपे रहे, प्यास, पेट में दाह, अरुचि, निद्रा न लगे, बदन में दर्द, मुख का स्वाद कड़वा मीठा हो, जिह्वा श्वेत हो जाये तो समझ लें—पित्त कफ ज्वर है।

त्रिदोष ज्वर के लक्षण

ज्वर का वेग, कंठ, होंठ सूखे, कंप हो, प्रलाप-बकवाद करे, पसलियों में दर्द, प्यास बहुत लगे, अंगों में शिथिलता, पतले दस्त हों, निद्रा न आये, खांसी श्वास का वेग हो, मूर्छा-बेहोशी हो, स्मरण शक्ति जाती रहे, चित में भ्रम हो, कंठ से बोल न निकले, पेट दाह में हिचकी आये, ज्ञान न रहे, कर्णशूल हो, गिलटी पड़ जाये, नेत्रों में लाली-चंचलता हो, जिह्वा खरखरी हो, बोलने में लड़खड़ाये, बहरापन हो तो समझ लें रोगी सन्निपात ज्वर से पीड़ित है।

जीर्ण ज्वर के लक्षण

जब रोगी को 21 दिन तक ज्वर बना रहे, उतरे नहीं। कभी ज्वर मंद और कभी बढ़ जाये, भूख न लगे, क्षीणता, कमजोरी बढ जाये तब समझ लें जीर्ण ज्वर है।

हिचकी के लक्षण

बहुत भोजन करना, पानी बहुत पीने से वायु उर्ध्वगामी हो जाती है। वादी वस्तुओं के खाने से वायु कुपित होकर हिचकी पैदा करती है। हिचकी के रोगी का शरीर कांपे, दृष्टि ऊंची हो, आंखों के सामने

अंधेरा हो, छींकें आयें तो यह लक्षण असाध्य है, मृत्यु हो जाती है।

डकारें आने के लक्षण

वायु कुपित होकर जब पेट में अफरा उत्पन्न कर देती है तब डकारें बहुत आने लगती हैं। यह वायु दोष से पैदा होती हैं।

छर्दि वमन का निदान

छर्दि वायु-पित्त-कफ—तीनों दोषों से उत्पन्न होती है।

वायु से—वमन वेग से हो, वमन में झाग, फेन आये, कष्ट बहुत हो, हृदय पसलियों में दर्द हो, मुख सूखे, प्यास बहुत लगे, मस्तक व नाभि में दर्द हो, डकारें आयें, श्वास तेज चले।

पित्त से—वमन हरा, पीला, कड़वा हो, मूर्छा, तृष्णा तथा प्यास लगती हो, मस्तक गर्म, आंखों के सामने अंधेरा हो, सिर में चक्कर आते हैं।

कफ से—वमन होने, तन्द्रा, आलस-सा होवे, मुख में मिठास व कफ युक्त वमन हो, निद्रा आये, अरुचि, शरीर भारी रहे।

राज रोग क्षयी का निदान

जब रोगी के कंधे, पसलियों में दर्द हो, हाथ-पैरों में जलन, ज्वर बना रहे, अरुचि, खांसी, श्वास का वेग हो, मुंह से कफ में रक्त मिला निकले, गले का शब्द पड़ा हुआ निकले तब क्षयी रोग की उत्पत्ति समझना चाहिए।

अरुचि का निदान

अरुचि तीनों दोषों से उत्पन्न होती है।

वायु से—मुख खट्टा, कसैला स्वाद का हो, हृदय में शूल हो, भोजन करने की रुचि न हो, अन्न में स्वाद न प्रतीत हो।

पित्त से—मुख कड़वा खट्टा, शरीर में दाद, मुख में सूजन, भोजन में अरुचि, कड़वापन लगे।

कफ से—मुख का स्वाद मीठा-सा रहे, बद्ध कोष्ठ, लार बहे, अंग-अंग में पीड़ा हो, भोजन में रुचि न रहे।

श्वास रोग निदान

श्वास रोग पांच प्रकार का होता है।

महा श्वास—जब रोगी श्वास से थक कर ऊंचा शब्द करे, ज्ञान नष्ट हो जाये, श्वास लेने में मुंह, नेत्र फट जाये, बोलने में कष्ट हो तब महा श्वास समझना चाहिए। यह असाध्य है।

ऊर्ध्व श्वास—जब रोगी ऊर्ध्व श्वास ऊपर को ले नीचे न आये, कफ से मुंह भर आये, ऊंची दृष्टि करे, नेत्रों में भ्रमता पैदा हो, मोह ग्लानि पैदा करे। यह असाध्य है।

(छिन्न श्वास) जब शरीर पांचों पवनों से पीड़ित होकर टूटी श्वास ले, पेट में अफारा, पसीना अधिक आये, नेत्र फट जाये, लाल हो जाये, चैतन्यता जाती रहे, शरीर का वर्ण बिगड़ जाये। यह असाध्य है।

तमक श्वास—शरीर का पवन उलटा चले, नाक के स्वर बन्द हो जाये, घुर-घुर शब्द करे, बोला ना जाये, नींद न आये, बैठे ही चैन आये, गर्मी अच्छी लगे, नेत्रों में सूजन, कपाल में पसीना आये, मुख सूखे, धौंकनी के समान श्वास ले। यह कष्ट असाध्य है।

क्षुद्र श्वास—यह रूखी वस्तुओं के खाने से उत्पन्न होती है। रोगी को दुःख नहीं होता। खाने-पीने की गति नहीं रुकती। यह साध्य है।

अम्ल-पित्त निदान

वायु के प्रकोप से मंदाग्नि उत्पन्न होकर भोजन का भली प्रकार पाचन न होने से यह रोग उत्पन्न होता है। इससे शरीर में खेद, वमन-सा आना, कड़वी खट्टी डकारें आती हैं। पेट में दाह, शरीर में भारीपन, भोजन में अरुचि हो जाती है।

आंव-वात निदान

वायु के प्रकोप से मंदाग्नि होकर अन्न का पाचन नहीं होता। चिकना गरिष्ट भोजन करने से पाचन नहीं होता। यह कच्चा रस जो नसों द्वारा कफ के स्थान में पहुंचता है, कफ वायु को प्रबल कर देता है। शरीर का वर्ण और नेत्र नख पीले हो जाते हैं। रक्त पानी हो जाता है। मल बंद हो जाता है। शरीर में सूजन आ जाती है। पीड़ा होने लगती है।

भोजन में अरुचि हो जाती है। तृष्णा दाह, आलस-सा बना रहता है। ज्वर बना रहता है। अंगों में शिथिलता, कमजोरी बढ़ जाती है।

रक्त-पित्त निदान—जब पित्त की गर्मी रक्त में प्रवेश कर जाती है तब गुदा, लिंग, मुख, नाक से खून बहता रहता है। सिर में दर्द बना रहता है।

गुल्म (वायु गोला) का निदान

रूखे भोजन के करने से, मल-मूत्र के रोकने से, चोट के लगने से, चिकने गरिष्ट भोजन के करने से, लंघन करने से गुल्म हो जाता है। नाभि के उपर गोले का स्थान है, यह वायु का गोला है। वादी से गांठ-सी बंध जाती है। मल बंद हो जाता है। अधो वायु रुकी रहती है। मुख सूखा रहता है। भोजन में रुचि नहीं रहती। मंदाग्नि हो जाती है। ज्वर बना रहता है। पेट में दर्द होता रहता है, भोजन के बाद दर्द बढ़ जाता है। शरीर का वर्ण काला कर देता है, यह सब लक्षण वायु गोले के हैं।

यकृत-प्लीहा का निदान

यकृत और प्लीहा यह दोनों शरीर के मुख्य अंग हैं। दाहिनी पसलियों के नीचे पेट में यकृत और बाईं तरफ पसलियों के नीचे प्लीहा का स्थान । यह दोनों रुधिर से पैदा होती हैं। इन दोनों के बीच जिगर ऊपर न का स्थान है। नीचे अनाह का स्थान है। चिकने गरिष्ट भोजन करने वायु प्रकोप से मंदाग्नि होने पर, भोजन का अच्छी प्रकार पाचन न से, मल बढ़ जाने से, ज्वर आने से, कमजोरी होने पर, वायु कफ ढ़ जाने से पेट शूल हो जाती है। यकृत-प्लीहा बढ़ जाती है। शरीर र्ण पीला हो जाता है। अरुचि हो जाती है।

मूत्र कृच्छ्र (सुजाक) निदान

ı, पित्त और कफ से गर्मी उत्पन्न होकर मूत्राशय में प्रवेश हो जससे पेशाब में कड़क जलन तथा पीड़ा होने लगती है। टीस न-कम मूत्र निकलता है। वायु मूत्र कुछ—जंघों ग्रन्थियों में त्र में जलन थोड़ा-थोड़ा हो तो वायु का मूत्र कृच्छ है।

पित्त मूत्र कृच्छ्र—पीला-लाल गर्म मूत्र कष्ट से हो, पीड़ा बहुत हो, तो पित्त का मूत्र कृच्छ्र है।

कफ मूत्र कृच्छ्र—लिंग, पेडू में सूजन, मूत्र में फेना-सा आये एवं मूत्र कष्ट से आये, पेशाब श्वेत रंग का हो तो कफ मूत्र कृच्छ्र है।

पथरी का निदान

उदर में वायु और पित्त गर्मी उत्पन्न करके वीर्य को सुखाकर पथरी बांध देते हैं। यह त्रिदोष से उत्पन्न होता है। पथरी वाले रोगी के मूत्र में मस्त बकरे की-सी गंध होती है। पेडू में पीड़ा, अफारा, पेट फूला रहता है। शरीर पीला, भोजन में अरुचि, मूत्र कम-कम होना, मल बंद यह पथरी के लक्षण हैं।

प्रमेह का निदान

उत्पत्ति—अधिक बैठने, बहुत सोने तथा बहुत परिश्रम करने, भेड़-बकरी के मांस के खाने से, गुड़-मिठाई-मिर्च के खाने से, अधिक स्त्री प्रसंग के करने से, हस्त मैथुन करने, धूप में रहने से, विशुद्ध आहार मदिरा आदि नशीली चीजें खाने से, अनियमित आहार-विहार करने से, धातु क्षीण होकर पानी के सदृश होकर बहती है। इसी को प्रमेह जानना चाहिए।

लक्षण—अधिक स्वप्न-दोष होना, पेशाब व टट्टी के साथ धातु का जाना, अधिक आलस्य बना रहना, निद्रा अधिक लगना, काम परिश्रम करने में दिल का न लगना यह लक्षण प्रमेह का है।

पहचान—दांत, तालू, जीभ में मैल का अधिक जमा होना, हाथ-पैरों में जलन होना, देह में चिकनाहट, प्यास अधिक लगना, मुंह का स्वाद मीठा-सा बना रहना—यह प्रमेह की पहचान है।

प्रदर रोग का निदान

उत्पत्ति—अधिक बैठने, परिश्रम के अधिक करने से, प्रसंग ज्यादा करने से, नशीली गर्म वस्तुएं, खटाई-मिर्च का अधिक सेवन करने से, अनियमित आहार-विहार करने से, स्त्री की योनि से रक्तस्राव होने लगता है, इसी को प्रदर कहते हैं।

लक्षण—अनियमित मासिक धर्म का होना, समय से ज्यादा दिन का होना, हाथ-पैरों में जलन, कटि व जंघों में पीड़ा, काला, लाल तथा कभी श्वेत स्राव होना यह प्रदर के लक्षण हैं।

पहचान—जब स्त्री की योनि से रक्त स्राव लाल रंग का हो तो पित्त गर्मी का प्रदर होता है। रात-दिन होता रहता है। क्षीणता बढ़कर अंत में मृत्यु तक होती है। यह साध्य है। जब योनि से काले रंग का स्राव हो और दिन-रात कटि जंघों में पीड़ा हो तो वायु का प्रदर है। जब योनि से श्वेत रंग का धातु के समान स्राव हो तो यह कफ का प्रदर कहलाता है। लोग समझते हैं, धातु जा रही है। स्त्री के धातु नहीं होती, रज होता है, जो पानी के सामान चिकनाहट लिये होता है।

सूर्यावर्त अर्धकपाली का निदान

सूर्योदय से सिर में दर्द होना। ज्यों-ज्यों दिन चढ़े, दर्द बढ़ता जाये इसी को सूर्यावर्त अधौखा कहते हैं। यह पित्ती गर्मी से उत्पन्न होता है।

शोथ रोग निदान

उत्त्पति लक्षण—वायु और कफ के प्रकोप से मंदाग्नि होकर अन्न का कच्चा रस आमाशय में पहुंच कर आंव, अरुचि, शरीर में पीड़ा, पेट में दाह तथा प्यास उत्पन्न कर देते हैं। मल बंद हो जाता है, शरीर पीला होकर सूजन उत्पन्न हो जाती है। इसी को शोथ कहते हैं।

पहचान—पुरुष के यदि शोथ पैरों से उत्पन्न होकर ऊपर को बढ़े तो असाध्य हैं। इसी प्रकार स्त्री के शोथ मुंह से उत्पन्न होकर पैरों में उतरे तो यह असाध्य है। रक्त पानी हो जाता है। सारे शरीर में पीड़ा, क्षुधा नष्ट हो जाती है। पेट में दाह तथा मल का अवरोध हो जाता है। गोटा पड़ जाता है। इसकी औषधि में अधिक-से-अधिक दस्तावर दवा गर्म तीक्ष्ण करनी चाहिए, तभी लाभ की आशा होती है। नहीं तो मृत्यु हो जाती है।

अर्श (बवासीर) का निदान

जब गुदा में मस्से चिमचिमी ललाई लिये हुये कठोर होकर यह बेर के समान कपास के फल के सदृश हो, कटि-जंघों में पीड़ा, डकारें

आयें, अरुचि, मंदाग्नि बनी रहे, मल साफ़ न हो, गोटे पड़ जायें, कानों में शब्द हो, कमर में दर्द हो, तो यह वात का अर्श समझना चाहिए।

पित्त का अर्श

इसके मस्से लाल-पीले रंग के होते हैं। दर्द होता है। गर्म-गर्म रक्त प्रवाह होता है। छोटे-छोटे कोमल मस्से ही पीले रंग के हों, तो यह पित्त का अर्श है।

कफ का अर्श—मस्से मोटे-मोटे, मंद-मंद पीड़ा उठे, भारी कफ से भरे हों। पेड़ू में पीड़ा हो, खुजली हो, अफारा पेट में हो, कास श्वास हो, हृदय में पीड़ा हो, अरुचि, पीनस, मंदाग्नि हो, वायु बहुत शीतल लगे, कफ युक्त थोड़ा-थोड़ा मल निकले, देह में चिकनाहट, पीले वर्णों का शरीर हो जाये तो यह कफ का अर्श है।

अतिसार (अधिक दस्त होने) का निदान

अतिसार वायु कफ पित्त तीनों रोगों से उत्पन्न होता है।

वायु के लक्षण—वायु के अतिसार में पतले दस्त पानी के सदृश कुछ मैले रंग के होते हैं। प्यास अधिक लगती है, बदन में पीड़ा बढ़ती जाती है।

पित्ती के लक्षण—पित्ती अतिसार में पीले रंग के पतले-पतले दस्त होते हैं। प्यास तथा पेट में जलन होती है।

कफ के अतिसार का निदान—पतले-पतले श्वेत कफ के समान दस्तों का होना, कटि जंघों में पीड़ा, बदन में, सर्वांग में पीड़ा का होना, यह कफ के लक्षण हैं।

आमा अतिसार निदान

इस वायु के दोष से मंदाग्नि होकर खाया हुआ भोजन पाचन नहीं होता, तब उसका जो कच्चा रस उत्पन्न होता है वह आमाशय में पहुंचकर आंव पैदा हो जाता है। श्वेत सूप की यदि गर्म चीजें खाई गईं, तो लाल होकर रक्त अतिसार बन जाता है। इसमें उदर में पीड़ा, गुदा में पीड़ा, करकराहट जोरों की होती है। मल के दस्त को रोक देती है। सिर्फ आंव के ही दस्त आते हैं, इसके लिये स्फटिक चूर्ण या भस्म निंबू में

3-4 बार दें या मुनक्कों में बीज निकालकर भर दें। 3 बार प्रातः, दोपहर, शाम खायें, नींबू, अफीम, पिसी हुई राल नींबू से खायें। लपेट-लपेट कर चूसें, अफीम मूंग बराबर हो ज्यादा नहीं।

मुख-जिह्वा के रोग का निदान

मुख जिह्वा के रोग मल से होते हैं। मल के रुक जाने से मुंह एवं जिह्वा में दाने पड़ जाते हैं। मंदाग्नि हो जाती है। मुंह का स्वाद भी बिगड़ जाता है। इसके प्रयोग मुख रोगों में वर्णित हैं।

प्रतिश्याम (जुकाम) का निदान

जुकाम गर्मी और सर्दी के संयोग से पैदा होता है। बदन में पीड़ा, नाक, मुंह आंखों से पानी बहता है। सिर में दर्द और मंद-मंद ज्वर बना रहता है, इसको इन्फल्एंजा कहते हैं। अरुचि हो जाती है, इसके पैदा होने में 3 दिन, 1 बार भोजन करें, बाद में भोजन के सवा रत्ती आनन्द भैरव रस खाएं, फिर 6 घण्टे में दवा खायें। रात में भोजन नहीं करे। 3 दिन में पानी का बहना बंद होकर यदि सूखी खांसी भी आती हो तो उसका कफ पक कर झड़ने लगेगा। जुकाम खांसी दूर हो जायेंगे। इसकी उत्पत्ति अति परिश्रम, प्यास के साधन करने, ज्यादा धूप में काम करते रहने से होती है।

तपेदिक ज्वर निदान

यह पुराना ज्वर है जो बहुत दिनों तक आते रहने से ज्वर को गर्मी हड्डियों में प्रवेश कर जाती है। वह नित्य बना रहता है, कभी मंद कभी जोर हो जाता है। भोजन करने के बाद अकसर बढ़ जाता है। इससे भोजन छुड़ाकर दूध-मुनक्के फलों का सेवन, दवा 3-4 बार दें।

म्यादी ज्वर निदान

जब ज्वर तीन दिन बना रहे उतरे नहीं, कोई दवा भी असर न करे, तो यह ज्वर मियादी हो जाता है। यह अकसर वायु, पित्त अथवा वायु कफ के सहयोग से उत्पन्न होता है। लगभग 12 दिन में शांत होता

है। यदि बुखार न उतरा हो, बदन में, छाती में, गले में दाने पड़ गये हों, तो इसको मोती झारा (टाइफायड) कहते हैं। इन ज्वरों में उपवास या दूध मुनक्के, फलों का सेवन उत्तम है। यदि कफ खांसी की ज्यादती हो तो दूध फल भी नुकसान करते हैं।

वात-रक्त दोष (रक्त विकार) निदान

जब वायु की गर्मी रक्त में प्रवेश हो जाती है, मल भी बढ़ जाता है, दस्त नहीं होता तब यह रक्त को बिगाड़कर बदन में दाने, खाज, खुजली, चकत्ते, कुष्ठ, गलित कुष्ठ से हुआ छाजन, अपरस इत्यादि चर्म रोग पैदा कर देता है। कभी-कभी बदन में गांठें पड़ जाती हैं। बदन का रंग कालापन लिये हो जाता है। श्वेत तथा लाल कुष्ठ के दाग पैदा हो जाते हैं।

उपदंश (आतशक गर्मी) निदान

उत्पत्ति—यह रोग वायु-पित्त-कफ से उत्पन्न होता है। ऋतुवती स्त्री के साथ भोग करने से उत्पन्न होता है।

वायु से—लिंग में बेवाई सदृश फटना, काली फुंसी पड़ना, पीड़ा तथा जलन होना, मवाद देना, मुख में छाले पड़ना, यह वायु का उपदंश है।

पित्त से—लिंग में पीले-पीले दाने पड़ जायें, जलन हो, कंठ में दाह-जलन हो, मुख में भी छाले पड़ जाये, दानों में मवाद बहे, तो पित्ती उपदंश है।

कफ से—लिंग में सफेद-सफेद दाने पड़ते हैं, मवाद देते हैं, खुजली भी होती है। मुख में भी सफेद रंग के छाले पड़ जाते हैं।

बंध्या दोष निदान—जिन स्त्रियों के मासिक धर्म नहीं हो और यदि हो तो बिना समय का हो, काला खून का हो, तो उनके गर्भाधान नहीं होता और अंदर गर्भाशय में भी दोष हो जाते हैं। (बंध्या दो प्रकार की होती है)।

नैसर्गिक बंध्या—यह प्राकृतिक बंध्या है इसमें मासिक धर्म नहीं होता। इसी कारण से गर्भाधान कभी नहीं होता। इस बंध्या की कोई औषधि नहीं होती है, यदि उपाय करें तो पहले मासिक धर्म को खोलें, तब पीछे गर्भस्थापन के प्रयोग करें।

आगन्तुक बंध्या—इस बंध्या के किसी-न-किसी कारण से मासिक बंद हो जाता है। समय पर नहीं होता और यदि होता है तो अनियमित समय पर कभी काला कभी श्वेत होता है। ऐसा मासिक गर्भ धारण नहीं होने देता, दूषित है और यदि गर्भ भी रहा तो पतन का भय रहता है। यह साध्य बंध्या हैं। इसका प्रयोग करने से संतान उत्पन्न हो सकती है।

विशूचिका निदान

उत्पत्ति—जब वायु कुपित्त होकर पित्त के साथ हो जाती है। मंदाग्नि करके पेट के अनपचे भोजन को कै द्वारा बाहर कर देती है। बदन में पीड़ा होने लगती है। यदि बार-बार और कै होने लगी तो प्यास भी ज्यादा बढ़ जाती है। पीड़ा जोरों की होने लगती है, रोगी शिथिल हो जाता है।

लक्षण—जब कै बार-बार हो, बदन में ऐंठन (पीड़ा) जोरों की होने लगे, प्यास बढ़ जाये, बार-बार पानी पियें और वही कै से निकल जाये, साथ-ही-साथ पतले दस्त भी होने लगे तो यह विशूचिका (कालरा) के लक्षण हैं; इसकी औषधि आनन्द भैरव ही है। 2 ही रत्ती 3 घण्टे में दें पानी बिल्कुल नहीं दे। पानी का पानी ही अवगुण है। दवा से प्यास खत्म हो जाती है, नींद आ जाती है।

शीत पित्त (रिस्पिती) का निदान

जब पित्त के साथ शीत वायु सम्मिलित हो जाती है तब बदन में छोटे तथा बड़े-बड़े फोड़े पैदा हो जाते हैं। जिनमें जोरों की खुजली उत्पन्न होती है। यह लाल रंग के होते हैं। यही शीत पित्त (रिस्पिती) है। इस रोग की मूल औषधि काली मिर्च का चूर्ण है। 3 माशे चूर्ण को मिश्री से दोनों वक्त खायें तो शीत पित्त अच्छा होकर फिर कभी नहीं पैदा होता। दवा 7 दिन यदि खाई जाये यह अनुभूत है।

प्रसूत रोग का निदान

स्त्रियों के संतान होने के बाद कोष्ठ में शून्यता, शीत का वेग हो जाता है। वायु कुपित हो जाती है। बदन में, योनि में, सिर में दर्द पैदा करता है। कभी-कभी स्त्रियां बेहोश-सी हो जाती हैं। यही प्रसूत के लक्षण हैं। बच्चा पैदा होने के बाद बुद्धिमान औरतें सोंठ, पीपल के चूर्ण दूध

में गुड़ से देती हैं। हींग, भुनी अजवायन खिलाती हैं। खाने में भुनी हल्दी, लाल, काला नमक खिलाती हैं। इनके रोज के सेवन से यह रोग नहीं पैदा होता।

बाल रोग निदान

बालकों के भी रोग वायु-पित्त-कफ से उत्पन्न होते हैं।

मल परीक्षा—यदि मल पतला, पानी सदृश या दूध के रंग का हो तो यह वायु के दोष का है। यदि पीला पतला दस्त हो तो पित्त का है। यदि दूध ही के रंग का पतला है तो कफ का दोष है।

मूत्र परीक्षा—मूत्र यदि ललाई लिये हुए गर्म हो तो वायु का, पीला मूत्र हो तो पित्त की गर्मी का यदि श्वेत मूत्र हो तो कफ के दोष का है।

कफ परीक्षा—कफ पतला दूषित है इससे सूखी खांसी पैदा होती है। कफ फेन के सदृश होता है। पीला कफ पका कफ है। यह जल्द पाचन हो जाता है।

डब्बा रोग निदान

रात में बच्चे की पसली में दर्द ज्वर बना रहना, दूध न पीना, आंखे झांपे रहना—यह लक्षण है। यह शीत वायु से मां के दूध से होता है। मां और बच्चे दोनों को दवा लेना चाहिये।

सूखा रोग निदान

यह वायु से बच्चे में मंदाग्नि होने के कारण पैदा होता है। भोजन, दूध का पाचन भली प्रकार न होने से शुद्ध रक्त तैयार नहीं होता इसी से बच्चा सूख जाता है। इसके लिये बाल घुट्टी का प्रयोग करें।

अतिसार (दस्त होना)—यह दस्त हरे रंग के तथा पीले रंग के होते हैं। जो वायु से व पित्त से होते हैं। इनके प्रयोग अलग-अलग हैं।

दूध डाल का निदान

दूध का डाल देना यह कै है, जो अकसर वायु से ज्यादा होती है। कभी-कभी पित्ती भी होती है।

द्रव्य शोधन क्रिया (सीधिया)—इसके कई नाम हैं। शृंगिक मोठा, तेलिया विष, सीधिया इसके छोटे-छोटे टुकड़े करके कपड़े में पोटली बांधें, एक घड़े में भैस का गोबर और पानी डालकर खूब पतला करके पोटली उसमें डाल दें। आग में पकायें, जब इतना पक जाये कि सिर्फ सीधिया के टुकड़ों में बिध जाये अर्थात अंदर से कच्चा न रहे फिर गौ मूत्र में भी काफी देर तक पकायें, पक जाने पर निकाल लें। शुद्ध हो जायेगा। कोई-कोई दूध में तीसरी बार पकाते हैं।

गुग्गुल—गौ मूत्र में पकायें, दूध में पकायें, फिर घी में पकायें, गाढ़ा तथा शुद्ध हो जायेगा। कोचिला लाकर किसी सकोरे में पानी भरकर उसी में कोचिला डाल दें। 3 दिन तक पानी बदलते रहें। 15 दिन में जब कोचिला नरम हो जाये तब छिलका उतार कर फेंक दें। कोचिला को सुखा लें, चाहें तो गोमूत्र में पका लें, फिर सुखा लें शुद्ध हो जायेगा।

जमाल गोटा—जमाल गोटे के अंदर की बीजी छील लें। फिर दोनों दालों के बीच अंदर एक हरी पत्ती रहती है, उसको भी निकाल दें। दालें ही रह जायें तब कपड़े की पोटली भैस के गोबर और पानी में पकायें, फिर दूध में पकायें, शुद्ध हो जायेगा।

आंवला सार गंधक—गंधक एक कटोरी में घी डाल कर गर्म करें। कुछ गर्म होने पर पिघल जाएगा तब कटोरी उतार कर दूध में डाल दें। 3 बार में शुद्ध हो जायेगा। यह रक्त शोधक है। एक तोला गंधक में 5 तोला काली मिर्च खूब पीसकर डालें। नींबू के रस से बड़े बेर के बराबर गोली बना लें। खाज-खुजली, बदन के दाने, रक्त विकार के फोड़े ठीक हो जाते हैं। 40 दिन तक प्रातः-शाम खायें।

फिटकिरी—फिटकिरी पीसकर आग में तवा चढ़ायें व भून लें। फिटकरी सूखकर रोटी-सी बन जायेगी लेकिन अंदर से कच्ची रहती है। तब रोटी को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े करके उलट-पलट कर भून लें शुद्ध हो जाएगी। यह गर्मी से आने वाला ज्वर, अति प्यास, सूखी खांसी में दी जाती है। बड़ों को 2 रत्ती, बच्चों को 1 रत्ती।

सोहागा—फिटकिरी की तरह सोहागा भी भूना जाता है। एक ही बार में शुद्ध हो जाएगा। खांसी में 2 रत्ती शहद से 3-4 बार चाटें, बच्चों को 1 रत्ती शहद या दूध से दें।

धतूर बीज—कपड़े में पोटली बांध कर गौ मूत्र में पकायें फिर दूध में पकायें, शुद्ध हो जाएगा।

चाकसू बीज—नीम की पत्तियां और पानी एक भंड़ेया में भर दें। उसी में चाकसू को कपड़े की पोटली में बांधकर पकायें, शुद्ध हो जाएगा। निकाल कर ऊपर के छिलके को छील डालें फिर पीस लें, आंख में लगायें—नेत्रों का आना, लाली, पीड़ा, घेटी (रोहे) तीन दिन में दूर हो जायेंगे।

भेलामा (भल्लातक) शोधन—भेलामा तोड़कर सेउरा ईंट के चूर्ण में लथेड़ दें ताकि उसके भीतर का रस ईंट के चूर्ण में सूख जाये फिर पानी में धो डालें और पानी में पकायें, गौमूत्र में पकायें, पकाने में हांडी के मुख मिट्टी के ढक्कन से बंद कर दें फिर पकते समय में नहीं खोलें जब तक ठंडी न हो जायें। इसके धुएं में जहर है। धुआं लग जाने से रक्त बिगड़ जाता है। सारा बदन सूख जाता है।

शुद्ध जस्ता पिघला कर बथुआ का रस डालकर छोटे जस्ता की उत्तम भस्म होगी।

हिंगुल शोधन—इसके हिंगुल, ईंगुर, सिंगरफ तीन नाम हैं। हिंगुल चिकने पत्थर में पीस लें, नींबू का रस डाल-डालकर 6 घंटे घोटें, शुद्ध हो जायेगा।

तूतिया शोधन—तूतिया पीसकर भून लें फिर नींबू के रस में घोंट दें शुद्ध हो जायेगा।

रांगा-शीशा-जस्ता शोधन—रांगा-शीशा—ये पहले एक टोटीदार नदवे में पिघलावें यदि टोटीदार न मिले, बगैर टोटी ही वाले में पिघलायें। इसमें नदवे की कोख में छोटा-सा छेद तो कर दें। इस छेद से पिघला रांगा या शीशा नदवे की टोटी या छेद से डाल दें। 3 बार तेल में, 3 बार मट्ठा में, 3 बार गौमूत्र में यही क्रिया करें, शुद्ध हो जायेगा।

तबकी हरताल शोधन—हरताल बर्फी लाकर कपड़े की पोटली में बांध कर चितावर के काढ़े में, त्रिफला के काढ़े में पकायें, फिर नींबू के रस से घोट दें। शुद्ध हो जायेगा।

अभ्रक (काला भोडर) शोधक—काला भोडर कसोरे में रखें। इसी में 2 कंडों की दवा दे कुछ गर्म होने पर कसौरे निकाल लें उसी को दूध में डाल दें। 3 बार मकुइया के रस में, चौराई के रस में, 3 बार बुझा दें। शुद्ध हो जाये, फिर धान्य करके कूट-पीस मदार, चूहर गौ के दूध की अलग-अलग भावना देते जाएं सिरपास वुट से आंच देते जाएं हर बार दूध से घोटते जाएं आंच से कम खाने लायक नहीं होता।

गोदंती हरताल शोधन—गोदंती (हरसोठ पंसारियों से लाकर) पीस लें, घी कुवार से घोट डालें। गोला बनाकर सुखा लें। दो कसोरे में रखकर

भट्ठी में भस्म कर लें। यह ज्वर खांसी में 2 रत्ती दें। बच्चों को कम करके दें।

मैंसिल शोधन—मैंसिल पीसकर पोटली में बांधकर घमीरा के रस में पकाएं फिर नींबू के रस से घोट दें तो शुद्ध हो जाता है। 2-3 घण्टे कई नींबू का रस डाल-डालकर घोटें।

कपूर शोधन—किसी बटलोई में या कटोरी में कपूर की डली रख दें, जरा-सा घी डाल दें उपर तवा से मूंद दें लेकिन कटोरी और तवे की सांसें हैं वह मिट्टी से या आटे से बंद करके आग में रख दें। जरा तेज आग पर रखें, 2 मिनट में कपूर उड़कर तवे की पीठ पर लग जाएगा। उसको तराश के निकाल लें, काम में लावें।

सुरमा शोधन—एक परैया में सुरमा की डली रखकर दो कंडो के अंधेरे में तपा दें जब तप जाये तो त्रिफला (आंवला हर्रे बहेरा) के पानी से 3 बार बुझा दें नीम के पानी से घोटकर सुरमा बना लें नेत्रों के रोगों में लाभकारी है जरा-सा कपूर घोट दें।

प्रवाल (मूंगा की साख) शोधक—मूंगा की साख पंसारियों से ले आएं। खल से बारीक कूट छान लें। घी कुवार में घोट ले। शुद्ध हो फिर गुलाब जल से घोट दें तो प्रवाल पिष्टी बन जाएगा। हर एक गर्मी वाले पित्ती रोगों में 2 रत्ती दें, यह शीतल ठंडा रस है। यदि भस्म बनाना है तो मूंगा की साख शुद्ध करके एक परैया में गोला बनाकर रख दें दूसरी परैया से ढक दें साथ में मिट्टी और कपड़े की पट्टी लगा दें सुखाकर अंधेरे में रखकर भस्म कर लें। यह भी शीतल है। 2 रत्ती शहद से दें।

मोती सीप शोधन—मोती वाले सीप बाजार से पंसारियों से लाएं। घी कुवार की भावना देकर पिसी हुई सीप को घोटें रस डाल-डालकर 3 घंटे पीसें फिर गोला बनाकर सुखा लें। मूंगा वाले लिखे विधान (सर वांसपुट) में रखकर भस्म बना लें। इसकी भी तासीर ठंडी है। गर्मी वाले पित्ती रोगों में दी जाती है। 5 रत्ती शहद से बच्चों को 1 रत्ती। यदि पिष्टी ही बनाना है तो शुद्ध करके घी कुवार के साथ फिर गुलाब जल से घोट दें। यह ज्यादा शीतल है। 2 रत्ती मधु से 1 रत्ती बच्चों को यह दोनों भस्में खांसी के सूखे हुए कफ में गर्मी के ज्वर में सिर दर्द में दी जाती है। ज्यादा प्यास लगने में इलायची के दाने व चंदन घिसा हुआ मिश्री शहद से देवें तो अति प्यास बंद हो जाती है।

लाल फिटकरी को पीस लें, शीशी में रख लें। यह भी प्रवाल मोती की तरह गर्मी वाले रोगों में 2 रत्ती बड़ों को, 1 रत्ती बच्चों को।

प्रथम अध्याय

चिकित्सा खंड

वात ज्वर योग

पंचभद्र क्वाथ—चिरायता, पित्त पापरा, नागर मोथा, सोंठ, गुरिज-3-3 माशे लेकर कूटकर आधे सेर पानी डालकर पकायें। जब पानी जलकर-5 तोला रह जाये तब उतारकर छानकर समोष्ण शहद मिलाकर प्रातःशाम पीये तो वात ज्वर, बदन की पीड़ा नष्ट हो जाती है।

ज्वरांकुश रस—शुद्ध हिंगुल का निकाला पारा 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला को घोंटकर कजली बनायें फिर सोंठ-मिर्च-पीपल, शुद्ध सोहागा, शुद्ध जमाल गोटा, शुद्ध सीधियां 2-2 तोला लेकर पीस लें। कजली मिला दें नींबू के रस से घोटकर एक-एक रत्ती की गोली बनायें। प्रातः शाम 1 वटी से 2 वटी तक ज्वर आने के पूर्व शहद से खाएं तो इसके खाने से दस्त आकर मल निकल जाएगा और वात ज्वर, बदन की पीड़ा, सिर दर्द सब अच्छे हो जायेंगे। यह अद्‌भुत योग है, सदा पास रखें वात पीड़ा वाले रोगी के वात को भी ठीक कर देता है।

सूचना—यह शुभ संदेश गृहस्थ आश्रम में पालन करने योग्य है। यदि जीवन को सुखी बनाना है, सदा निरोग रहना है, अकस्मात पैदा होने वाले रोगों से बचना है या अगर पैसा पैदा करना है, तो एक सरल कम पैसे का तवालत भी नहीं जो योग शुरू के पृष्ठ पर आनन्द भैरव रस का लिखा गया है उसको अवश्य घर में बनाकर रख लें यह मेरा आजमाया हुआ है। सेरों की तादात में बनाकर बोतलों में भर दिया है। पैसा भी पैदा किया है। और अपने पास जो आया है उससे पैसा लेकर 2-4 खुराक दे दिया है। जिन-जिन रोगों में आजमाइश कर ली है वह सब आगे दर्ज है। इस दवा को यदि कोई चाहे तो रोज बिना रोग के भी या अंतर कर खा सकता है। इससे खाया हुआ अन्न पच जाता है। पेट की कोई बीमारी नहीं पैदा हो सकती। इसके बनाने का योग आगे

दर्ज है। इसी के समान ऊपर ज्वरांकुश रस है। परन्तु फर्क इतना है कि ज्वरांकुश रस दस्तावर है। जहां ज्वर इत्यादि मल प्रधान रोग है, उनमें बहुत गुणकारी है। आनन्द भैरव दस्तावर नहीं है, इतना ही फर्क है। दोनों योग भी बनाये जा सकते हैं। शोधित द्रव्य सब किसी आयुर्वेदिक वर्क्स से मंगाकर दवा तैयार कर लें। सूची-पत्र में शोधित द्रव्य लिखे रहते हैं।

आनन्द भैरव रस (अमृत कल्प प्राणसुधा रस)—शुद्ध सोहागा, शुद्ध सीधिया, सोंठ मिर्च, पीपल सब चीजें बराबर-बराबर लेकर कूट-छानकर गेरू भी सीधिया के बराबर पीसकर मिला लें। हो सके तो ईंगुर शुद्ध भी गेरू के बराबर मिला सकते हैं। पीसकर बोतल शीशियों में भर लें। खुराक 1 रत्ती से 1½ रत्ती मधु से। नीचे लिखे रोग समूल नष्ट होते हैं। सिद्ध अनुभूत औषधि है।

1. वात ज्वर, वात-पित्त, ज्वर-वात-कफ ज्वर। कफ ज्वर में 1 रत्ती से 1½ रत्ती आद के रस मधु से दें। प्रात:शाम।

2. कफ, खांसी, जुकाम में 1 रत्ती सुबह शाम को एक रत्ती मधु से दें।

3. बदन की पीड़ा वात के कारण होती हो तो डेढ़ रत्ती सुबह-शाम खायें।

4. पेट के दर्द, पेट फूलने में डेढ़ रत्ती 2-3 बार अदरक के रस और मधु के साथ दे।

5. यदि ज्यादा भोजन से कब्ज-अजीर्ण हो गया है तो डेढ़ रत्ती 2-3 बार मधु से दें।

6. यदि किसी को हिचकी, डकारें ज्यादा आती हैं तो भोजन के बाद डेढ़ रत्ती मधु के साथ दें।

7. यदि किसी को त्रिदोष का ज्वर है, वक करता है, मूर्छित है तो एक रत्ती अभ्रक एक रत्ती हरताल भस्म, एक रत्ती आनन्द भैरव अदरक के रस, मधु के साथ दिन-रात में 3-4 बार दें। रोगी त्रिदोष ज्वर से मुक्त हो जाएगा।

8. वायु के कारण सिर दर्द में एक रत्ती प्रात:शाम मधु से खायें।

9. यदि गले में कफ से दर्द होता है तो एक रत्ती मधु से 3 बार खायें।

10. यदि वायु के प्रकोप से भूख नहीं लगती, अरुचि है, तो डेढ़ रत्ती प्रात:-सायं खायें, द्राक्षासव का सेवन करें।

11. यदि कै, उबकाई आती है, जी मचलाता है, तो डेढ रत्ती 3 बार मधु से दें।

12. यदि पतले दस्त बार-बार आते हैं तो डेढ़ रत्ती 3 बार मधु से दें।

13. यदि कोई कॉलरा की बीमारी से बीमार है, बार-बार कै-दस्त होते हैं। प्यास अधिक लग रही है, तो कै होने के बाद दवा दें, वरना उलटी आने का डर है। 2 रत्ती दवा मधु के साथ अदरक के रस से 3 तीन घंटे में तीन-चार बार दें, कॉलरा से रोगी मुक्त हो जायेगा। कै, दस्त, प्यास, बदन का दर्द सब शांत हो जायेंगे। रोगी को भोजन में खिचड़ी दें। दवा देकर पानी हरगिज न दें।

14. यदि सिर में चक्कर आते हैं तो एक रत्ती मधु से 2 बार खायें।

15. यदि किसी को खांसी आती है तो 2 रत्ती अदरक के रस और मधु के साथ दो बार या तीन बार दें।

16. यदि पेट फूला है, वायु गुम है, टट्टी बन्द है, तो डेढ़ रत्ती 3 बार खायें मधु अदरक के साथ दें।

17. यदि रिस्पती निकली है, नहीं दवती तो एक रत्ती मिश्री के साथ 2-3 बार दें।

संजीवनी

वाय विडंग, सोंठ-पीपल-आंवला-हर्र-बहेरा, सत गुरिज, शुद्ध भेलाया, शुद्ध सिंधिया—सब को एक-एक तोला लेकर चूर्ण करें। कपड़छन करके शुद्ध गंधक एक तोला, हिंगुल का निकाला पारा कड़ाही में डालकर घोटें। कजली बनायें फिर चूर्ण और कजली मिलाकर अदरक के रस में घोटकर गोली एक-एक रत्ती की बनायें। यह गोली वात ज्वर, वात-पित्त ज्वर, कफ, खांसी, कै, दस्त, हिचकी, पेट दर्द, हाथ पैरों की जलन, अति प्यास, सर्प विष, सब रोगों को समूल नष्ट करने वाली है। अद्भुत योग है शहद और अदरक के रस से सेवन करें। ज्वर में ज्वर आने के पूर्व खायें अगर ज्वर ना उतरता हो तो प्रातः-दोपहर-शाम एक-एक वटी प्रयोग करें।

ईंगुर से पारा निकालना

विधि—शुद्ध हिंगुल (ईंगुर) को भंडिया में भर दे। ऊपर से दूसरा

भंडिया बराबर मुंह वाला मुंह से मुह जोड़ कर कपड़ मिट्टी कर दें। ताकि मुंह से सांसे न रहें। चूल्हे पर चढ़ाकर 12 घण्टे आंच दें पारद उड़कर ऊपर के भंडिया की पेंदी में लग जाएगा। धुआं के रूप का उसको ब्रुश या कूंची से झाड़कर थाली में डाल लें यही पारद है थाली में इस राख को मल देने से पारद की बूंदें बन जाती हैं।

शीतभंजी रस

शुद्ध गंधक एक तोला, हिंगुलोत्थ पारद एक तोला की कज्जली बनायें फिर शुद्ध सीधिया ताम्र भस्म-सोंठ-मिर्च-पीपल, शुद्ध सोहागा— सब एक एक तोला लें। सब का चूर्ण कपड़छन करें कजली और ताम्र भस्म मिलाकर आद के रस में घोटकर एक-एक रत्ती की गोली बनायें। एक से 3 बार तक अदरक के रस एवं मधु के साथ सेवन करें, सब प्रकार के ज्वर अंतरातिजारी वात ज्वर, कफ-ज्वर, वात-कफ ज्वर, खांसी-सांस-उदर रोग-बदन के दर्द शूल को हरण करने वाला रस है। एक से 2 वटी तक खायें।

आरोग्य पंचक काढ़ा

चूर्ण बना कर गुड़ से बेर के बराबर वटी बना लें। हर्रे कुटकी-अमलतास-आंवला-निशोथ इनको 6-6 माशे लेकर कूट डालें। ढाई पाव पानी घड़े में डालकर पकायें, आधा पाव रहने पर उतार लें। एक-एक छटांक में एक-एक तोला शहद अथवा मिश्री मिलाकर 2 बार पियें। दस्त साफ होकर मलेरिया ज्वर वारीका ज्वर, विषम ज्वर, वात ज्वर दूर करने वाला है।

मृत्युंजय रस

पारद, गंधक शुद्ध एक-एक तोला लेकर कज्जली बनायें। अभ्रक भस्म 6 माशा, शुद्ध सीधिया एक तोला, सोंठ-मिर्च-पीपल, शुद्ध सोहागा एक-एक तोला लेकर चूर्ण बना छानकर कज्जली और भस्म मिलाकर अदरक के रस से घोट एक-एक रत्ती की वटी बनायें। 2-2 वटी तक अदरक के रस मधु से दिन रात में 3 बार खायें। यह वात ज्वर, वात-पित्त ज्वर, कफ-वात ज्वर, कास-श्वास-त्रिदोष ज्वर को हरण करने वाला है।

अभ्रक भस्म के गुण

अभ्रक भस्म एक से डेढ़ रत्ती शहद और अदरक के रस से खायें। वात ज्वर, वात-पित्त ज्वर, कफ, खांसी, श्वास को नष्ट करने वाला है। एक रत्ती अभ्रक, एक रत्ती आनन्द भैरव मिलाकर आद के रस मधु से देने से ज्वर, कफ, खांसी, त्रिदोष ज्वर-प्रलापमुण्टी-दाह-शीतांग बेहोशी दूर होती है। एक रत्ती अभ्रक एक रत्ती आनन्द भैरव, एक रत्ती हरताल भस्म कठिन-से-कठिन त्रिदोष कफ वात हरते हैं।

वृहद् ज्वरारि रस

शुद्ध हरताल एक तोला, शुद्ध तूतिया एक तोला, चूना खाने वाला 2 तोला पीसकर धतूरे के रस में घोटे। गोला बना कर दो परैयों के बीच रखकर कपरौटी करें। मिट्टी से बन्द करके भट्ठी में रखकर भस्म कर दें फिर पीसकर शीशी में रख लें। एक से डेढ़ रत्ती मिश्री से ज्वर के एक घंटे पहले खिलायें। वात पित्ती ज्वर अंतरातिजारी-मलेरिया ज्वर दूर करता है।

ज्वर नाशक जड़ियां

1. धतूरे 2½ पत्ती ऊपर की कोपल पीसकर गुड़ में बंद करके ज्वर के पहले पानी से खिलायें तो वारीका का ज्वर, मलेरिया ज्वर दूर हो जाता है।

2. हुरहुर की 5 पत्ती हाथ में रगड़ कर कपड़े की चीर में बांध कर नाड़ी में बांध दें। दवा की गांठ नाड़ी में चिपकी रहे यह मलेरिया ज्वर को, वारी ज्वर को बन्द करत्ती है। यह अद्भुत है।

3. तीन लाल मिर्चें पानी में पीसकर अनामिका उंगली छिंगी के पास वाली में बायें हाथ के पोर में बांध दें, गीला कपड़ा बांध दें। सूखने ना पाये, मलेरिया ज्वर बंद हो जाएगा। 2 घंटे पहले यह क्रिया करें। उंगली में टीस मारेगी, घबरायें नहीं।

ज्वरघ्नी भस्म

शुद्ध हरताल छः माशा, सोंठ-मिर्च-पीपल-शुद्ध सोहागा, 6-6 माशे लेकर चूर्ण कर लें। कपड़छन करें फिर सबको मिलाकर धतूरे के रस

से घोटकर एक-एक रत्ती की गोली बांधें। ज्वर आने के पूर्व एक वटी खायें अंतरा-तिजारी मलेरिया ज्वर को दूर करने वाली है। यह अद्भुत है।

जयमंगल रस

1. एक तोला पारद, गंधक शुद्ध लेकर कज्जली करें। फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध सोहागा, सीधिया शुद्ध एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनाकर कज्जली मिलाकर मदार के दूध की भावना देकर घोंट कर एक-एक रत्ती की वटी बनायें। एक गोली मधु से प्रातः-शाम खायें तो ज्वर, कास, खांसी, वारी के ज्वर, उदर शूल सबको हरण करने वाला है।

2. फिटकरी 5 तोला, मल्ल सिंदूर अथवा शुद्ध संखिया 6 माशे अलग-अलग पीस लें। एक तवे में 2 तोला फिटकिरी चूर्ण बिछा दें, फिर संखिया की चूर्ण रख दें। बाकी फिटकिरी चूर्ण से संखिया ढक दें। आग में तवे को रखकर पकायें। जब रोटी सरीखे हो जाये निकालकर पीस लें यह एक रत्ती मलेरिया ज्वर, वारी के ज्वर को नष्ट करता है।

मलेरिया ज्वर वटी (सिद्ध प्रयोग)

योग—संखिया भस्म 6 माशा, कंजा की बीजी का चूर्ण 5 तोला खूब पीसकर आद के रस से एक-एक रत्ती की गोली बनायें। ज्यादा बड़ी ना हो। एक वटी ज्वर आने के पहले खिला दें। दूध पिला दें। खाली पेट कदापि ना दें। मलेरिया ज्वर बंद हो जाएगा यदि एक दिन में बंद न हो तो दूसरे दिन दें अवश्य बंद हो जाएगा। कंजा के बजाये पापरी कत्था मिलाकर बनायें।

सुरमा—तीन पोथी लहसुन जवे निकाल कर किसी कसारे में या नंदवे में डालकर मुंह बन्द करके भट्ठी में रखकर भस्म कर दे। निकाल कर शीशी में सुरक्षित रख ले। एक-एक सलाई दोनों आंखों में लगा दे। देखते-देखते मिनटों में ज्वर उतर जाएगा यदि एक दिन में पूर्ण लाभ न हो तो दूसरे दिन भी लगायें मलेरिया ज्वर का अद्भुत सुरमा है।

सर्व ज्वर वटी, कनक सुन्दर भस्म

धतुरे के कुछ फल लेकर भंड़िये में बन्द कर दें। भस्म कर दे। निकालकर पीस लें। आद के रस से 2 रत्ती की गोली बना ले। ज्वर

आने के पूर्व बलावल देखकर 2 से 4 रत्ती खिला दे। बारी के ज्वर मलेरिया को दूर करती है।

शिव दर्शन चूर्ण

त्रिफला-कपूर-सोंठ-मिर्च-पीपल, पिपरा, धमाशा, कुटकी, पित्तपापरा, नागरमोथा सुंगध वाला-पोदकर मूल-भारंगी-पदपाख-लाल चन्दन, मुलहठी-तेज पात विडंग, लौंग, जावित्री इलायची, देवदार, तालीस, चितावर सब दवा एक-एक तोला चिरायता 15 तोला सब दबा कर छानकर चूर्ण बनायें। मात्रा 1 माशा गर्म जल से सेवन करें। ज्वर आने के पूर्व यह वातज, वात पित्त ज्वर, वारी से आने वाले विषम ज्वर, अंतस्थ ज्वर, अफारा, उदर रोगों का राम बाण चूर्ण है। मलेरिया ज्वर को नष्ट करने वाला है।

नोट—इस चूर्ण की वटी, झड़बेरी के बेर, प्रमाण धतूरे के रस से घोंटकर बना लें। मलेरिया वाले को तीन गोली ज्वर आने के 2 घंटे पूर्व खिलायें।

ज्वर कदापि नहीं आएगा।

लाक्षादि तेल

मजीठ, लोध सौंफ, रेनुका-हल्दी, दारु हल्दी, देवदार, कुटकी चिरायता, नागर मोथा, बालछड़, मूर्वा, रासना, मुलहठी, कटाई की जड़, इडोरन की जड़, सतावर, लाल चन्दन, पमाख, पीपल, तज जायफल, अगर, कचूर, सोंठ, इलायची, लौंग जीरा सब एक-एक तोला लेकर दरदरा कूटकर 10 सेर पानी में काढ़ा करें। सवा सेर रहने पर उतार लें। पीपल की लाख एक छटांक खडर भी उसी में डाल कर काढ़ा कर लें। अब कड़ाही में तिल का तेल 2½ सेर, गौ मूत्र 1 मग, 1 सेर 1 सेर काढ़ा इन सब को डाल दें। उसके बाद पानड़ी छरीला हाड़वेर-खस सुंगध वाला, चम्पावती, हरिद्वारी कुश सब एक-एक तोला का चूर्ण करके उसी कड़ाही में डालकर पकायें। जब सब पानी जल जाये तब उतारकर छान लें। कपूर 6 माशा, रतन जोत तेल वाली 1 तोला पीसकर मिला दें। सुर्ख रंग हो जाएगा। बोतलों में भर दें। यह तेल अंतस्थ ज्वर, बदन के दर्द, सिरदर्द के लिये रामबाण है।

काल भैरव रस

नोट—ये वात ज्वर के निवाकरण करने की औषधियां वात ज्वर तथा कफ ज्वर तथा अन्य वात कफ के रोगों में लाभ करने वाली हैं। वात और कफ के रोगों में गर्म-से-गर्म प्रयोग किये जाते हैं।

पित्त ज्वर के योग

अठपहरा एक तोला, धनिया, सौंफ बराबर-बराबर लेकर सकोरे में शाम को पानी में भिगो दें। प्रातः पीसकर ठंडाई बनायें। छानकर शक्कर डालकर पेट भर पियें इससे पित्त ज्वर का आना बन्द हो जाता है।

अकसीर योग

श्वेत अथवा लाल फिटकिरी भूनकर-पीसकर रख लें या तो टाटरी (नींबू का सत) चार आने भर मिलाकर शीशी में रख लें। इसको डेढ़-दो रत्ती मिश्री से ज्वर के पूर्व खायें तो ज्वर का आना बन्द हो जाएगा। 1-2 बार खायें टाटरी न मिलने पर नींबू से या मिश्री से खाई जा सकती है।

प्रवाल भस्म के गुण

प्रवाल भस्म पित्त की बढ़ी हुई गर्मी को शमन करने वाला है। 2 रत्ती मिश्री अथवा शहद से खाने से गर्मी का ज्वर, सिर का दर्द, प्यास, बदन का दर्द दूर होता है।

स्प्रो

स्प्रो पित्त के ज्वर, सिर के दर्द, बदन की पीड़ा की शर्तिया दवा है। पित्त अग्नि का अंश है। गर्म है इसलिये इसमें ठंडी दवा देना चाहिये।

मुक्ता सीप भस्म के गुण

मुक्ता सीप भस्म शीतल होता है। प्रवाल की तरह गर्मी के ज्वर, सिर दर्द, मोती झरा में प्रयोग होता है।

स्फटिक पिष्टी के गुण

लाल फिटकिरी पीसकर रख लें। यह बहुत से रोगों में फायदा करती है। 2 रत्ती मिश्री से खाने से ज्वर चढ़ा हुआ उतर जाता है। यदि पहले ही ज्वर में खायें तो आना रुक जाता है। इसके अलावा सिरदर्द, नेत्र रोग, रक्त का किसी अंग से श्राव हो तो रक्त बंद करने वाली है। योनि अथवा मूत्र मार्ग से रक्त स्राव हो तो बन्द हो जाता है। घाव, फोड़ों के लिये, अक्सीर, गर्मी से सूखे कफ को ढीला करके खांसी के बंद करने में सहायता देती है। हर रोग के प्रकरण में विधि लिखी गयी है।

कफ ज्वर के प्रयोग

चन्दनादि क्वाथ

पद्ममाख, लाल चन्दन, धनिया, गुरिज, नीम छाल—प्रत्येक 3-3 माशे लेकर दरदरा कर भंडिया में भर दें। आधा सेर पानी डालकर उबालें। जब पकते-पकते पानी जल जाये, एक छटांक पानी शेष रहे, तब उतारकर छानकर पियें इससे कफ ज्वर, वात ज्वर, हृदय-बदन की पीड़ा, प्यास सब नष्ट होते हैं।

भारंगियाद क्वाथ

भारंगी, पोहकर मूल, देवदार, पीपल, सोंठ, गुरिज, अरुत, नागर-मोथा—सब 3-3 माशे लेकर तीन पाव पानी में पकायें। आधा शेष रहने पर उतार कर छानकर पियें। इससे कफ-ज्वर-वात, कफ ज्वर, पसली का दर्द, प्यास, बदन का दर्द दूर होता है।

कंटकारी क्वाथ

भटकटैया की जड़, इन्द्र जौ, नागर मोथा, सोंठ, पीपल, चिरायता, नागर मोथा, कुटकी, नीम छाल, धनिया, पित्त पापरा, पोहकर मूल, लाल चन्दन, अरूस, भारंगी, पद्ममाख 3-3 माशे लेकर कूटकर डेढ़ सेर जल में काढ़ा पकायें। डेढ़ छटांक शेष रहने पर उतार छानकर पियें। इससे कफ ज्वर, वात-कफ ज्वर, पसली एवं बदन का दर्द, प्यास, मूर्छा, दाह भ्रम, त्रिदोष ज्वर सब नष्ट हो जाते हैं।

शृंगराज भस्म

बारह सिंगा के सींग के टुकड़े-टुकड़े करके मदार के दूध में भिगो

दें। सरवांस पुट दो सकोरों के बीच में रख कपरौटी करके भट्ठी में भस्म कर दें। इसी प्रकार 3 बार दूध में घोंटकर भस्म कर लें। यह शृंगराज भस्म कफ ज्वर में 2 रत्ती अदरक या पीपल के साथ मधु से 3 बार दें तो कफ-खांसी को दूर करता है। कफ पकाने में पीपल-मधु से और कफ ढीला करने के लिये मिश्री के साथ दें।

गोदंती योग

गोदंती (हरसोंठ) पंसारियों से लेकर पानी से धोकर साफ कर लें। सुखाकर कूट लें फिर अदरक के रस में घोंटकर लुगदी बनाकर सुखा लें। दो सकोरों के बीच रखकर कपरौटी करके भस्म कर दें। इसी तरह दुबारा भस्म करें तो यही गोदंती हरताल भस्म है। यह अन्नोपान से 2 रत्ती अदरक मधु के साथ देने से ज्वर खांसी को दूर कर देती है। कफ ज्वर, वात ज्वर, बदन का दर्द दूर होता है। यदि कफ सूख गया हो तो कफ ढीला करने के लिये मिश्री से दें, दिन-रात में तीन बार।

प्राण सुधारस एक से डेढ़ रत्ती मधु-पीपल से खायें, कफ ज्वर, कास, स्वांस को मिटाने वाला है।

त्रिदोष ज्वर के प्रयोग

ज्वर के उत्पाद—त्रिदोष ज्वर में 12 उत्पाद होते हैं। तृषा, श्वास, खांसी, हिचकी, वमन, अतिसार, अरुचि, अनिद्रा, बद्ध कोष्ठ, अफारा, प्रलाप, मूर्छा। यह ज्वर के उत्पाद हैं।

त्रिदोष के अरिष्ट सूचक चिह्न

1. जिस सन्निपात के रोगी के होंठ, दांत, जिह्वा जामुन के फल सरीखे काले हो जायें तो यह लक्षण मृत्यु सूचक होते हैं।

2. जिस रोगी की नाड़ी स्थान छोड़ दे, रुक-रुककर चले, कभी मंद, कभी तेज हो जाए, शीतल पसीना आये तथा शीतल श्वास नाक से आये तो रोगी की मृत्यु हो जाती है।

3. जिस रोगी की सांस एकदम बढ़ जाये फिर कम हो जाये, हिचकी आये, बदन ठंडा पड़ जाये, भरी हुई ऊर्ध्व श्वास ले, मुंह से सांस ले, बहरापन हो जाये, मूर्छा हो जाये, नेत्र बंद हो जाये अथवा नेत्र लाल हो जाएं, पलकें गिरना बंद होकर आंखे स्थिर हो जाएं तो ऐसे रोगी की मृत्यु हो जाती है।

4. सन्निपात के रोगी के केश उखाड़ने में उसे ज्ञान न हो तो समझ लें मृत्यु हो जाएगी। आयु क्षीण है।

5. सर्वांग शोथ वाले रोगी के बदन में सूई चुभाने पर यदि रक्त न बहे, पानी बहे तो समझ लें उसकी आयु क्षीण है। मृत्यु सूचक है।

6. सन्निपात वाले रोगी को शीतांग होना, अचानक ज्वर उतर जाना, शीतल पसीना आये तो मृत्यु सूचक है।

वृहद् भारंगि वाद क्वाथ

कुटकी—पद्ममाख नेत्र वाला, लाल चंदन, धनिया, गुरिज, अरूस पत्र, हर्र, अमलतास, पाढ़ा, सोंठ, इन्द्र जौ, भारंगी, नागरमोथा—यह 3-3 माशे लेकर कूटकर सवा सेर पानी भंडिया में डालकर काढ़ा पकायें। आधा पाव शेष रहने पर उतार लें। छानकर पियें, इससे वात, कफ, ज्वर, कफ ज्वर, त्रिदोष ज्वर, पसली, बदन की पीड़ा, मूर्छा-भ्रम, प्रलाप यह सब समूल नष्ट होते हैं। दोनो वक्त पिलायें।

कल्पतरु रस

सोंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध सोहागा, सीधिया, शुद्ध हिंगुल छह-छह माशे लेकर कूट-छान लें। अभ्रक भस्म डेढ़ रत्ती, हरताल भस्म, वर्की डेढ़ रत्ती, ताम्र भस्म आठ आना भर मिलाकर अदरक के रस में घोंटकर 2-2 रत्ती की वटी बांध लें।

मात्रा—1 वटी अदरक के रस व शहद से दिन रात में 3 बार दें तो वात ज्वर, वात-कफ ज्वर, त्रिदोष ज्वर, पसली, बदन का दर्द, खांसी, श्वास, पेट की दाह सब निर्मूल करने वाला कल्पतरु रस है।

नोट—यदि रोगी को शीतांग हो गया, बदन ठंडा पड़ गया, ज्वर उतर गया तो सीधिया सरसों के तेल में पकाकर बदन में तेल लगायें। राई, सीधिया, लहसुन, गौमूत्र में पीसकर माथे में बांधें तो बदन में गर्मी आ जाएगी। यदि ज्वर न आया, गर्मी न आई तो रोगी असाध्य है। मृत्यु तुल्य है।

काल भैरव रस

पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल भस्म, ताम्र भस्म, शुद्ध सीधिया—प्रत्येक एक-एक तोला की प्रथम कज्जली बनाएं फिर सब भस्में मिलाकर नीम के रस में घोंट, एक-एक रत्ती की गोली बांध लें। 1 गोली

ज्वर आने के पूर्व तुलसी रस व मधु के साथ खायें तो वातज, कफ़ज, सर्व ज्वर, मलेरिया दूर होता है।

मृत संजीवनी रस

शुद्ध गंधक, आंवला सार, शुद्ध पारद, हिंगुल का निकाला हुआ पारा एक तोला लेकर कज्जली बनाएं। फिर ताम्र भस्म 6 मासा, हरताल भस्म, 6 माशा, कौडी भस्म 6 माशा, अभ्रक भस्म 6 माशा, शुद्ध मैनसिल 6 माशा, शुद्ध हिंगुल 6 माशा, स्वर्ण माक्षिक भस्म 6 माशा, सब मिलाकर अदरक के रस में घोंटें। फिर पत्थर चटा के रस में घोंटें। बालुका यंत्र से आतशी शीशी में भरकर पकाएं। निर्धूम हो जाये तब निकाल लें फिर चित्रक हाथी, शुंडी सोंठ, आतशी पीपली एक-एक तोला पीस छानकर सब रसादिक मिलाकर अदरक के रस में घोंटकर एक-एक रत्ती की बटी बनाएं। एक वटी पान के रस मधु से, आद के रस मधु से त्रिदोष वाले रोगी को 3-4 बार दें तो त्रिदोष ज्वर, मूर्छा दाह, प्रलाप, हिचकी, श्वास, खांसी, भ्रम, शीतांग सब दोषों को दूर करने वाला मृत संजीवनी रस है। अचेत रोगी को चैतन्य करके जीवन दान देता है।

बालुका यंत्र

एक कड़ाही में बालू भरें, फिर उसके बीच में औषधि भरी शीशी रखें। मुंह न बंद करें। शीशी में कपड़ मिट्टी कर देना चाहिये। चूल्हे में चढ़ाकर आंच दें। कम से कम 6 घंटे आंच दें। यह बालुका यंत्र है। ऊपर वाला रस पकाने में नीचे लिखा मंत्र से शुद्ध होकर जब पकायें तब जपते रहें। यह अघोर मंत्र है।

इस मंत्र का जाप करें।

ॐ अघोरे भ्यश्च घोरभ्योघोरा घोर तेरभ्यश्च
सर्वतःसर्व सर्वेभ्यो नमोस्त रुद्र-रूपेभ्यः

चिंतामणि रस

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक एक-एक तोला लेकर कज्जली बनायें। फिर ताम्र भस्म, हरताल भस्म एक-एक तोला मिला दें। और फिर शुद्ध सोहागा, ज्वारवार, सोंठ, काली मिर्च, सीधिया, पीपल, छोटी त्रिफला सब एक-एक तोला लेकर चूर्ण बना छानकर मिला दें। अदरक के रस में घोंट कर

एक-एक रत्ती की गोली बनाएं। मधु से एक-दो बटी 3 बार दें तो वात कफ, ज्वर कफ, सन्निपात, मूर्छा, दाहतृषा, अरुचि सबको दूर करता है।

मृत्युंजय रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक एक-एक तोला लेकर कज्जली बनाएं फिर शुद्ध मैनसिल, शुद्ध सीधिया, शुद्ध हिंगुल, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, हरताल भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म 6-6 मासे लेकर चितावर के रस आद के रस की भावना देकर घोंटें। एक-एक रत्ती की वटी बनाएं। मात्रा 1 से 2 वटी तक जब सन्निपात के रोगी को अंतिम अवस्था के चिह्न सूचित हों तब दिन रात में तीन-चार बार दें। 1 वटी भूनी हींग अदरक के रस व मधु में 3 बार दें तो शीतांग ज्वर, प्रलाप, मूर्छा, हड़कूटन, पसली की पीड़ा आदि सम्पूर्ण दोष शांत करने वाला मृत्युंजय रस है। जीवन दान देने वाला है। यदि त्रिदोष में बेहोशी है, आंखें बंद हैं तो स्फटिक चूर्ण सुंघा दो, नाक से होश आ जाएगा। छींक आ जाएगी।

मृत संजीवनी सुरा कस्तूरी कल्प

मृत संजीवनी सुरा 5 तोला, कस्तूरी 2 रत्ती, सीधिया 6 माशा पिसा हुआ, शहद 1 तोला—शीशी में भरकर बंद कर दें। एक हफ्ते में अर्क तैयार हो जाएगा। यह सन्निपात के रोगी को शीतांग अवस्था में 10 से 15 बूंद दें। बदन गर्म हो जाएगा, कालरा वाले रोगी को भी क्षीण अवस्था में दी जा सकती है। फौरन रोगी सचेत हो जाता है। यह कस्तूरी कल्प है। जल से मिलाकर देना चाहिये।

ज्वर सार्दूल वटी

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक 1-1 तोला लेकर कज्जली बनायें फिर तवली, हरताल भस्म, शुद्ध धतूर बीज, शुद्ध पीपली, शुद्ध सोहागा, काला जीरा सब पीस-छानकर कज्जली मिलाकर नींबू के रस से घोंट कर 1-1 रत्ती की वटी बनाएं। अदरक के रस मधु से 1 वटी ज्वर आने के पूर्व दें तो वायु ज्वर, वात-पित्त ज्वर, कास-श्वास, बदन का दर्द, पसली दर्द, प्यास, दाह सब शांत हो जाते हैं। यदि ज्वर बना रहे उतरे नहीं तो 3 बार दवा दें।

॥ इति ज्वराधिकारः ॥

द्वितीय अध्याय

सिर-रोग प्रयोग

1. लाल फिटकरी पीसकर 2 रत्ती नींबू से अथवा मिश्री से फांक कर पानी पिएं। इससे सिर का दर्द, अर्ध सिर पीड़ा दूर होती है। एक-दो बार खाएं। स्प्रो की 1 वटी पानी से 2 बार खाएं, तो सिर का दर्द अधौखा दूर कर देता है। मुलहठी पानी में घिसकर अंडे की फुफुरी से जिस तरफ दर्द होता हो उसी नथुने से सांस खींचने से अधौखा दूर होता है।

नौसादर, कपूर शीशी में भरकर सूंघने से सिर दर्द दूर होता है।

मेहंदी के फूल सिरके में पीसकर सिर पर लेप करने से सिरदर्द दूर होता है।

प्याज पीसकर तलवा में लेप करें, सिरदर्द दूर हो जाएगा।

लाल फिटकिरी का चूर्ण 4-5 रत्ती पत्थर में डाल थोड़े पानी से हल्दी उसी में घिस दें। कुछ लाल-सा लेप बन जाएगा। दोनों तरफ कनपटियों में लगाने से सिर का दर्द दूर होता है।

आनंद भैरव रस 1 वटी 2-3 बार मधु से खायें, तो सिर का वायु, शीत से होने वाला दर्द, खोपड़ी की पीड़ा दूर हो जाती है।

कनेर की पत्ती का रस 1 तोला मिश्री 2 रत्ती भर मिलाकर सूंघने, लम्बी सांस लेने से सिर का दर्द दूर जाता है। नौसादर 1 आना भर, हल्दी एक आना भर पीसकर चुटकी से थोड़ा-थोड़ा सूंघें लें, दर्द बंद हो जाएगा। दालचीनी का तेल अमृत धारा मिलाकर माथे में लगाये तो सिर का दर्द दूर हो जाएगा। लौंग पीसकर माथे पर लेप करें, वायु का सिरदर्द दूर हो जाएगा। सफेद कनेर की पत्तियां छाया में सुखाकर पीस लें। 2 चावल भर नाक में सुंघाएं, छींकें आएंगी, सिरदर्द, आधा सिरदर्द बंद हो जाएगा।

दिमाग के दर्द व कीड़ों का प्रयोग

यदि दिमाग में दर्द होता है, कीड़े पड़ गये हैं तो मूली का छार पीसकर पानी में घोलकर लम्बी सांस लें। सब कीड़े निकल जायेंगे। दर्द भी बंद हो जायेगा। 3-4 बार लम्बी सांस लें।

सिर के बाल झड़ने का यत्न (पुनर्यौवन तेल)

इन्द्रायन (इंडोरन) के फल के बीज काफी मात्रा में इकट्ठा करके आंवला के रस में 1 बार भिगो कर सुखा लें। फिर कोल्हू से या पाताल यंत्र से तेल निकाल लें। 2 बूंद की नास लेने से बाल काले कर देगा।

सिर की जलन

मेंहदी के फूल 4 माशा, गोंद कतीरा 3 माशा, सकोरे में रात को भिगो दें। प्रातः मिश्री मिलाकर पीसकर पियें। इससे सिरदर्द, जलन, सिर के बाल झड़ना बंद हो जाते हैं। इसी प्रकार सौंफ 4 माशे सकोरे में भिगोकर प्रातः कूट छानकर गुड़ मिलाकर पिएं तो सिर का दर्द, जलन, बालों का झड़ना बंद होता है।

सिर का गंज अर्थात सिर के बाल झड़ना

सरसों का तेल पाव भर, मेहंदी के हरे पत्ते आध पाव, पीसकर अग्नि पर पकाएं। यहां तक कि पत्ते जल जायें, छान कर शीशी में भर लें रोज इस तेल की मालिश सिर में करने से उखड़े बाल फिर से जम आते हैं।

मेंहदी के पत्ते, इडोरन के पत्ते पीसकर सिर में उखड़े बालों में लेप किया करें तो फिर से बाल उग जाते हैं। हाथी दांत रसौत बराबर-बराबर बकरी के दूध में पीस कर लेप करें तो उखड़े बाल उग जाते हैं।

बाल काले करने के प्रयोग

हरी झाऊं की जड़ डेढ़ तोला, तिल तेल डेढ़ तोला, भांगरे का रस डेढ़ तोला, त्रिफला 3 तोला चूर्ण डालकर पकायें। पानी जब जल

जाये तेल बालों में लगायें। जड़ों से बाल काले हो जायेंगे। मीठे तेल में डेढ़ तोला में गेंदे की छठंखुड़ियां पीसकर पकायें, इस तेल के लगाने से बाल काले हो जाते हैं।

3. एक माजू फल पहले पानी में भिगोयें फिर आग में भून डालें। जलने न पाये। फिर संगरास 2 माशा, नीला थोथा 4 रत्ती, नौसादर 3 रत्ती, लौंग 3 रत्ती, लौह चूर्ण रेती का रेता हुआ एक माशा, सब लोहे की कड़ाही में डाल आंवले का रस डाल-डालकर घोंटता जायें। जब नखों में काली स्याही आ जाये तब डिब्बे में भर ले। इसको आंवले के रस से बाल धोकर ब्रश से लगाये, सब बाल काले हो जायेंगे।

आम के फल की बीजियों का तेल पाताल यंत्र से निकालें। इस तेल की मालिश से श्वेत बाल काले हो जाते हैं।

केश कल्प

आंवला तीन छटांक, हर्रे आधा पाव, बहेरा आधा पाव, आम की गुठली पाव भर, लौह चूर्ण एक छटांक, सब पीस लें। घमिरा व आंवला रस डाल-डालकर घोंटता जाये, उसी कड़ाही में रखा रहने दें। इसको ब्रश से बालों में लगायें सब बाल काले हो जायेंगे।

आंवला एक छटांक, हर्रे, बहेड़ा, टका-टका भर पीस लें। लौह चूर्ण टका भर डालें। तिल के पत्ते, घमिरा का रस, आंवले का रस डालकर कड़ाही में घोंटें यह लेप बालों को काला करता है। ब्रश से लगायें।

केश कल्प तेल

माजू फल आध पाव, अखरोट की छाल एक सेर, हीरा क़सीस एक तोला, फिटकिरी आध पाव, तिल का तेल एक सेर, आम की गुठलियों का काढ़ा छटांक भर, घमिरा का रस एक सेर, आंवले का रस, सब कड़ाही में डालकर पकायें। मंद-मंद आंच से जब पानी जल जाये तेल ही रह जाये तब उतारकर छान कर रख लें। बोतलों में भर लें। इस तेल को बालों को साबुन से धोकर नित्य बालों पर मला करें तो पके हुए बाल फिर से काले हो जाते हैं।

बाल गिराने के प्रयोग

हरताल गोबरहा 1 तोला, चूने का पानी 10 तोला में हरताल पीसकर बोतल में भर दें। अर्क तैयार है। इसको फुरेटी से बालों में लगाकर तर कर दें। कम-से-कम 2 बार फिर कपड़े से पोंछ दें। सब बाल उखड़कर कपड़े में आ जाएंगे। साफ जिल्द हो जाएगी।

बाल सफा अर्क

हरताल 1 तोला, शंख भस्म एक छटांक, पलास के फल की राख एक छटांक, बोतल भर केले के रस में डाल दें। 7 दिन में अर्क तैयार हो जाएगा। यह रस बालों में लगाएं। 5 मिनट में बाल साफ हो जाएंगे।

तृतीय अध्याय

कर्ण-रोग प्रयोग

कर्ण बिन्दु तेल

तिल का तेल आधा पाव, धतूरे का रस एक सेर, मदार के पत्ते दस, सेंधा नमक आठ आने भर डालकर कड़ाही में पकायें। जब सब पानी-पत्ते जल जाएं तब उतार लें व छानकर शीशी में रख लें। कान को नीम के पत्तों का व फिटकरी का पकाया पानी डाल-डालकर साफ करके 5-6 बूंद तेल रोज कान में डालें तो कान का बहना व दर्द व बहरापन दूर करता है। इसमें लाल रतन जोत भी पीसकर मिला दें। छान लें। अफीम 1 आना भर मिला दें तो अधिक गुणकारी बन जाएगा।

कर्ण सुधा तेल

सरसों के असली तेल 15 तोला, लेकर कड़ाही में डालें। हींग असली आठ आने भर, लहसुन के जवे छिले हुये 3 बड़ी पोटियों के पीसकर तेल में डालकर पकायें। जब खूब पक जाये तब उतार-छान कर शीशी में भर लें। यह तेल कान के दर्द में अनुभूत है, बहरापन को दूर करने वाला है।

कर्ण शूल का प्रयोग

1. तारपीन का तेल 4-5 बूंद कान में डालें, कर्ण शूल मिट जाता है।

2. शराब कुछ कुन-कुन करके कान में डालें, दर्द बंद कर देती है।

3. सिरसा के पत्तों का रस गर्म करके कान में डालें, हींग जरा सी मिलाकर कान में डालें, कान का दर्द बंद हो जाएगा।

4. कौड़ी को मदार के दूध में पीसकर भस्म कर दें। यह भस्म 2 रत्ती कान में डाल कर नींबू का रस 4-5 बूंद डाल दें। भयंकर कर्ण शूल दूर होती है। कौड़ी यदि ना मिले तो समुद्र फेन डालें।

5. लाल फिटकिरी को पीसकर रूई की एक लम्बी बत्ती बनाकर आगे के सिरे में शहद लगा दें और पिसी फिटकिरी का चूर्ण लपेट दें। यह बत्ती कान में डालकर एक दूसरे फाहे से कान को बंद कर दें इससे कान का दर्द, घाव, बहना सब बंद हो जायेगा।

6. मूली के बीज, धतूरे का रस, हींग, सरसों के तेल में पकाकर कान में डालें, दर्द-बहरापन दूर हो जायेंगे।

7. सरसों के तेल में बबूल के फूल पकाकर कान में डालने से दर्द बंद होता है।

लाल तेल कर्ण शूल पर

सरसों के तेल में लाल रतन जोत डालकर पका लें। छानकर शीशी में रख लें। यह तेल कान के दर्द, बहरापन, स्राव होने को बन्द करता है।

अक्सीर तेल

सरसों का तेल पाव भर, मूली के बीज पैसा भर, अदरक का रस 5 तोला, सेंधा नमक आना भर, मदार का रस 5 तोला, धतूर के फल 2 हों, सब चीजें कूटकर तेल में डाल कर पका लें। जब सब पानी जल जाये तब छानकर 5 रत्ती भर अफीम मिला दें। शीशी में रख लें, इसको 4-5 बूंद कान में डालने से कान का दर्द, स्राव, बहरापन, घूं-घूं शब्द होना दूर होता है।

दर्द कान के अक्सीर तेल

1. सरसों का तेल पाव भर, हींग, वच, सोंठ, सेंधा नमक एक-एक तोला लेकर कूटकर तेल में डालें। मदार का रस पाव भर, धतूरे का रस पाव भर डालकर पका लें। पानी जल जाने पर उतार लें। छानकर शीशी में भर लें। 5-6 बूंद कान में डालने से कान का दर्द, बहरापन, घूं-घूं का शब्द होना, स्राव सब बंद करने वाला है।

2. पीपल, सेंधा नमक कूट, बच, हींग, सोंठ, लहसुन एक-एक तोला लेकर कूट लें। फिर सरसों का तेल पावभर मदार का रस पावभर, सब चूर्ण डालकर पका लें। शुद्ध हो जाने पर उतार दें। छानकर प्रयोग में लायें। 4-5 बार कान को नीम के पानी से साफ करके डालें। इसके निरंतर डालने से कान का स्राव, बहरापन, कीड़े, दर्द सब नष्ट हो जाते हैं।

चतुर्थ अध्याय

नासिका-रोग प्रयोग

रक्त गिरने का प्रयोग

1. कहर या शमई एक सुनहरे रंग की गोंद है। पंसारियों से लेकर 1 माशा पीसकर दूध, शक्कर, पानी में डालकर पीने से नकसीर का रक्त गिरना बन्द हो जाएगा।

2. कोहू दाना, सौंफ सकोरे में फूलने दें। रात को सुबह पीसकर शक्कर डालकर पीने से नाक का रक्त गिरना बंद हो जाएगा।

3. नींबू के रस की नास देने से फौरन रक्त स्राव बंद हो जायेगा।

4. चौलाई की जड़ें 2 तोला पानी में पीसकर मीठा डालकर पीने से तत्काल रक्त का बहना बन्द हो जाएगा।

5. राल संजरापत बराबर-बराबर पीसकर रख लें। 6 रत्ती दवा मिश्री से खाकर दूध पी लें। 2-3 बार प्रयोग करें। नाक का रक्त, गुदा, लिंग का रक्त बंद हो जायेगा।

6. बेल के मुरब्बे में 2 रत्ती मुक्ता सीप, भस्म 2-3 बार खा लें। नाक का रक्त बंद हो जायेगा।

7. लाल फिटकरी का चूर्ण दही-मिश्री से खा लें। रक्त नाक गुदा का बंद हो जायेगा।

8. नारियल के जटा की राख 1 माशा, मिश्री 2 तोला खायें। दूध पीयें। नाक और गुदा का रक्त का गिरना बंद हो जायेगा।

9. सल्फा गोनो डीन की टिकिया 1-1 करके 3 घंटे में खायें। खून का गिरना बंद हो जायेगा।

पंचम अध्याय

नेत्र-रोग प्रयोग

यह बूटी जिसके खाने से सदैव के लिये नेत्रों का आना बंद हो जाता है। मूंडी बूटी के फल जो लाल रंग के, गड्ढों में होते हैं, उनको लाकर एक-एक करके जितने फल बिना पानी के समूचे निगल लें; दाँतों से कुचले नहीं, तो उतने वर्ष नेत्र नहीं आयेंगे। अनुभूत प्रयोग हैं।

नेत्र-पीड़ा हर

1. कीकर (बबूल की पत्तियां) एक छटांक लाकर पानी में पीसकर आंखों के ऊपर टिकिया बनाकर रख लें। वही बांध लें, आंखों का दर्द व लाली दूर हो जायेगी।

2. इसी प्रयोग से नेत्रों की पलकों के बाल झड़ना बंद हो जाते हैं जिसको खोटा वाय कहते हैं। कीकर की फलियों का पानी पलकों में लगावें तो खोटा वाय दूर हो बाल उग आयेंगे।

3. सत्यानाशी (धनोय)-स्वर्ण क्षीरी यह धनोय के नाम हैं, इसका दूध जो पीला-पीला डालियों के तोड़ने से निकलता है, सलाई से आई आंखों में लगा दें तो आंखों की लाली व उसके कारण पीड़ा शर्तिया दूर होती है। अद्‌भुत औषध है। चार बार लगाएं। प्याज का अर्क नेत्रों में 2-3 बूंद डालें तो नेत्रों की लाली व पीड़ा दूर होती है।

आई ड्रॉप अर्क

एक बोतल में गुलाब जल अथवा भभके का खींचा हुआ पानी भर लें। फिर उसमें अर्कक्षार, सुहागे का सत 3 तोला, लाल फिटकिरी 3 तोला पीसकर भर दें। कार्क बंद कर दें। अर्क तैयार हो जायेगा। इसकी 4 बूंद नेत्रों में डालें तो नेत्रों की लाली व पीड़ा दूर हो जाती है।

लाल फिटकिरी पिसी हुई 6 माशा, शहद एक छटांक, अफीम 3

रत्ती शीशी में भर लें। यह शहद नेत्रों में लगाने से घोर नेत्र विकार लाली पीड़ा नष्ट हो जाते हैं।

नेत्र सुधा अर्क

लाल फिटकिरी 1 तोला, शुद्ध चाकसू बीज पिसे हुये 5 तोला, मिश्री 1 तोला सबको एक बोतल भर पानी में पका लें। जब आधा बच जायें तो उतार लें, छानकर शीशी में भर लें। 2-2 बूंद आंखों में डालें तो नेत्रों की लाली पीड़ा, रोहे, घेटी सब दूर होते हैं। इसमें सुहागे का सत भी मिलाया जा सकता है।

नेत्र दीपक अर्क

1. कलमी शोरा 4 आना भर, फिटकिरी 2 आना, कपूर आठ आना भर, भवके से खींचे पानी बोतल में भर लें। अर्क तैयार है, यह नेत्रों की लाली, पीड़ा को दूर करता है।

2. जस्ते की भस्म 2 तोले, इलायची के दाने 2 माशे, अफीम 2 माशा—तीनों को घोटकर शीशी में रख लें। यह आंखों की (घेटी) रोहे जिसमें बच्चे आंख बंद रखते हैं, देखते नहीं, उंगली से रोहों में अन्दर लगा दें, तो रोहें दूर हो जाएंगे।

नेत्र बिन्दु

1. फिटकिरी 1 तोला, रसौंत 1 तोला, मिश्री 1 तोला, भुना तूतिया पिसा हुआ 2 माशा पीसकर, 1 बोतल पानी में भभके के डाल दें। 3 दिन में अर्क तैयार हो जायेगा। इसकी 3-4 बूंद आंखों में डालें तो नेत्रों की लाली, फूला, माड़ा, धुंध को दूर करने वाला है।

2. मकुइया का रस जिस तरफ की आंख आई हो उसी कान में 10 बूंद डाल दें। नेत्र का आना बंद। दोनों आ रही हों तो दोनों कानों में डालें।

नेत्रों के रोहों (घेटियों का सिद्ध प्रयोग)

फिटकिरी 1 तोला, शुद्ध चाकसू बीज आधा तोला, शक्कर 1 तोला, सबको पीसकर पानी से बत्तियां बना लें। सूखाकर रख लें। नेत्रों के आने पर पानी में घिसकर आंजें तो नेत्रों की लाली, पीड़ा, घेंटी सब दूर करने वाला परीक्षित है।

स्फटिक चूर्ण, सौत, अफीम तीनों रगड़कर पलकों में लेप करें। खोलते भी जाएं जिससे दवा का अंश आंखों में जाए। इससे पीड़ा, लाली नष्ट होती है। इसी की चुटकी भी पानी से लगायें फिर किरकिराना बंद हो जायेगा।

नेत्रों के फूला-जाला-माड़ा के प्रयोग

1. बच्चों के आंख में फूली पड़ जाने पर नीम की टहनी के आगे की कोमल लकड़ी तोड़कर रविवार को धागे में बांध कर सिर में या कान में बांध दें। फूली कट जायेगी।

2. कंजा की बीजी टेसू के फूल के रस में घिसकर नेत्रों में अंजन करें। इसमें जरा-सा नमक भी मिला दें तो पुरानी-से-पुरानी फूली कट जायेगी।

3. नौसादर, फिटकिरी लाल पीसकर शीशी में रख लें। यह सुरमा नेत्रों के फूला, धुंध, रतौंधी को दूर करता है।

4. बारहसिंगा का सींग नींबू के रस में घोंटकर बत्ती बना लें। इसको पानी में घिसकर आंखों में लगायें तो फूला को दूर कर देता है।

पंचामृत सत्त्व

फिटकिरी 3 आना भर, नौसादर 2 आना भर, सोहागा कथिया 2 आना भर, नीला थोथा 1 आना, कपूर आठ आना भर—सब पीसकर एक भंडिया या कसोरा मुंह-से-मुंह मिला कर कपड़ मिट्टी कर दें। चूल्हे में चढ़ाकर 3 घंटे तक आंच दें तो इनका सत उड़कर ऊपर के पात्र में आ जायेगा। इसको ब्रश या झाड़ू से पोंछ कर कड़ाही में डालकर घोंट दें। शीशी में भर लें। इस सुरमा को सलाई से नेत्रों में चावल-चावल भर लगायें तो यह भड़ा, टलका, फूला सब दूर करने वाला है। बरसात में सुरक्षित बंद करें नहीं तो पानी हो जाता है।

बूटियों का अंजन

शीशा कड़ाही में पिघलायें। नीम के हरे डंडे से घोंटते रहें। भस्म हो जायेगा। शीशे का 1/40 भाग, अफीम 1/10 भाग, सेंधा नमक पीसकर डाल दें। घोटते जाएं, सब के बराबर काला या सफेद मिला दें। नीम के रस की भावना देकर घोंट दें। त्रिफला के रस की भावना देकर

घोंट दें। सूखने पर शीशी में रख लें। यह नेत्रों के धुंध, ढ़लका, पीड़ा, फूला माड़ा को दूर करता है। यह अनुभूत है।

सुलेमानी सुरमा

1. शीशे की भस्म 4 तोला में पारद 1 तोला घोंटकर मिला दें फिर आग में कड़ाही चढ़ा दें। गंधक 7 तोला पीसकर थोड़ा डालकर पका लें। नीम के डंडे से घोंटते जायें। जब सब गंधक पड़ जायें तब आंच तेज करके घोंट दें। गंध दूर होने पर उतार दें। फिर पीपल 4 नग, सिरसा के बीज ½ तोला, मिश्री टका भर डालकर खूब पीसें ताकि कड़क न दे। सुरमा में मिला दें। कपूर 1 तोला उड़ाया हुआ मिलाकर घोंट दें। शीशी में भर दें। यह नेत्रों के जाला, फूला, धुंध, ढलका को दूर कर देता है।

2. रसौत–जस्त भस्म, मुक्ता सीप भस्म, ताम्र भस्म, शुद्ध शहद— यह सब चीजें शहद से ही घोंट कर शहद ही में मिला दें। यह नेत्रों की लाली, जाला, फूला, रतौंधी, धुंधी, मोतियाबिन्द को लाभकारी है।

स्वेतांजन

भुनी फिटकिरी 1 माशा, भुना सोहागा 1 माशा, भुना तूतिया 1 माशा, मिश्री 1 तोला। सबको खूब पीसकर शीशी में रख लें। यह सुरमा आंखों का माड़ा, फूला, धुंध को दूर करने वाला है।

नेत्रों का लेप सेंक

बतासा 2, पान 1, फिटकिरी कौड़ी भर, अफीम ½ रत्ती पीसकर कपड़े में पोटली बनायें। गर्म जल से सेक करें या ऊपर लेप करें तो लाली, पीड़ा नष्ट होती है।

चन्द्रवर्तो

निर्मली के बीज, शंख नामी 1-1 तोला, सोंठ 1 तोला, मिर्च श्वेत ½ तोला, पीपल ½ तोला, भर रसौत ½ तोला, ववाभचिसी ½ तोला; मैनसिल ½ तोला, अंडे का बझला आठ आने भर—सब चीजें कूट-पीसकर छान लें। फिर जल में घोंटकर बत्तियां बनायें। इनको शहद में पीसकर अंजन करें तो नेत्रों की जलन, धुंध, टलका, फूला, माड़ा को दूर कर रतौंधी भी दूर करता है।

हरित नेत्रांजन

रेती का रेता, तांबे का चूर्ण टका भर, नौसादर 5 तोला, दोनों को खरल कर शीशी में भर दें। ऊपर से नींबू का रस ऊपर तक भर दें ताकि दवाइयां डूब जायें। धूप में रख दें तो हरा-हरा फूलकर हो जाएगा। यह निकालकर घोंटकर नेत्रों में लगायें। यह सुरमा नेत्रों के माड़ा, फूला धुंध, रतौंधी को दूर करने वाला है।

बच्चों के रोहों (घेंटी) पर

फिटकिरी पिसी 1 तोला भर में 1 तोला घी डालकर कटोरी में आग पर चढ़ा दें। खूब तेज आग जलायें ताकि फिटकिरी जल उठे और घी डालते रहें। काली भस्म हो जायेगी। यह सुरमा बच्चों के रोहों को दूर कर देता है।

लोध फिटकिरी 1-1 माशा, इमली की पत्ती 4 माशा, अफीम 3 रत्ती पीसकर पुटकी बांधे। गर्म पानी से पुटकी लगाएं, नेत्र पीड़ा दूर होगी।

मोतिया बिन्द का सुरमा

1 जस्ता-शीशा भस्म 2-2 तोला, पारद 1 तोला, कड़ाही में डालकर घोंट दें। नौसादर 1 तोला भर, कपूर उड़ाया हुआ 1 तोला भर, चमेली के फूल की कली 1 तोला भर, सिरसा बीजों का चूर्ण आठ आने भर सब चीजें गुलाब जल से घोंटकर सुरमा बनावें। यह सुरमा धुंध, फूली, मांडा, मोतियाबिंद को दूर करता है। अंधे को भी दिखने लगेगा।

2. प्याज का रस रोज नेत्रों में डालें तो मोतियाबिंद लाली को दूर कर देता है।

3. सुरमा दो-दो तोला, सोहागा शुद्ध एक तोला, पारा एक आना भर, फिटकिरी एक आना भर, नीला थोथा शुद्ध भुना हुआ एक माशा, सीप पिसी ½ रत्ती तोला, कलमी शोरा एक तोला भर, कवाब चीनी एक तोला भर, केशर चार रत्ती, शुद्ध रसौत आठ आने भर, जसद भस्म आठ आनेभर, स्वेत मिर्च एक रत्ती, गुलाब जल त्रिफला रस से सबके कपड़छन चूर्ण को घोंटे। 8 दिन में ममीरा पीसकर घोट दे। यह नेत्रों के माड़ा, फूला, धुंध टलका को बंद करने वाला है।

षष्ठम अध्याय

मुख रोगों पर प्रयोग

छालों का प्रयोग

1. भुनी फिटकिरी 1 आनाभर, कत्था पापरी आठ आनाभर, इलायची के दाने आठ आनाभर, शीतल चीनी आठ आनाभर, सब पीसकर शीशी में रख लें मुख के छालों में यह चूर्ण लगावे तो छाले मुंह की जलन दूर होती है।

2. राई, पीपल, नौसादर, सोंठ, अकर करहा सब बराबर पीसकर जीभ में मले तो जीभ के दाने और मोटापन दूर होता है।

3. फिटकिरी व माजूफल पीसकर जीभ में मले तो जीभ के दाने दूर हों।

4. भुना सोहागा कचिया पीसकर छालों में लगाये, तो छाले दूर हो जाएंगे।

कण्ठ रोग पर प्रयोग

1. कंठ में गले के आसपास गांठें पड़ जाती हैं। इसको कंठ माला कहते हैं। इसमें पीपल का ऐसा पेड़ जो दीवार में उगा हो, जमीन में जड़ें ना गईं तो उस जड़ को लायें। पानी में पीसकर गर्म-गर्म गले की ग्रंथियों में लगायें। सब गांठे दब जाएंगी।

2. पत्थर चटा की जड़ें शुक्ल पक्ष में प्रातः स्नान करके उखाड़ लायें। सुखा कर चूर्ण बना लें। 1 माशा चूर्ण सुबह-शाम खायें और इसी चूर्ण को पानी में पीसकर कुछ गर्म करके गांठों में लगायें तो गांठे बैठ जाएंगी। यदि मवाद दें तो इसी चूर्ण को बराबर लगातें जाएं सब मवाद घाव बंद हो जायेंगे।

गले के रोग

1. जवाखार 4 रत्ती एक छटांक पानी गर्म करके इसमें डालकर कुल्ला करें। गले तक कुल्ले का पहुंचा दें तो गले का दर्द बंद हो, इसी गर्म पानी से गले में सेंक भी करें।

2. रीठे का वकला 1 आनाभर, सोंठ आठ आनेभर, इन सबको आधसेर पानी में पका लें। कुछ ठंडी होने पर पी लें गर्म-गर्म तो गले का दर्द व सूजन बंद हो।

3. संजीवनी वटी 1 तोला, एक रत्ती सुबह-शाम खाने से दर्द बंद हो जाएगा। चाय का सेवन करें।

4. पत्थरचटा की जड़ें 2 तोला कूटकर आधसेर पानी में पका लें। डेढ़ छटांक रहने पर उतार दें। गर्म-गर्म पीने से गले का दर्द, सूजन सब दूर हो जायेगा।

5. अमलताश (केलवार) की कली का गूदा 4 तोला, 1 सेर पानी में काढ़ा करें। आधा सेर रहने पर उतार लें, 2 तोला मिश्री के साथ कुछ गर्म करके पीने से गले का दर्द बंद होता है।

गिल्टी की दवा

1. काला जीरा, कौहरी, कोचिला सोंठ, चूहे की लिंगदी, पानी में पत्थर चटा की जड़ें 1 तोला डालकर पीस लें। गर्म-गर्म गिल्टियों में थोपन करें तो गिल्टी बैठ जायेगी। आनन्द भैरव सुबह-शाम खा लें। 1½ रत्ती आद से यदि वर से यह वादी से फूलती है। जुलाब भी ले लें, मल बंध से कम फायदा होता है।

2. कंठ रोग के दोनों प्रयोग पीपल की जड़ व पत्थरचटा की जड़ें पीसकर गर्म कर लेपन करें तो गिल्टी बैठ जायेगी परंतु खाने वाली दवा अवश्य खायें जिससे कब्ज हट जाये। कब्ज ही गिल्टियों की जड़ है।

दांतों के दर्द पर प्रयोग

स्वेत मंजन—खड़िया मिट्टी पाव भर, फिटकिरी भुनी 4 तोला, सेंधा नमक आध पाव, मिर्च आठ आना भर, सजरापत आठ आना भर सब दवा पीसकर मंजन तैयार करें। छान लें। कपूर 1 आनाभर पीसकर

मिला दें। शीशी में बंद कर दें, यह मंजन दांतों से पीव निकलना (पायरिया), दर्द सब दूर करता है।

बफारा

यदि मसूड़े फूले हों तो मेथी आठ आना भर लेकर एक छटांक पानी में कूटकर पका लें। दाल की तरह जब आधा पानी जल जाये, दाल पक जाये तब एक लकड़ी में रूई का फाहा लपेट कर उसी में गर्म पानी में डूबाकर मसूड़ों में कईं बार फेरें ताकि गर्मी पहुंच जाये। फूले मसूढ़े बैठ जायेंगे। अनुभूत है।

आनन्द भैरव दोनों पहर 1½ रत्ती अदरक शहद के साथ खायें। यह भी वादी का रोग है। ठीक हो जाएगा।

मंजन

पीपल आठ आना भर, मिर्च आठ आना भर, फिटकिरी आठ आना भर सब पीसकर चूरेन्द की मदी पीसकर आधे पाव मिला दे। मंजन मसूढ़ों का दर्द, दांतों का दर्द और फूलना बंद करता है।

कीड़ों के कारण दांतों में दर्द

यदि दांत में कीड़ा लगा है, दर्द होता है तो बायविडंग आधा तोला भर 2 तोला पानी में पीसकर पकायें। जब पानी 2 फाहे तक करने के अनुकूल रहा जाये तब फाहे दांत के नीचे दबाकर लेटे रहें। यह प्रयोग रात को करें। प्रातः दन्त-पीड़ा दूर होकर कीड़े मरे हुए फाहे में आ जायेंगे।

कपूर की 1 टिकिया कीड़े लगे दांत में रखकर लेटे रहें, सब कीड़े मर जायेंगे।

मंजन

फिटकिरी एक तोला, पीपली एक तोला, सेंधा नमक दो तोला, चूल्हे की जली मिट्टी एक छटांक, करूई लौकी जली हुई एक तोला, भेलमा जला हुआ एक तोला, तम्बाकू चूर्ण एक तोला, मिर्च पिसी एक

तोला, जले बादाम के छिलके दो तोला, सुपारी जली दो तोला, भुना तूतिया एक तोला, सबको कूटकर मंजन बनाये। इस मंजन से दांतों का दर्द, मसूड़े का फूलना दूर हो जाता है।

मुख से रुधिर गिरने पर

1. राल संजरापत पीस लें, बराबर-बराबर इस चूर्ण को 6 रत्ती मिश्री के साथ खाकर चौलाई का रस पी लें तो लिंग, मुख, गुदा, प्रदर का रक्त बंद होता है।

2. स्फटिक चूर्ण 6 रत्ती मिश्री से फांक लें। दूध पी लें। मुंह का खून बंद हो जाएगा।

3. अरूस का रस दो तोला, शहद मिलाकर पीने से मुंह का रक्त बंद हो जायेगा।

4. नारियल के जटा की राख आधा तोला, मिश्री आठ आना भर मिलाकर फांक लें, पानी पी लें, मुंह, गुदा का रक्त बंद हो जाएगा।

सप्तम अध्याय

मंदाग्निी तथा मल बंध प्रयोग

उदर में मंदाग्नि वायु से होती है। यह वायु पित्त के साथ हो जाती है। नाड़ी वायु पित्त की दोनों साथ चलती है। लेकिन पित्त की नाड़ी मंद चला करती है। मल संचय होकर हाजमा कमजोर कर देती है। जिससे अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाते हैं।

मलबंध पर पंचसकार चूर्ण

सौंफ, सोंठ, हर्रे, सेंधा नमक टका-टका भर, सनाह की पत्ती, आधे पाव, कूट-पीसकर छान लें। चूर्ण तैयार है। यह रेचक चूर्ण है। टट्टी साफ लाता है। 3 माशे सुबह-शाम को भोजन के बाद खायें। टट्टी साफ होगी। यह नित्य भी खाया जा सकता है।

मुंजिस

सौंफ, सनाय, दाख, गुलाब के फूल 3-3 माशे शाम को सकोरे में भिगो दें। सुबह पीसकर शक्कर पाव भर, गर्म दूध से पीयें। 1 या 2 बार टट्टी आयेगी। यदि न आये तो सनाय 6 माशे डालकर पीयें।

स्वर्णपत्रादि चूर्ण

1. आंवला, हर्रे, बहेरा, एक छटांक, सोंठ, मिर्च, पीपर, चाव, चितावर, जीरा, अम्लवेत प्रत्येक 2-2 तोला लेकर कूट-छान लें। सनाय आध पाव, सोचर नमक, सेंधा नमक, नौसादर 2-2 तोला पीसकर मिला दें। यह भी रेचक चूर्ण है। 3 माशा गर्म जल से सेवन करें। यह पाचन शक्ति बढ़ाता है, भूख लगने लगती है।

दस्त कराने वाले योग

1. कुटकी 1 तोला लेकर पीस लें, 1 माशा चूर्ण, बेर प्रमाण गुड़ में अंदर रखकर पानी से खा जायें। बहुत कड़वी होती है। इससे दस्त हो जाते हैं।

2. रेंडी का तेल टका भर, पाव भर दूध में डालकर पीयें, दस्त हो जाते हैं।

3. अमलतास (केलवार) की कली का गूदा 1 तोला, हर्र 2, पानी में पीसकर पीयें तो दस्त हो जाते हैं।

4. दाख का 3 बीज निकाल लें, सनाय चार आना भर पीस लें। दाख भी पीस लें। खाकर गर्म पानी 1-2 बार पीने से दस्त हो जाता है।

नाराच रस

शुद्ध पारा हिंगुल का 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें। घोंटकर फिर सोंठ, मिर्च, पीपर 2-2 तोले, शुद्ध सोहागा 2 तोला— सब पीसकर छानकर चूर्ण करें। जमाल गोटा 8 तोला शुद्ध पीसकर मिला दें। नींबू के रस से घोंटें। मात्रा 1 रत्ती से 2 रत्ती तक गर्म जल से खायें। शहद मिलाकर यह पेट में जमा मल को दस्तों से निकाल देता है। बहुत दस्तावर है। ज्यादा कदापि न खायें। 4-5 दस्त आते हैं। यदि ज्यादा दस्त आयें और रोगी को कष्ट हो तो दही, शक्कर पाव भर खिला दें। शरबत बनाकर पीयें, दूध, शक्कर, चावल का भोजन करें, दस्त बंद हो जाएंगे। घी से खिचड़ी भी खा सकता है। यदि इसके खाने से भी दस्त न आयें तो कई बार गर्म जल पीयें, दस्त होंगे।

इच्छाभेदी रस

शुद्ध पारद, हिंगुल का शुद्ध गंधक 1-1 तोला लेकर घोंट डालें। कज्जली बन जाएगी, फिर सोंठ, मिर्च, पीपल 1-1 तोला पीसकर चूर्ण करें। छान लें, शुद्ध जमालगोटा 4 तोला पीसकर मिला दें। नींबू के रस से घोंटकर एक-एक रत्ती की गोली बना लें। एक या दो गोली गर्म जल के साथ खायें, तो पेट के पुराने मल को दस्त से निकाल देता है। यदि दस्त न हो तो थोड़ी देर में पाव-पाव गर्म जल पीयें। दस्त

होने लगेगी, बंद करने के लिये दही पाव भर, शक्कर आध पाव मिलाकर खायें। शरबत पीयें, दूध-शक्कर-चावल खायें अथवा खिचड़ी-घी खायें।

सूचना

मल से मंदाग्नि, शूल, आंव वात, कामला, पांडू, शोथ, वात रक्त दोष, सर्वांग वात रोग, धातु क्षीणता, जीर्ण ज्वर, कृमि रोग, कठोर प्लीहा, शीत पित्त, मुख का रोग पैदा होते हैं। इन रोगों के उपचार करने में प्रथम रेचन दवा खिलाकर मल साफ कर दें। फिर दवा दें तो बहुत जल्द फायदा होता है।

हिंग्वाष्टक चूर्ण

सोंठ, मिर्च, पीपरामूल, पीपर, अजमोद, जीरा भुना, सौंफ भुनी, हर्रे—सब दवा 1-1 तोला कूट-पीस लें। छान लें। सेंधा नमक, सोचर नमक एक-एक तोला पीस लें। इन्हीं के साथ में भुनी हींग 6 माशा पीसकर चूर्ण में मिला दें। यह चूर्ण 3 माशे गर्म जल से भोजन के बाद सेवन करें तो अन्न का पाचन करे, साफ दस्त हो, पेट की कोई बीमारी न हो। यह पेट के दर्द, पेट फूलना, पेट के कीड़े, डकारें आना, हिचकी, पेट की गड़गड़ाहट समस्त पेट के रोगों में राम बाण चूर्ण है। बना कर रख लें।

मंदाग्नि पर त्रिफलादि चूर्ण

आंवला, हर्रे, बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल, पिपरामूल, अम्लवेत, सनाय, सेंधा नमक, सोचर नमक सब दो-दो तोला, जीरा 2 तोला पीस छान लें। चूर्ण बनाएं, अर्क नींबू से तर कर दें। यह चूर्ण 3 से 6 माशे नित्य भोजन के बाद सेवन करें, तो सम्पूर्ण खाये हुए भोजन को हजम करके क्षुधा बढ़ाने वाला, अफारा, उदर शूल को दूर करने वाला है।

हिंग्वादिचूर्ण

सोंठ, पीपर, मिर्च, पिपरामूल, जीरा श्वेत, काला जीरा, दूधिया वच, चाव, चितावर, हर्रे, पाढ़क चूर, अम्लवेत, काला नमक, सेंधा नमक,

सोचर नमक़, सज्जी क्षार, जवाक्षार, तंतरीक, झाऊ की जड़—सब एक-एक तोला लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनावे। हींग भुनी 1 तोला पीसकर चूर्ण के साथ पीसकर बोतल में भर दें। यह चूर्ण नींबू अदरक के रस में मिला लें। सुखाकर 3 माशा से 6 माशा नित्य सेवन करें तो मंदाग्नि, उदर शूल, कोखों की पीड़ा, अफारा, गुल्म, हिचकी, अम्ल पित्त की डकारें नष्ट करके क्षुधा प्रदीप्त करता है।

मल बंध पर कुटजा वटी

कुटकी एक तोला, अमलतास एक तोला, हर्रे एक तोला, सौंफ एक तोला, सोंठ एक तोला, सेंधा नमक एक तोला, सबको कूट-छानकर चूर्ण करें। गुड़ के शीरे में मिलाकर बेर के बराबर गोली बनायें। एक गोली अथवा दो गोली गर्म जल से प्रातः खायें। इससे दस्त साफ होकर पेट साफ हो जाता है।

लवणभास्कर चूर्ण

सामर नक, सोचर नमक, अनार दाना, अनार का छिलका, वायविडंग पीपर, पीपरामूल, जीरा काला, श्वेत जीरा भुना, समुद्री नमक, सज्जीक्षार जवाक्षार, विडनोन, धनिया, तालिस, इलायची, तज, नागकेशर, मिर्च, सोंठ, अम्लवेत, नौसादर सब दवा दो-दो तोला लेकर चूर्ण करके छान लें। यह चूर्ण उदर रोग, अफारा, शूल, मंदाग्नि गुल्म इत्यादि समस्त उदर रोगों को दूर करने वाला है। मात्रा 3 माशा गर्म जल से भोजन के बाद सेवन करें। यह क्षुधा बढ़ाने वाला चूर्ण है।

अष्ठम अध्याय

उदर शूल पर प्रयोग

गंधक वटी

1. शुद्ध आवंला सार, गंधक, काली मिर्च, पीपल, चित्रक, जवाखार, सेंधा नमक, काला नमक, सोचर नमक, दो-दो तोला लेकर पीसकर छान लें। नींबू के रस से भिगोकर बेर प्रमाण वटी बनायें। 1 या 2 वटी गर्म जल से सेवन करें। उदर शूल, अफारा, गुल्म को हरण करने वाली है।

2. गंधक का तेजाब 10 बूंद डेढ़ तोले पानी में डालकर पिलायें। पेट दर्द नष्ट होता है। बाद में आनन्द भैरव रस डेढ़ रत्ती, भुनी हींग 1 रत्ती पीसकर लाल नमक व अजवायन एक तोला में मिलाकर फांक लें। गर्म पानी पीयें, दर्द तत्काल दूर होती है।

शंख द्राव अर्क

अर्क क्षार अथवा मदार के रस, मूलीक्षार या मूलीका रस, नौसादर, कलमी शोरा, फिटकिरी, जवाक्षार, शुद्ध गंधक, आंवला सार 2-2 तोला, कौड़ी भस्म, शंख भस्म, सोड़ा खाने वाला 2-2 तोला लेकर पत्थर की कूंड़ी में पीसकर रख लें। फिर नींबू का रस थोड़ा डाल दें। घोंट दें। बाद में सवा सेर नींबू के रस में घोलकर शराब की तरह अर्क खींच लें। नलियों द्वारा या 10 से 15 बूंद जल से पीयें तो उदर शूल, अफारा गुल्म वायु से कुक्षि पीड़ा होना दूर हो जाते हैं।

उदर सुधा अर्क

सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपरामूल, अजवायन 1 तोला लेकर दो सेर पानी में कूटकर काढ़ा पकायें। जब 1/3 हिस्सा रह जाये तब छान लें।

फिर उसमें नींबू रस पावभर, अदरक का रस पावभ़र, मूली का रस पावभर, हर्रे का चूर्ण एक छटांक, भुनी हींग एक माशा डालकर पकायें। जब पक जाये तो छानकर पहले वाले काढ़े में मिला दें फिर शंख भस्म एक तोला, कौड़ी भस्म, खाने का सोडा 2-2 तोला मिलाकर बोतलों में भर लें। यह अर्क क्षुधा वर्द्धक, पेट शूल, अफारा, गुल्म, मंदाग्नि को समूल नष्ट कर देता है। इसमें तेजाब, गंधक भी 3 माशा मिला दें, यह अनुभूत है।

पेट दर्द पर लेप

1. मैनफल कुटकी मट्ठे में पीसकर गर्म-गर्म पेट में नाभि के ऊपर लेप करें। वायु शूल दूर हो जाते हैं।

2. रोगी की पीठ की रीढ़ में सरसों का तेल कुनकुना ऊपर से नीचे की तरफ को मलें। नीचे से ऊपर को नहीं, तो पेट दर्द शांत हो जाता है।

देवधारा अर्क

पिपरमेंट सत्त दस तोला, अजवायन सत एक तोला, कपूर एक तोला—सब शीशी में भर लें। दालचीनी तेल दस तोला मिला दें। काग बंद कर दें। यह देवधारा है। उदर शूल, सिर शूल, जहरीले कीड़ों के काटने में रामबाण है। उदर रोगों में बतासे में या पानी में 5 से 10 बूंद खायें। सिरशूल में सरसों के तेल में मिलाकर या घी में मिलाकर 3 बूंद लगायें। जहरीले जानवरों के कटे स्थान में फाहे में डुबोकर डंक के स्थान पर लगायें।

कुचिलादि वटी

1. हर्रे, सोंठ, पीपल, शुद्ध कोचिला, भुनी हींग, शुद्ध गंधक, सेंधा नमक, प्रत्येक 2-2 तोले लेकर नींबू के रस, आद के रस से घोंटकर 2-2 रत्ती की गोली बनायें। 1 वटी गर्म जल से खायें तो उदर शूल, वायु विकार नष्ट करता है।

2. नींबू के रस में कौड़ी भस्म डालकर पीयें तो उदर शूल दूर होती है।

3. गंधक का तेजाब एक तोला पानी में पांच-छः बूंद डालकर पीयें। आनन्द भैरव रस खायें। भयंकर उ़दर शूल नष्ट होते हैं।

4. हींग भुनी बड़े मटर के बराबर और आनन्द भैरव 1½ रत्ती गर्म पानी से खा लें। भयंकर दर्द को दूर कर देगा।

अम्ल-पित्त, हिचकी, अफारा, गुल्म प्रयोग

डेढ़ रत्ती आनन्द भैरव रस सुबह-शाम खायें तो अम्ल पित्त, खट्टी डकारें, अफारा, हिचकी बंद हो जाती है। अग्नि प्रदीप्त होती है।

अर्क दिष्टी

मदार के फूल पाव भर, मिर्च एक छटांक, सेंधा नमक टके भर, सज्जी क्षार एक तोला, सामर नमक एक तोला, सोचर नमक एक तोला, सोंठ एक तोला, शुद्ध जमाल गोटा एक तोला—सब पीसकर नींबू के रस, अदरक के रस में घोंटकर बेर बराबर वटी बनायें। भुनी हींग आठ आनेभर मिला दें, यह वटी असाध्य उदर शूल को मिटाती है। गुल्म-कुक्षि पीड़ा, मल बंध को दूर करने वाली है।

विजय चूर्ण

आंवला, हर्रे-बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, खुरासानी वच, हींग भुनी, सज्जी क्षार, जवाक्षार, पाढ़, दारु हल्दी, चाव चितावर, कुटकी, इन्द्र जौ, सौंफ, पिपरामूल, अजमोद, काला नमक, सेंधा नमक, सोचर नमक, कचलोना—सब एक-एक तोला लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनायें। यह 6 माशे गर्म जल से सेवन करें तो उदर शूल, अफारा, वायु गोला, मंदाग्नि, अतिसार सब उदर रोगों को हरण करने वाला है।

नारायण चूर्ण

आंवला, हर्रे-बहेड़ा, चाव, चितावर, सोंठ, मिर्च, पीपल, अजवायन, पोदकर मूल, पीपरामूल, सौंफ, वायविडंग, कचूर, काला जीरा, कूट, अजमोद श्वेत जीरा—सब एक-एक तोला लेकर कूटकर छान लें। इडोरन की जड़ 2 तोला निसोथ 3 तोला, दातुन की जड़ चार तोला कूट-छानकर

मिला दें फिर सेंधा नमक, सोचर् नमक, कच लोना 1-1 तोला, पीसकर मिला दें। 3 माशा से 6 माशा तक गर्म जल से सेवन करें तो उदर शूल, मंदाग्नि, अरुचि, मलदोष, आंव, वात, गले के रोग दूर हो जाते हैं।

सुलेमानी चूर्ण

भुना चौकिया, सोहागा, सौंफ, हर्रे, जवाखार, मिर्च, काला जीरा, श्वेत जीरा, तज, डोडा अनीसून, सोंठ, पीपर, अम्लवेत, काला नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक, कचलोना, सूखा पोदीना 2-2 तोला लेकर कूट छान लें। निसोदर 5 तोला पीसकर मिला दें। शीशी में बंद रखें। यह सुलेमानी चूर्ण 3 माशे गर्म जल से प्रातः-शाम सेवन करें, तो उदर के समस्त रोग—वायु शूल, अफारा, वायु गोला, मंदाग्नि को नष्ट करता है।

द्राक्षासव

दाख 1½ सेर में 20 सेर पानी, तज पत्रज, नाग केशर, इलायची, सोंठ, पीपली, लौंग, जायफल, चाव पिपरामूल, रेनुका, शीतल चीनी 4-4 तोला, शहद पावभर, धवई के फूल पावभर, काली मिर्च 4 तोला, प्रियंगु 4 तोला, वायविडंग 4 तोला—सब कूटकर मटकी में काढ़ा पका लें। दस सेर रहने पर गुड़ 2½ सेर डालकर मुंह बांध कर रख दें। 1 मास में छान कर बोतलों में भर लें। यह द्राक्षासव बल वर्द्धक, क्षुधा वर्द्धक, अरुचि, मंदाग्नि को दूर करता है।

उदर सुधा साल्ट

निसोदर 4 तोला, मिर्च 1 तोला, भुना जीरा, सोंठ, पीपल, तज, हर्रे-बहेड़ा, लौंग, आंवला, सज्जीक्षार, जवाक्षार, सौंफ एक तोला लेकर कूट-छान कर शीशी में रख लें। 3 मासे से 6 मासे रोज गर्म जल से खायें तो उदर विकार, शूल, मंदाग्नि, अरुचि, अजीर्ण, वायु कुपित होना आदि पेट के सर्व रोग विनाश करने वाला है।

जम्मीर आदि अर्क

नींबू का रस पावभर, अदरक का रस पावभर, मिर्च 3 मासे, सौंठ

3 मासे, पीपल 3 मासे डालकर हर्रे का चूर्ण एक छटांक डालकर पकायें फिर छानकर रख लें। 1 तोला नित्य सेवन करें। पानी से मंदाग्नि दूर करके क्षुधा बढ़ाने वाला है।

तारा मंडूर

वायविडंग, चाव, चितावर, सोंठ, मिर्च, पीपर, आंवला, हर्रे-बहेड़ा, सब एक-एक तोला लेकर चूर्ण करें। गुड़ दस तोला, मंडूर भस्म दस तोला, गौमूत्र सवा सेर, सब कड़ाही में पकायें। गाढ़ा होने पर 1 तोला नित्य सुबह-शाम खायें तो उदर शूल, अफारा, गुल्म, कामला, पांडू, आंव वात को नष्ट करने वाला है।

शंख वटी

नींबू का रस पाव भर, इमली की सूखी ऊपर की छाल की राख 1 छटांक, सेंधा नमक, सोचर नमक, काला नमक, सज्जीखार, जवाखार, कचलोना एक-एक तोला, भुनी हींग 1 तोला, शंख भस्म 3 तोला, सोंठ, मिर्च, पीपल एक-एक तोला, सीधिया विष 6 माशा, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक की कज्जली 2 तोला—सब को पीसकर छान लें। नींबू के रस में घोट कर गोली बेर प्रमाण बांधे। 1 गोली सुबह, 2 गोली शाम को गर्म जल से खायें। यह उदर शूल, वायु गोला, मिचली, अजीर्ण को नष्ट करती है।

जामुन का सिरका

पके हुए जामुन 1 घड़े भर दें। उसमें सेंधा नमक, समुद्री नमक, काला नमक, जवाखार आधा-आधा पाव डाल दें। फिर मिर्च, सोंठ, पीपल टके-टके भर, भुनी हींग, 1 तोला पीसकर घड़े में डाल दें। पन्द्रह दिन घड़ा बंद करके रख छोड़ें। बाद में सब दवा मसल कर छान लें। अर्क बोतलों में भर लें। यह उदर शूल, अफरा, अजीर्ण, भूख कम लगना, गुल्म, तिल्ली को नष्ट करने वाला है।

हिंग्वादि वटी

हींग भुनी 1 तोला, कवीला भुना 1 तोला, नौसादर 1 तोला, काली

मिर्च 1 तोला। सब पीसकर नींबू के रस से घोंटें। सोचर नमक 6 मासे डाल दें। 2-2 रत्ती की गोली बनायें। मात्रा 1 गोली प्रातः गर्म जल से तीन घंटे में खायें। उदर शूल के लिये यह एक अच्छा प्रयोग है।

प्राणेश्वर रस

शुद्ध पारा 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला को कड़ाही में डालकर कज्जली बनायें। फिर सज्जीखार, जवाखार, भुना सोहागा, सेंधा नमक, आंवला, हर्रे–बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल, इन्द्र जौ, श्वेत जीरा, काला जीरा, चित्रक, अजवाइन, हींग भुनी, वायविडंग, सोयाबीन के बीज सब 1-1 तोला लें। कूटकर चूर्ण करें। छान लें। यह चूर्ण 3 मासे से 6 माशे गर्म जल से सेवन करें। यह मंदाग्नि, अफारा, गुल्म, हिचकी, अरुचि, उदर शूल को नष्ट करने वाला है।

नवम अध्याय

प्लीहा, गुल्म, यकृत दोष योग

जम्मीर आदि द्रव

नींबू का रस 3 सेर घी वाले साफ बर्तन में भर दें। सेंधा नमक, सोचर नमक, काला नमक, सज्जीखार, ज़वाखार, अजवायन, सोंठ, पीपल, मिर्च एक-एक छटांक पीसकर इसमें डाल दें। लाहीर सरसों आधे पाव पीसकर डाल दें। अदरक का रस, मूली का रस एक-एक सेर डाल दें। हींग भुनी 1 तोला, कौड़ी भस्म 2 तोला, शंख भस्म 2 तोला, तेजाब गंधक 3 माशा डाल दें। 7 दिन तक मुंह बंद करके रख छोड़ें। बाद में छानकर बोतलों में भर लें। मात्रा 2 तोला जल से मिलाकर पीएं। यह समस्त उदर रोग, वायु जनित पीड़ा, गुल्म, तिल्ली, कोष्ठ, वर्द्धजा मंदाग्नि हृदय रोग नष्ट करने वाला है।

कुमार्यादि द्रव

कुमारी रस 3 सेर, आद का रस 1 सेर, नौसादर पौन सेर, सेंधा नमक, सोचर नमक, विडनोन, भुना सोहागा, सोडा खाने का, सज्जीखार, जवाखार यह एक-एक छटांक लेकर बर्तन में कूट कर सब भर दें। और गुड़ 3 पाव डालकर पकायें। एक घंटे में उतार लें। ज्यादा जलने ना पाए। छानकर बोतलों में भर लें। यह 1 तोला गर्म पानी में मिलाकर पीएं। उदर शूल, तिल्ली, गुल्म, अफारा को नष्ट करने वाला है।

प्लीहारि वटी

शुद्ध हीरा कसीस 1 तोला, हींग भुनी 6 माशा, एलुवा-रसौत नौसादर, हर्रे, पिपली, सोचर नमक 1-1 तोला। सब दवाओं को कूटकर पानी

में पीसकर बेर प्रमाण गोली बना लें। एक गोली प्रात:शाम को गर्म पानी से सेवन करें। इससे बढ़ी हुई तिल्ली कुछ दिनों में दूर हो जाती है।

प्लीहारि जड़ी

पत्थरचटा की जड़ 3 माशा, गुरिज 3 माशा, कुटकी 3 माशा, हर्रे 3 माशा, हल्दी एक तोला, आधे सेर पानी में पकायें। पौने सेर शेष रहने पर उतार कर छान लें। 2 तोला सेवन करें, शहद मिलाकर। इससे बड़ी से बड़ी तिल्ली पुरानी भी नष्ट हो जाती है। तेल, वादी वस्तुओं का परहेज करें।

वृहद मानकंदादि वटी

मानकंद चिरचिरा की राख, शालपर्ण, चितावर, सेंहुड़, सेंधा नमक, ताल जटा की राख, वायविडंग, हर्रे, चाव, खुरासानी, वच विडनोन, काला नमक, जवासा, पिपरी, सरसों की जड़, जीरा, हद की झाल, सब 4-4 तोला लेकर कूट लें। ढाई सेर गौ मूत्र में पकायें। चौथाई रहने पर पानी निकाल कर कड़ाही में डालें, फिर जीरा श्वेत और काला सोंठ, मिर्च, पीपल, भुनी हींग, अजवाइन, पुहकर मूल, कचूर निसोत, दातुन की जड़ें, इडोरन की जड़ें दो-दो तोला लेकर कूट-छानकर चूर्ण करें और उसी कड़ाही में पकायें। गाढ़ा होने पर 3 तीन माशे की गोली बना लें। सेवन करें। गर्म जल पियें। इससे प्रकृति तिल्ली, वायु गोला, अफारा, कामला, पांडु, हृदय-शूल, अरुचि, शोध जीर्ण, ज्वर, विशम ज्वर दूर हो जाते हैं।

प्लीहा नाशक प्रयोग

सरसों का का पंचांग (जड़-पते-पेड़-फूल-फल) सब को कूट कर चूर्ण बनायें। यह चूर्ण 2 तोला, मट्ठे के साथ प्रात:-शाम खायें। 21 दिन में प्लीहा ठीक हो जायेगा। तेल, खटाई, वादी वस्तु का परहेज करें।

प्लीहा की अचूक जड़ी

द्रोण पुष्पी, (गुमीठर्रा) के वृक्ष को शनिवार को सुपारी, धूप से

निमन्त्रण दें आयें। प्रातः कामना का नाम़ लेकर 3-4 जड़ें उखाड़ लावें। इसमें इतनी ही शहतरा की जड़ मिलाकर गंगाजल से पवित्र होकर घोंटकर पी जायें। दिन भर उपवास करें। शाम को साबूदाना, खिचड़ी, चावल, हलका पथ्य खायें। एक ही बार में तिल्ली नष्ट हो जायेगी। यदि पुरानी हो और शेष रह जाए तो 2-3 दिन खायें।

शंख द्राव अर्क

1. मदार, ढाक, थूहर, अमली, सेंहुड़, अमलतास (केलवार), चिरचिरा, तिल, कौड़ी, शंख, सबकी छाल एक-एक सेर लें। सुखाकर भस्म करें जिससे राख हो जायें। कौड़ी शंख भी भस्म कर डालें। सब राखें किसी मटके में पानी भर कर डाल दें। 3 दिन रखा रहने दें। रोज मथ दिया करें। चौथे दिन पानी ऊपर का निकाल लें। राख न आने पाये। इस पानी को कड़ाही में डालकर पकायें। जब सब पानी जल जाये तब कड़ाही में जो सफेद क्षार रह जाये निकाल लें। यह क्षार 10 तोला, पांचों नमक, पांचों क्षार सब 20 तोला हुए। शुद्ध गंधक 3 तोला, फिटकिरी, हीरा, कसीस, शोरा नौसादर 6-6 तोला पीसकर मिला दें। फिर सब दवाइयां नींबू के 1½ सेर रस में डाल दें। 3 दिन रखा रहने दें। बाद में डोला, यंत्र से अर्क निकाल लें। यह शंखद्राव है। कौड़ी शंख को गला देता है। यह उदर शूल, वायु गोला, तिल्ली, अजीर्ण, अम्ल, पित्त, उदर के सब रोगों को नष्ट कर देता है। मात्रा 10 बूंद पानी से दोनों वक्त पियें।

प्लीहारि अर्क

1. शंख भस्म 3 रत्ती, आठ आनेभर नींबू के रस से प्रातःशाम खायें तो तिल्ली व शूल को नष्ट कर देती है।

2. सहजन की छाल को एक सेर लेकर कूट डालें। चित्रक, सेंधा नमक, सोंठ, पीपल कूटकर एक-एक तोला पानी दस सेर में काढ़ा पकायें। जब 2½ सेर रह जाये उतार छानकर 2 तोला नित्य पलाश छार 2 रत्ती, जवाखार 2 रत्ती मिलाकर दोनों वक्त पियें। यह प्रवद्ध तिल्ली को नष्ट करने वाला अर्क है।

प्लीहारिवटी न. दो

शुद्ध पारा एक तोला, शुद्ध गंधक दो तोला कड़ाही में घोंट कज्जली बनायें। शुद्ध जमाल गोटा 5 तोला, मीठा तेलिया विष 2 तोला, आंवला, हर्रे-बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल एक-एक तोला पीसकर चूर्ण बनायें। कज्जली में मिलाकर टेसू फूल के रस से घोंट-घोंट कर एक-एक रत्ती की वटी बनायें। प्रात: और शाम एक-एक वटी शहद और अदरक के रस से खायें। यह उदर शूल, तिल्ली, गुल्म, उदावर्त, आंव, वात, अर्श सबको नष्ट करने वाली है। यदि दस्त ज्यादा आयें तो प्रात:काल खायें। खुराक भी कम कर दें।

वज्रक्षार चूर्ण

समुद्री नमक, कचलोना, जवाखार, काला नमक, चौकिया सोहागा, सेंधा नमक, सज्जीक्षार—सब एक-एक तोला लें। पीसकर आक के दूध में भिगोयें। सुखायें। धूदर के दूध में भिंगोकर सुखा लें। फिर आक के पत्तों के बीच रखकर हंडिया में भस्म करें। भस्म को निकाल कर सोंठ, मिर्च, पीपल, चित्रक, काला जीरा, श्वेत जीरा, आंवला, हर्रे-बहेड़ा, अजवाइन दो-दो तोले लेकर चूर्ण बना छानकर ऊपर के भस्म में मिला दें। नित्य 3 माशे से 6 माशे गर्म जल से सेवन करें। यह उदर रोग, शूल, गुल्म, तिल्ली को हरण करने वाला है।

लवणादि चूर्ण

सेंधा नमक, काला नमक, सोचर नमक, विडनोन, सज्जीखार, जवाखार, पापड़खार, सौंफ, सीवा के बीज, अजमोद, झाऊवेर, स्याह, जीरा, श्वेत जीरा, अजवाइन, मिर्च, पीपल-सोंठ, पिपरामूल, हुरहुर की जड़, कचूर चाव, वायविडंग, चित्रक, अम्लवेत, इमली की छाल, अनार का छिलका, निसोत, पुहकार मूल, देवदार, भारंगी, इडोरन की जड़, जमाल गोटा, शुद्ध—सब बराबर-बराबर तौल में लें। कूट-छानकर चूर्ण बना लें। अदरक के रस और नींबू के रस से भिंगो दें। सुखाकर 3 माशे से 6 माशा गर्म जल या मदिरा के संग सेवन करें तो तिल्ली, यकृति, शूल, अर्श, मंदाग्नि, हिचकी, कामला, पांडू रोग, आंव-ताव, सब को नष्ट करने वाला है। यह लवणादि चूर्ण है।

विद्याधर रस

पारा शुद्ध 1 तोला, गंधक शुद्ध 2 तोला की कज्जली बनायें। शुद्ध मैनसिल, हरताल भस्म, ताम्र भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म 1-1 तोला, पीपल सोंठ का चूर्ण पीसकर भस्म व कज्जली में मिला थूहर के दूध की 7 बार भावना देकर घोटते जायें। सुखाकर शीशी में रख लें। मात्रा 1 रत्ती अदरक के रस, शहद से सेवन करें। यह उदर के रोग, तिल्ली, वायु गोला, मल बंध, सब दोष, वायु-कफ को दूर करने वाला है।

महारोचक घृत

रोहिततृण, बेरी की जड़ सवा-सवा सेर, सोंठ, मिर्च, पीपल, आंवला, हर्रे, बहेड़ा, अजवाइन, तुम्बुद्ध, वायविडंग, काला नमक, सूखा अनार, देवदार, इंद्रायण की जड़, जवाखार, प्रहकर मूल, खुरासानी वच, झाऊ की जड़ 1-1 तोला लेकर 5 सेर पानी में काढ़ा बनायें। चौथाई रहने पर उतार लें। पानी छान लें। इसमें घी सवा सेर, भुनी हींग आठ आनेभर डालकर पकायें। जब पानी जल जायें सिर्फ घी रह जाये तो घी को रख लें। इसमें एक छंटांक घी नित्य सेवन करें। यह उदर के रोग, आंव, तिल्ली, यकृति, पांडु, कामला, सब दोषों को नष्ट करने वाला है। शक्कर के साथ सेवन करें।

गुल्म कुठार रस

शुद्ध पारा 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला लेकर कज्जली बनायें। फिर भुना चौकिया, सोहागा, आंवला, हर्रे-बहेड़ा, काली मिर्च, पीपल एक-एक तोला, चूर्ण बनाकर छान लें। हरताल भस्म 6 माशा, ताम्र भस्म 1 तोला, सीधिया विष शुद्ध 1 तोला, शुद्ध जमालगोटा 1 तोला—सब चूर्ण में मिलाकर घमिरा के रस की 3 भावना देकर घोंटें। फिर एक-एक रत्ती की गोली बांध लें। 1 गोली अदरक के रस और शहद से दोनों पहर सेवन करें तो उदर शूल, गुल्म, मंदाग्नि, अफारा, कुच्छि शूल, मलावरोध सबको दूर करने वाला यह गुल्म कुठार रस है। तेल, खटाई, वादी वस्तु का सेवन न करें।

गुल्म हर योग

1. कलमी शोरा 1 तोला, अदरक का रस 2 तोला मिला कर सेवन करें। रोग दूर हो जायेंगे।

2. सीप की भस्म 1 माशा, गुड़ से खायें तो गुल्म दूर हो जायेंगे।

प्लीहा नाशक अर्क

नींबू का रस एक सेर, अदरक का रस एक सेर, मूली का रस एक सेर, गौ मूत्र 1 सेर, नौसादर 1 छटांक, जवाखार 1 सेर, भुना सोहागा 1 छटांक, कौड़ी भस्म 1 छटांक, शंख भस्म 1 छटांक, सेंधा नमक 2 तोला, सोचर नमक 1 तोला, सज्जीखार 1 छटांक, पीपल 1 छटांक, मिर्च 1 छटांक, भुनी हींग 1 तोला। सब पीसकर रसों में डालकर पकायें। 2-3 उफान आने पर उतार कर मुंह बंद कर दें। यह औषधि मंदाग्नि, उदर शूल को हरण करके क्षुधा बढ़ाने वाल है।

तिल्ली शूल हर योग

नौसादर, फिटकिरी, कलमी शोरा, जवाखार, सोहागा बराबर-बराबर लेकर घी कुवांर का गूदा आधसेर—सब पीसकर नींबू के सवा सेर रस में डाल कर हंडी में डालकर नलियों द्वारा शराब की तरह अर्क खींच लें। अथवा हंडी में दूसरा बर्तन लटका कर ऊपर दूसरा हंडी मुख में रखकर आंटे से जोड़ बंद कर दें। ऊपर घड़े में पानी भर दें। चूल्हे में चढ़ाकर शराब की तरह पानी बदलते जायें। 3-4 बार बदलने पर सावधानी से ऊपर का हंड़ी निकाल कर भीतर लटके हुये बर्तन में जिससे अर्क होगा ठंडा होने पर निकाल लें। यह शंख द्राव अर्क है। पांच से दस बूंद पानी मिलाकर पीयें। इससे पेट का दर्द, अफारा, शूल, वायु गोला, तिल्ली, पेट के समस्त रोग नष्ट होते हैं। ऊपर के और यह दोनों योग उत्तम लाभकारी सिद्ध योग हैं।

दशम अध्याय

हिचकी के योग

मोर पंख के आगे का फूल जलाकर 1 पीपल पीसकर शहद के साथ चाटें, तो हिचकी दूर हो जाती है।

संजीवनी योग

संजीवनी वटी अथवा आनन्द भैरव रस 1 रत्ती से 1½ रत्ती प्रमाण लेकर शहद और अदरक के रस के साथ दिन-रात में 3-4 बार खायें। जब तक हिचकियां बंद न हो जायें तब तक खायें।

पेट का अफारा (डकारें आना) पर योग

सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्रे, आंवला, बहेड़ा, सेंधा नमक, सोचर नमक, अजमोद, हींग भुनी ½ तोलाभर सब दवा 2-2 तोले लेकर चूर्ण बनाकर 3 से 6 माशे गर्म जल से खाना खाने के बाद सेवन करें तो पेट का अफारा, हिचकी, मंदाग्नि को दूर करने वाला है।

शोधित हर्रे वटी

हर्रे 10 तोला मट्ठे में भिगो दें। जब फूल जायें तब पीस लें। इसमें सोंठ, पीपल, आंवला, बहेड़ा, अम्लवेत, सेंधा नमक, सोचर नमक, 1-1 तोले पीसकर चूर्ण बना लें। हर्रे में मिला दें, तेजाब, गंधक 15-20 बूंद मिला दें। जल से घोंटकर गोली बना लें। हर्रे ही के प्रमाण यह पेट के अफारा बदहजमी को मिटाने वाली है।

हिचकी नाशक योग

2 रत्ती हींग भूनकर ½ तोला अजवायन व सेंधा नमक से मिलाकर फांक लें। गर्म पानी पी लें तो पेट का अफारा, हिचकी मिट जाती है। पेट के कृमि दूर हो जाते हैं। अनुभूत योग है।

एकादश अध्याय

कृमि (कीड़ों के योग)

उत्पत्ति—कृमि की उत्पत्ति पुराने मल के संचय से होती है। वायु मल को संचित करती है। अतः इस रोग की दवा करने से पहले कोष्ठ शुद्ध अवश्य करें।

कुटकी, अमलतास, हर्रे, सेंधा नमक, प्रथम तीनों 1-1 तोले, नमक ½ तोलाभर पीसकर बेर के बराबर गोली बनाकर खायें। गर्म जल पीयें। इससे दस्त होकर पेट साफ हो जाता है।

कृमि नाशक वटी

1. कड़वा कूट, हर्रे, सोंठ, मिर्च, पीपल 1-1 तोला लेकर चूर्ण बना लें। फिर हींग भुनी आठ आने भर पीसकर मिला दें। कुकुरौंधा के रस से घोंटकर बेर प्रमाण गोली बना लें। प्रातःशाम एक-एक वटी जल से सेवन करें। सब पेट के कीड़े, दस्त से निकल जायेंगे।

2. कबीला, वायविडंग एक तोला पीस लें। 3-3 माशे गुड़ में मिलाकर खायें। गर्म पानी पियें तो कीड़े पेट में ही मर जायेंगे।

3. इडोरन के फल का गूदा निकाल-पीसकर पेट में लेप कर दें। इससे दस्त होकर कीड़े निकल जाते हैं। दो-तीन दिन प्रयोग करें।

4. इन्द्रायण (इडोरन) की जड़ें 6 माशा कूट-पीस लें। गुड़ में लपेट कर बेर प्रमाण वटी बनायें। एक-एक वटी गर्म जल से रोज खायें। सब कीड़े मरकर दस्त से निकल जायेंगे।

5. हींग भुनी, मिर्च, सोंठ, पीपल, वायविडंग 6-6 माशे घोंटकर चूर्ण बनावें। आद के रस से बेर प्रमाण वटी बनावें। गर्म जल से प्रातः शाम खायें। पहले थोड़ा गुड़ खा लें। बाद में दवा खायें। सब कीड़े पेट ही में मर जायेंगे।

6. सौंफ, सोंठ, हर्रे, सेंधा नमक एक-एक तोला, सनाय 4 तोला पीसकर चूर्ण बना छान लें। फिर हींग भुनी 1 तोला पीसकर मिला दें। 3 माशे गर्म जल से प्रातः-शाम खायें। पेट के कीड़े मरकर दस्त से निकल जायेंगे।

7. भुनी हींग, वायविडंग, हर्रे, सोचर नमक, निसोथ, पीपल, कबीला, बराबर ले चूर्ण बना लें। 3 माशे खायें। कीड़े दूर हो जायेंगे।

8. अजवाइन 3 माशा, हींग भुनी 2 रत्ती पीस लें। सेंधा नमक पिसा तीन माशा डालकर खा लें। गर्म पानी पियें। इससे पेट के कीड़े पेट ही में मर जाते हैं।

द्वादश अध्याय

छर्दि (वमन) प्रयोग

वमन, कै, वायु से और कभी-कभी पित्त से भी होती है। जब किसी कारण से गर्मी बढ़ जाये।

वायु की वमन के प्रयोग

1. आनन्द भैरव रस 1 रत्ती से 2 रत्ती तक शहद से दें। वायु की वमन बंद हो जायेगी। प्रातः-शाम खायें। यदि कॉलरा की कै होती हो प्यास भी लगती हो तो 3-3 घंटे में इसी मात्रा से 2 रत्ती दें। पानी नहीं दें। बंद हो जाएगी। दवा वमन होने के बाद दें ताकि दवा कै के कारण बाहर न आये।

2. इसी ऊपर की क्रिया से संजीवनी वटी, 2-3 वटी शहद से या प्याज के रस से दें। वमन शांत हो जाएगी। कॉलरा में भी 3-4 वटी का प्रयोग है। शहद से दें, पानी नहीं दें।

3. अर्क कपूर 5 से 10 बूंद बताशे या शक्कर से खायें। पानी नहीं पीयें। दो-तीन बार खायें।

कॉफूर अर्क बनाना

रेक्टीफाइड स्प्रिट एक छटांक, कपूर 1 तोला, एक शीशी में पीसकर भर दें। काग बंद कर दें। बस अर्क काफूर तैयार है। काम में लायें।

पित्त के वमन के प्रयोग

पहचान—पित्त की वमन पीली-कड़वी होती है।

1. शरबत में नींबू निचोड़ कर एक पाव पीयें। 2-3 बार पीने से कै बंद हो जाएगी।

2. अर्क पुदीना पानी में 10 बूंद शक़्कर मिलाकर पीने से वमन बंद हो जाती है।

3. एक इलायची के दाने, मलयगिरि चन्दन घिसा हुआ 1-2 माशा, मिश्री चार आने भर, पानी मिलाकर पीएं। वमन बंद हो जायेगी। 2-3 बार पीएं। यह एक खुराक है।

4. धनिया 3 माशा, सौंफ 3 माशे पीसकर छान लें। पानी में पीसे पाव भर पानी शक्कर डालकर पीयें। वमन बंद हो जायेगी। 2-3 बार पीएं।

5. प्रवाल भस्म या पिष्टी 3 रत्ती, इलायची के दाने 8-10 पीसकर शहद मिलाकर चाटें। 2-3 बार चाटने से वमन बंद हो जायेगी।

त्रयोदश अध्याय

कामला-आंव वात पांडू-शोथ के प्रयोग

व्याधि शार्दूल गुग्गुल

गुग्गुल शुद्ध 10 तोला, आंवला हर्रे, बहेड़ा 5-5 तोला, सब कूटकर सवा सेर पानी में पकायें। पांवभर रहने पर उतार लें। छान लें, फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, देवदार, वच, गंधक की कजली 1-1 तोला पीसकर मिला दें। अर्क में डालकर घोट दें। शुद्ध जमाल गोटा 5 तोला पीसकर डाल दें। घोंट दें। एक रत्ती की वटी बना लें। यही अर्क ज्यादा हो तो सब दवा अर्क कड़ाही में पका लें। गाढ़ा हो जाएगी। 1-1 वटी सुबह खायें। गर्म पानी पियें। दस्त होंगे, कामला, आंव, वात, पांडू, शूल, उदर रोग नष्ट होते हैं।

अजमोदादि चूर्ण

अजमोदा, पीपर, मिर्च, पिपरामूल, वायविरंग, देवदार, चितावर, सौंफ, सेंधा नमक 1-1 तोला, सोंठ 10 तोला, विधारा दस तोला, हर्रे 10 तोला, सब कूट पीसकर छान लें। यह चूर्ण 3 माशे गर्म जल से प्रातः शाम खायें तो उदर शूल, अफरा, कामला, पांडू, आंव वात, हिचकी, डकारें आना सब दूर होती है।

मूली अर्क

मूली की जड़, पत्ते सब पीस लें। अर्क निचोड़ लें। आधा सेर शक्कर 1 छटांक डालकर रोज पियें। 7 दिन में आंव वात, कामला, पांडू नष्ट हो जाता है।

पुर्नवादि क्वाथ

पथरचटा की जड़ें एक छटांक, नीम छाल, दारु हल्दी कूट, पटोल पत्र, सोंठ, गुरिज एक-एक छटांक कूटकर दस सेर पानी में काढ़ा बनायें। सवा सेर रहने पर उतारकर छान लें। बोतल में भर लें, 2 तोला रोज प्रातः पियें। यह अर्क उदर रोग, कामला, पांडू, शोथ, आंव, वात को नष्ट करता है।

आंव-वात-पीलिया छः घंटें में विनाश

कसैली लौकी के पत्तों का रस या लौकी के गूदे का रस हाथ की हथेली में लेकर 3-4 बूंद नाक से सुरक लें। दवा अंदर गई कि आंव वात, पीलिया का जहरीला पानी नाक से बहना शुरूं हो जाएगा। रोगी को आराम हो जाएगा। यदि नाक में जलन हो तो घी लगा दें। अंदर जलन शांत हो जाएगी।

आंव वात तिल्ली का अर्क

शुद्ध हीरा कसीस (भुना हुआ), एलुवा रसौत, नौसादर, जवाखार, सज्जीखार, भुना सोहागा, सोंठ, मिर्च, पीपल सब 1-1 तोला, सेंधा नमक, सोचर नमक 2-2 तोला—सब को कूट-पीस लें। नींबू का रस पावभर, अदरक का रस पावभर, मूली का रस आधा सेर, घी कुवांर का रस पावभर, निसोत 1 तोला, इन्द्रायण (इडोरन) की जड़ 2 तोला, दातुन की जड़ 2 तोला, भुनी हींग 1 तोला, शंख भस्म 1 तोला, शुद्ध गंधक एक तोला—सब दवा कूटकर दो सेर पानी में पकायें। जब आधा सेर बच जाये तो ऊपर जो नींबू-अदरक वगैरा के रस हैं उनको भी उसी में डाल दें। फिर पकायें, 2 घंटे में जब कुछ पानी और जल जाये, और हिस्सा अर्क रह जाये, तब उतार कर छान लें। बोतलों में भर दें। यह अर्क 2 तोला नित्य प्रातःशाम पान करें। इससे मल बंध, कामला, पांडु, आंव वात, मंदाग्नि, अफारा शूल, प्लीहा, यकृत दोष सब दूर होते हैं।

हरीतक्यादि वटी

हर्रे, सोंठ, मिर्च, पीपल, भुनी हींग, शुद्ध कोचिला, शुद्ध गंधक,

नौसादर, शुद्ध सोहागा, सेंधा नमक, शुद्ध जमाल गोटा, सब दवा कूट-पीसकर 1 तोले छान लें। जमाल गोटा पीसकर मिला दें। नींबू के रस से घोंटकर दो-दो रत्ती की गोली बनायें। जल गर्म कर 1 वटी प्रातः खायें। दस्त आयेंगे, इसके सेवन से आंव वात, कामला, पांडू, उदर शूल, अफारा, अरुचि, मंदाग्नि, वायु गोला सब दूर हो जाते हैं।

उदय भास्कर रस

शुद्ध पारा हिंगुल का 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला को घोंटकर कज्जली बनायें। फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, सेंधा नमक, सोचर नमक, काला नमक, भुना सोहागा, शुद्ध सींधिया विष एक-एक तोले पीसकर छान लें। शुद्ध जमाल गोटा 2 तोला पीसकर मिला दें। नींबू के रस से 1 रत्ती की गोली बनायें। 1 या 2 वटी जल से नित्य सेवन करें। दूध का सेवन करें, अन्न नहीं खायें। इससे आंव वात, कामला, पांडू दूर हो जाते हैं। उदर के समस्त रोग नष्ट होते हैं।

गुड़ गुटका

जबहि आंव उर में बढ़ जाये, तबहिं सोंठ गुड़ दे खाये।
जबहि अजीर्ण उपजै अंगा, पीपर गुड़ से कीजै भंगा।
मूत्र कृच्छ्र जब हो दुःखदाई, जीरौ गुड़ तब देय खवाई।
जबहि अर्श को जानो कोय, खाय हर्रे गुड़ करिये लोय॥

रसाभ्र मंडूर

शुद्ध पारा 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें। अभ्रक भस्म 2 तोला, मंडूर भस्म 4 तोला, हर्रे का चूर्ण 4 तोला, शिलाजीत 1 तोला, शुद्ध मीठा, तेलिया, लौह भस्म—एक-एक तोले सब मिलाकर अदरक के रस में घोंट दें। घमिरा के रस में घोंटें, फिर सोंठ, मिर्च, पीपर, आंवला, हर्रे-बहेड़ा, चाव-चितावर, नागर मोथा, छै-छै माशे लेकर कूट छान लें। इस चूर्ण में मानकंद, सूरनकंद के रस की भावना दें। पत्थर चटा के जड़ों का रस निकाल कर एक भावना दें। फिर सब दवा एक में मिलाकर घोंट दें। 4 रत्ती या कम ज्यादा खुराक बनाकर सेवन करें। इससे उदर के रोग—शूल, अफारा, गुल्म, प्लीहा, आंव वात,

कामला, पांडू, बवासीर—सर्व रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। पथ्य तेल, मिर्च, खटाई, मट्ठा, दही ना खायें। वादी वस्तुओं का परहेज करें।

ताप्यादि लोह

आंवला, हर्रे-बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल, चितावर, वायविडंग 1-1 तोला, नागर मोथा, पिपरामूल, देवदार, हल्दी, दारु हल्दी, दालचीनी, 6-6 माशे सब दवा कूट-पीसकर छान लें। शिलाजीत, स्वर्ण माक्षिक भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म 2-2 तोला डालकर चूर्ण में मिला दें। 5 तोला मंडूर भस्म मिला दें। आध पाव मिश्री की चासनी बनाकर कड़ी चूर्ण में डालकर पका लें। गाढ़ा होने पर बेर प्रमाण वटी बना लें। एक-एक वटी सुबह-शाम मूली के 2-2 तोला रस से या गौमूत्र से रोज सेवन करें। तेल, खटाई, वादी वस्तुओं का सेवन न करें तो उदर रोग, कामला, पांडू, प्रकृति प्लीहा, आंव वात, खून की कमी, शोथ, स्त्रियों के मासिक दोष सब ठीक होते हैं।

शोथारि मंडूर

मंडूर भस्म 7 तोला, गौमूत्र 5-6 तोला में पकायें। फिर पत्थरचटा की जड़ों का रस, मानकंद, आद, सूरन कंद का रस आधा सेर उसी मंडूर में डालकर पकायें। चाव-चितावर, सोंठ, मिर्च, पीपल, आंवला, हर्रे-बहेड़ा छै-छै माशा चूर्ण करके रख लें। मंडूर में मिलाकर पका लें। अभ्रक भस्म 2 तोला, लौह भस्म 2 तोला मिला दें। गाढ़ा होने पर उतारकर 3-3 रत्ती की वटी बनायें। प्रातः-शाम एक-एक वटी शहद से खायें। रासनादि काढ़ा 2 तोला पियें। यह आंव वात, कामला, पांडू, शोथ, उदर शोथ, मंदाग्नि को नष्ट करने वाला है। तेल, खटाई, वादी वस्तु, मट्ठा-दही का परहेज करें।

अभयादि हर्रे वटी

सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्रे, भुना चौकिया, सोहागा, 1-1 तोले लेकर पीस छान लें। शुद्ध जमालगोटा 4 तोला पीसकर मिला दें। थूहर के दूध से घोटकर 1-1 रत्ती की गोली बना लें। 1 वटी प्रातः गर्म जल से खायें। यह आंव वात, कामला, पांडू को नष्ट करती है।

लोहासव

शुद्ध लौह का चूर्ण रेती का रेता हुआ अथवा लौह भस्म 5 तोला, सोंठ, मिर्च, पीपल, आंवला, हर्रे-बहेड़ा, अजवाइन, वायविडंग, चित्रक, नागर मोथा 2-2 तोला लेकर कूट डालें। कूटकर पैंतीस सेर पानी में काढ़ा करें। आधा रहने पर गुड़ 5 सेर, शहद 1 सेर, घवा के फूल 1 सेर, लौह भस्म मिलाकर मटके का मुंह बंद कर दें। एक मास में खोलकर छान लें। बोतलों में भर दें। डेढ़ तोला से दो तोला जल से सेवन करें। यह रक्त की कमी, कामला, पांडू, अजीर्ण, मंदाग्नि को दूर करता है।

उदर शोथ अर्क

पत्थरचटा की जड़ें आधसेर, सोंठ आधपाव, देवदार आधपाव, हल्दी 1 छटांक, गौमूत्र ढाई छटांक में सब पीसकर पकायें। नीम छाल डेढ़ पाव कूटकर डाल दें। जब सवा सेर रह जाये तो उतारकर छान लें। दो तोला रोज सेवन करें साथ-ही-साथ सोंठ, मिर्च, पिपली एक-एक छटांक पीस लें। चूर्ण बना लें। 3 माशे गुड़ के साथ सेवन करें। अर्क खाना खाने के बाद पीयें। यह उदर शोथ, कामला, पांडू शूल, आंव वात को नष्ट करने वाला है।

नोटः—आंव वात, कामला, पांडू शोथ, अर्श, प्लीहा, उदर शूल में इतनी दवा खाना चाहिये कि जिसमें रोज दस्त आते रहें। क्योंकि इन रोगों में मल प्रधान है। यदि दस्त नहीं आयेंगे। मल साफ नहीं होंगे तो कोई दवा रोग नहीं नष्टकर सकती। इन रोगों की औषधि में गर्मी दस्तावर होने के योग हैं। वायु और मल की प्रधानता में ज्वर इत्यादि रोगों में भी यदि दवा से रोग न हटे तो दस्त करा कर मल निकाल देना चाहिये। यही रोगों के अनुभव हैं।

चर्तुदशो अध्याय

अतिसार प्रयोग

अतिसार वात और पित्त, दोनों दोषों से उत्पन्न होता है। वातस में पतले दस्त पानी के समान अनपचे कुछ मैले रंग के आते हैं। बदन में पीड़ा तथा कै भी होने लगती है। इसी वात से आम अतिसार भी पैदा होता है।

पित्ती अतीसार में पतले-पतले पीले रंग की दस्त हल्दी के समान होते हैं। इसमें भी प्यास लगती है।

इन्हीं अतिसार से बढ़कर ज्यादा प्यास लगने लगती है। कै बार-बार होने लगती है तो कॉलरा हो जाता है।

प्रयोग

इनके प्रयोग अलग-अलग हैं जो आगे लिखे गये हैं। वातस अतिसार आनन्द भैरव रस दो-दो रत्ती शहद से 2-3 बार खायें। 3-4 घंटे में पानी पीने को न दें। कै-दस्त प्यास बंद कर देगा। पित्तस अतिसार में शरबत में नींबू डाल कर पीयें तो बंद हो जाएगा।

आम अतिसार प्रयोग—श्रापरि योग

नोट—आंव की दवा यदि वात कफ से है तो वंधक पाचन देना चाहिये। यह श्वेत होती है। यदि रक्त मिली लाल आंव पड़ रही है तो यह पित्ती है। इसमें पहले ठंडी दवा देना चाहिये ताकि आंव श्वेत हो जायें फिर बंधक दवा दें।

1. रक्त अतिसार में ज्यादा-से-ज्यादा नींबू राल लगाकर दिन-रात में 5-6 बार चूसे। इससे आंव का रक्त बंद होकर श्वेत हो जाती है। कड़क भी कम होती है। खाने का पथ्य खिचड़ी, चावल, दूध-दही,

साबूदाना खाना चाहिये। गेहूं, चने से आंव तैयार होती है अतः पथ्य भी करें।

2. स्फटिक चूर्ण (लाल फिटकिरी) 3-3 रत्ती, 3 मुनक्कों के बीज निकाल कर भर दें। एक-एक मुनक्का सुबह-दोपहर-शाम खायें। इससे रक्त अतिसार बन्द हो जाता है।

3. सौंफ कच्ची व पक्की, सोंठ, हर्रे एक तोला लेकर चूर्ण बनायें। मिश्री से 3 माशा दिन-रात में चार बार खायें। नींबू, अफीम मिलाकर चूसे तो आंव बंद हो जाएगी।

अहिफेना सर्व

एक बोतल शराब में एक तोला अफीम, जायफल, नागर मोथा, इलायची एक-एक तोले पीसकर डाल दें। कॉर्क बंदकर दें। 15 दिन बाद छान लें। यह 10-15 बूंद जल से पियें तो अतिसार, कॉलरा के दस्त बंद कर देता है।

उशीरादि काढ़ा

1. सुगन्ध वाला नागर मोथा, धनिया, सोंठ, लाजवन्ती के बीज, धवा के फूल, लोध बेल का गूदा एक-एक तोला लेकर कूट डालें। 2½ सेर पानी में पकायें। डेढ़ पाव रहने पर उतार लें। खस आध पाव लेकर 2 सेर पानी में पकायें। एक सेर रहने पर उतार लें। बोतलों में भर लें। 2 तोला दिन-रात में चार बार पियें। आम अतिसार को नष्ट कर देता है।

2. अनार के छिलके सवा सेर दूध में पकायें। इस दूध को तीन-चार बार में पी लें। यह आमातिसार को बंद कर देता है।

बिल्वादि चूर्ण

1. सोंठ, लोध, राल, धवा के फूल, इन्द्र जौ, बेल का गूदा, मोचरस, आम की गुठली, कतीरा गोंद, धनिया, श्वेत जीरा, काला जीरा, एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनायें। 25 तोला शक्कर मिलाकर 3 माशे रोज जल से अथवा अर्क सौंफ से तीन-चार बार खायें। यह आमातिसार रक्तातिसार को बंद करता है।

2. अंड़ी का साफ तेल 2 तोला, ईसबगोल आठ आनेभर दूध के साथ पियें तो यह आंव को निकाल कर मरोड़ शांत करता है। शंख भस्म दो रत्ती, भुना सुहागा दो रत्ती, मिश्री या नींबू से तीन-चार बार खायें। आंव के दस्त बंद होंगे।

गंगाधर चूर्ण

1. नागर मोथा, सोना पाठा, मोचा रस, सोंठ, लोध, धवा के फूल, इन्द्र जौ, पाट, बेल का गूदा, अनार का छिलका, आम की गुठली, नेत्रवाला अतीस, मीठा लाजवन्ती के बीज एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनायें। तीन माशे से 6 माशे अर्क सौंफ के साथ 3 बार खायें। आंव व रक्तातिसार को बंद करें।

आमारि योग

1. चाव बनाकर घी मिलाकर पियें। आमातिसार बंद हो जायेगा। 3 बार पियें।

2. कुडा की छाल 2 तोला कूटकर आधा सेर पानी में काढ़ा बनाकर 10 तोला शेष रहने पर 2 तोला शहद या मिश्री मिलाकर 3 बार पियें। रक्त मिली आंव अथवा रक्त के दस्त बंद करता है। नींबू, रक्त अतिसार में बहुत लाभकारी है।

विजयादि चूर्ण

1. सोंठ, भंग, त्योखर, छुहारा, जायफल, मोचरस, बेल का गूदा, धवई के फूल, सौंफ, लाजवन्ती के बीज, आम की गुठली एक-एक तोला लेकर चूर्ण बना लें। 3 माशे से 6 माशे सौंफ या चावल के धोवन के साथ 3-4 बार खाने से आमातिसार को बंद करने वाला है।

आमारी योग

1. प्याज के रस में अफीम मिलाकर पियें। आंव तथा मरोड़ शांत हो जायेंगे। दाख 10, आम की गुठली की बीजी 2, अफीम एक आना भर पीस लें।

2. मय बीजों के 10 गोली बनायें, 3 गोली प्रातः-दोपहर-शाम ख़ायें। खिचड़ी-दूध, चावल का भोजन करें। आमातिसार को बंद कर देगी।

अन्य प्रयोग

1. भुनी लाल फिटकिरी, सोंठ, पीपल की राख 3-3 रत्ती मिश्री व दही से खायें। आंव मरोड़ सब शांत हो जायेगा।

2. सल्फा गोनोडीन की एक-एक टिकिया चार बार पानी से खायें। आंव को बंद कर देगा।

3. बबूल के पत्ते 2 तोला पीसकर शक्कर से पियें। आंव को बंद कर देगा।

4. हर्रे 4-5 घी में भूनकर मिश्री से तीन बार फांकें। आंव बंद कर देगा।

5. काला नमक मिलाकर खायें। 3-4 बार लाल फिटकिरी 3 रत्ती शक्कर से फांक लें, दूध पियें। आंव को बंद करेगा।

6. राल, फिटकिरी, संजरापता 6 माशे—प्रत्येक लेकर चूर्ण बनायें। एक आना भर मिश्री के साथ खायें। चौलाई का रस आधा पाव पियें। रक्तातिसार आंव के दस्त बंद होने के लिए नींबू चूसे। सिद्ध प्रयोग है।

आमातिसार से जो संग्रहणी हो उसका प्रयोग

गोद बबूल 5 तोला, हर्रे 10 तोला, पोस्ते की डोडी 5 तोला पीसकर घी में अलग-अलग भून लें। फिर मिलाकर पांव भर मिश्री मिलाकर पीस लें। प्रातः शाम एक-एक तोला खायें। मट्ठा पियें, दूध-चावल खायें। आंव से जो संग्रहणी हुई हो दूर करने वाला है।

पंचदशो अध्याय

काष्ठोदर योग

काष्ठोदर में पहले मल साफ करें फिर औषधि सेवन करें।

शुद्ध हीरा, कसीस, एलुवा, रसौत, नौसादर, जवाखार, सज्जीखार, भुना सोहागा, सेंधा नमक, सोचर नमक, काला नमक, सोंठ, मिर्च, पीपल, भुनी हींग एक-एक तोला पीसकर चूर्ण बनायें। शंख भस्म, सोडा खाने वाला 1-1 तोला लेकर चूर्ण में मिला दें। मूली का रस, कुमारी रस, अदरक का रस, नींबू का रस आधा सेर लेकर सब मिलाकर चूर्ण में डालकर पकायें। 2-3 उबाल आने पर उतार कर किसी मिट्टी के बर्तन में भरकर मुंह बांध दें। 15 दिन के बाद छानकर 2 तोला सुबह-शाम सेवन करने से काष्ठोदर दूर हो जायेंगे।

उदरामृत अर्क

पत्थरचटा की जड़ आधपाव, इंडोरन की जड़ें आधपाव, दातुन की जड़ें आधपाव, सोंठ आधपाव, हल्दी आधपाव, गौमूत्र सवा सेर, नीम की छाल आधपाव, मिर्च एक छटांक, पीपल एक छटांक, निसोत एक छटांक, सेंधा नमक, सोचर नमक, काला नमक, भुनी हींग एक-एक तोला लेकर सब कूटकर 4 सेर पानी में काढ़ा बनायें। 2 सेर रहने पर गौमूत्र डाल कर पकायें। जब सवा सेर रह जाये, छानकर बोतलों में भर लें। 2 तोला नित्य सेवन करें। तेल, खटाई वादी वस्तुओं का परहेज करें। उदर शोथ को नष्ट करने के लिये अमृत है। सिद्ध प्रयोग है।

जलोदर प्रयोग—जलोदरारि रस

1. शुद्ध गंधक 4 तोला, शुद्ध पारद 2 तोला। दोनों को मिलाकर कज्जली बनायें। शुद्ध मैनसिल, शुद्ध जमाल गोटा, आंवला, हर्रे-बहेड़ा,

सोंठ, मिर्च, पीपल, चित्रक सब दो-दो तोला लें। सब पीसकर चूर्ण बनाकर छान लें। कज्जली में मिलाकर धमिरा के रस, सेंहुड़ के रस की सात भावना देकर घोंट दें। 2-2 रत्ती की वटी बनायें। गर्म जल से खायें। मट्ठा, चावल का पथ्य रखना चाहिये। यदि ज्यादा दस्त आये तो दवा कम करके खायें।

2. पुराने सिरसा की काली-काली छाल एक छटांक, 1 सेर पानी में कूटकर काढ़ा पकायें। 10 तोला, आधा पाव रहने पर रोज प्रातः-शाम पियें। जलोदर नष्ट होता है।

जलोदरारि वटी

सहजन के बीज आधपाव लेकर चूर्ण करें। थूहर के दूध से घोंटकर वटी बेर के प्रमाण बनायें। प्रातः-शाम एक-एक वटी खायें चना की रोटी सहजन का शाक बिना नमक का खायें। जलोदर नष्ट हो जाता है।

वन्हि रस

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला घोंटकर कज्जली बनायें। फिर हल्दी, आंवला, हर्रे-बहेड़ा। शुद्ध मैनसिल एक-एक तोला, निसोत चित्रक, शुद्ध जमालगोटा डेढ़ तोला, सोंठ, मिर्च, पीपल, दातुन की जड़ दो तोला—सब का चूर्ण बनाकर अंडी के तेल, धमिरा के रस, सेंहुड़ के दूध, चितावर से इसकी सात-सात भावना देकर घोंटें। एक-एक रत्ती की वटी बनायें। मात्रा 1-1 वटी गर्म जल से खायें। पथ्य चावल, मट्ठे का भोजन करें। यह जलोदर को नष्ट करता है।

जलोदरारि रायता

थूहर की आधपाव कूटकर चटनी बनायें। पानी में उबालें। पक जाने पर पानी निचोड़ लें। पानी फेंक दें। चटनी को गाय के आध सेर दही में राई 1 तोला, सेंधा नमक 1 तोला, कलमी शोरा 2 रत्ती, नौसादर 2 रत्ती पीसकर दही में मिला दें। यह रायता, गेहूं की रोटी एक ही बार में खायें। फिर यदि भूख लगे तो दही-रोटी खायें। दूसरी चीज कुछ न खायें। दस्त आए तो रोटी बंद कर दें। खिचड़ी, सेंधा नमक डालकर खायें। दही के साथ सात दिन खायें फिर 2 दिन रायता खायें। 7 दिन

खिचड़ी दही खायें तो जलोदर नष्ट हो जाएगा। पेशाब से पानी निकल जाएगा।

संग्रहणी के प्रयोग

1. चाहे कितने ही दिन का अतिसार संग्रहणी हो, प्रथम अन्न छुड़ाकर फलाहार दूध या मट्ठा-दही खिलायें। फिर 1 तोला गूलर की पत्ती लेकर एक छटांक पानी में पीसकर पियें। दिन-रात में 3-4 बार इसके सेवन से संग्रहणी जो आमातिसार से हुई हो बंद हो जायेगी।

2. लोहे की कड़ाही में घी, शहद आधे पाव डाल दें। मिलावा (भेलमा) आधा पाव पीसकर लुगदी बनायें। उसी लुगदी में 2 तोला शुद्ध हिंगुल की गोली बनाकर अंदर दबाकर गोला बांध दें। उसी कड़ाही में डाल दें। नीचे से तेज आंच दें ताकि सब चीजें भस्म हो जायें। जब कड़ाही का जलना बंद हो जाए तब उतार लें। ठंडी होने पर भेलामा का गोला तोड़कर हिंगुल निकाल लें। इसे पीसकर शीशी में रख लें। यह भस्म एक-एक रत्ती दही के साथ लें। फिर यदि कुछ फायदा मालूम हो तो दो रत्ती रोज खायें। अन्न नहीं खायें। दही, मट्ठा, संतरा, अनार, सेब, मौसमी का सेवन नित्य करें। संग्रहणी को दूर कर देगी।

षष्टदशो अध्याय

कास स्वांस प्रयोग

सूचना—कास श्वास की चिकित्सा में प्रथम ऐसे प्रयोग करें कि कफ पक जायें। जब कफ पक जाता है, खांसी के द्वारा कफ निकलने लगता है। खांसी धीरे-धीरे बंद हो जाती है। यदि दवा सेवन करते-करते कफ कड़ा हो जाए तो प्रवाल भस्म, स्फटिक भस्म, फिटकिरी भस्म से कफ ढीला हो जाता है। परन्तु काफी देखभाल से यह प्रयोग करें, कहीं ऐसा न हो कि कफ फिर से पतला हो जाये, खांसी बढ़ जाये। ऐसी हालत में अभ्रक भस्म आधी रत्ती, प्रवाल भस्म आधी रत्ती मिलाकर शहद से लेने पर खांसी बंद हो जाएगी।

लवंगादि चूर्ण

लौंग, इलायची, खस, चन्दन, तज, सोंठ, पीपरामूल, जायफल, तगर, कंकोल, स्याह जीरा, शुद्ध गुग्गुल, पीपल, वंसलोचन, जटामासी, कमलगट्टा, नाग केशर नेत्रवाला, सब 1-1 तोला लेकर चूर्ण बना लें। कपूर उड़ाया हुआ, 6 माशा मिला दें। मात्रा 4 रत्ती से 6 रत्ती तक शहद से अथवा मिश्री से दोनों वक्त सेवन करें तो कास, हिचकी, अरुचि, अतिसार को मिटाने वाला है।

कफ केतु रस

शंख भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपल, चौकिया, सोहागा 1-1 तोला लेकर चूर्ण बनायें। फिर मीठा तेलिया शुद्ध 1 तोला पीसकर मिला दें। आद के रस से घोंट कर 1-1 रत्ती की गोली बनायें। शहद से 3 बार खायें। कास स्वांस को हरण करने वाला है।

पंच वक्र रस

हिंगुल का निकाला पारा 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें। फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, चौकिया सोहागा भुना, मीठा तेलिया विष 1-1 तोला पीसकर छानकर कज्जली में मिला धतूर के रस से घोट कर 1-1 रत्ती की गोली बना लें। शहद से 3 बार एक-एक वटी खायें। कास़, श्वास, हिचकी, उदर रोगों को नष्ट करने वाला है।

शीतोपलादि चूर्ण

तज 1 तोला, सोंठ 2 तोला, पीपल 3 तोला, वंशलोचन 4 तोला, इलायची 1 तोला—सब पीसकर चूर्ण बना लें। 3 रत्ती से 4 रत्ती तक शहद, मिश्री से सेवन करें तो कास, श्वास को नष्ट करें। घृत मिश्री से भी खाया जा सकता है।

शृंग भस्म

हिरन या बारह सिंगा के सींग लेकर छोटे-छोटे टुकड़े करके घी कुवांर के गूदे में लपेट कर दो कसोरों के बीच रखकर कपरौटी करके भट्ठी में रखकर फूंक दें। 1 घंटे में निकाल कर फिर घी कुवांर में घोंटकर दुबारा भस्म करें। यह शृंगराज भस्म है जो पीपल, शहद से 2 रत्ती खायें तो कफ पकाकर खांसी को दूर करें। यदि कफ कड़ा हो जाये तो मिश्री के साथ खायें तो कफ निक़लने लगेगा, खांसी नष्ट हो जायेगी।

ब्रह्मकप्फलादि चूर्ण

कैफरा, केकरा सिधी, पोहकर मूल, नागर मोथा, कुटकी, कचूर 1 तोला लेकर चूर्ण बनायें। यह चूर्ण 3 से 4 रत्ती तक शहद से खायें तो कास-श्वास क़ा कष्ट दूर हो जाता है। मिश्री के साथ भी खा सकते हैं।

गोदंती हरताल भस्म

हरसोंठ बाजार से लाकर धोकर साफ कर लें। फिर घीकुवांर के साथ पीसकर घोंट दें। सुखा कर दो कसोरों के बीच रखकर कपरौटी

करके भस्म कर दें। यह गोदंती हरताल भस्म है। 2 रत्ती से 3 रत्ती तक शहद से या मिश्री से खाने से तो ज्वर, कास, श्वास का रोग दूर हो जाता।

तालीसादि चूर्ण

तालीस 1 तोला, सोंठ 2 तोला, मिर्च 3 तोला, पीपल 4 तोला, वंशलोचन 5 तोला, तज 1 तोला—सभी को पीसकर, छानकर चूर्ण बना लें। 4-6 रत्ती तक प्रातः खायें तो ज्वर, कास, श्वास, हिचकी, पांडू रोग को नष्ट करने वाला है।

वांसा अवलेह

अरूस का रस 1 सेर, पीपल एक छटांक, घी आधपाव, शहद आध सेर, मिलाकर पकायें। गाढ़ा होने पर शक्कर आध सेर डालकर गाढ़ा अवलेह बना लें। 1 तोला से 2 तोला नित्य सेवन करें। सब प्रकार की खांसी, छई, रक्त मिला कफ निकलता हो सब दूर करने वाला है।

स्फटिक भस्म

फिटकिरी लाल एक छटांक पीसकर मदार के दूध में घोट कर सुखा लें। दो कसोरों के बीच रखकर भस्म कर दें। फिर धतूर के रस में घोंटकर सुखा लें। फिर भस्म करें। 2 आने भर अफीम मिलाकर फिर भस्म करें। यह स्फटिक भस्म कास, श्वास को नष्ट करती है। अनोपान पान के या आद के रस से 1 से 2 रत्ती शहद से खायें अथवा शहद ही से खायें।

काली खांसी प्रयोग

अफीम 1 माशा भर, मुलहठी सत 1 तोला, गोद बबूल 1 तोला, निशासता 1 तोला—सब घोंटकर मूंग के बराबर गोली बना लें। 1 से 2 वर्ष वाले को 1 वटी, 2 से 4 वर्ष वाले को 2 वटी, 4-8 वर्ष वाले को 3 गोली प्रातः-शाम जल से खिलायें। आवश्यकता समझें, 3 बार दें। यह काली खांसी, कुकर खांसी को नष्ट करत्ती है। यदि कफ कड़ा

हो तो प्रवाल भस्म आधी रत्ती से एक रत्ती शहद से दें तो खांसी से कफ झड़कर खांसी नष्ट हो जायेगी।

कासारि अर्क

अरूस का रस आध सेर, मिर्च एक तोला, मुलहठी का चूर्ण दो तोला डालकर पकायें। डेढ़ पाव रहने पर उतार लें। यह अर्क 6 माशे, शहद 6 माशे मिलाकर पियें तो खांसी, कफ, छई को जिसमें रक्त गिरता हो बंद कर देता है।

कास्पारि क्षार

कटेली अपामार्ग अरूस भस्म, पंचांग सब के एक-एक सेर कर तम्बाकू पावभर सब कूटकर भंड़िया में भरकर अदहरे में रख कर भस्म कर दें। यह भस्म से 8 गुना पानी मिला कर बर्तन में रख दें। 3 दिन के बाद पानी निकालकर कड़ाही में पकायें। जब सब पानी जल जाये तो कड़ाही में नीचे जो छार बचा रहे उसको शीशी में भर लें। यह क्षार 2 रत्ती शहद से खायें तो कास, श्वास को नष्ट करे। यदि गर्म करे, कफ सुखाये तो खुराक कम कर दें अथवा मिश्री के साथ खायें। खांसी नष्ट हो जायेगी।

सिद्ध प्रयोग

यदि खांसी दिन में कम, रात में ज्यादा आती है तो समझ लो वायु के प्रकोप से रात में ठंडी पाकर खांसी आती है। ऐसी हालत में आजमाई दवा आनन्द भैरव रस है, जो कफ को पकाकर निकालता है। धीरे-धीरे खांसी बंद हो जाती है। खांसी की उत्पत्ति जुकाम से होती है। अतः पहले ही इसकी रोकथाम करें। यदि जुकाम में खांसी आना शुरू हो, सूखी खांसी आ रही हो तो वह कफ सूखा नहीं है। कच्चा है। जो निकल नहीं पाता, पतला कफ है। तब डेढ़ रत्ती दवा 2-3 बार खाना शुरू करें। जब कफ 2 दिन में पक जाये, झड़ने लगे तब दवा ज्यादा ना खायें। एक रत्ती दो बार सुबह-शाम खायें। रात में भोजन खांसी वाले रोगी को नहीं करना चाहिये। दूध-घी भी नुकसान करते हैं। कफ बनता है, खांसी बढ़ती है। अतः तेल, खटाई का त्याग करना चाहिये।

खांसी बंद करने की क्रिया

जिस वक्त खांसी बहुत आती हो तो उस वक्त जिस नाक से स्वर चलता हो उसे फाहे से बंदकर दें या उसी करवट में नीचे करके पड़े रहें तो दूसरा स्वर चलने लगेगा। खांसी बंद हो जाएगी।

बच्चों की कुकर खांसी का प्रयोग

आक (मदार) के फूल भंड़िया में भरकर मुंह बंद करके कपड़ मिट्टी कर दें और भट्ठी में रखकर भस्म कर दें। यही भस्म शीशी में पीसकर रख लें। 2 रत्ती शहद से 3-4 बार दें तो कुछ दिन में खांसी बंद हो जायेगी।

नारियल के जटा की भस्म करके 2 रत्ती शहद से या जल से खायें। 2-3 बार में खांसी का वेग व खांसी दूर हो जाती है। किसी सफोरे में रखकर भस्म बनाना चाहिये।

सप्तदश अध्याय

स्वास प्रयोग

सूर्यावर्त रस

हिंगुलोत्थ पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें। अभ्रक भस्म 1 तोला, हरताल भस्म 1 तोला, ताम्र भस्म 1 तोला को मिलाकर धतूरे के रस से घोंटकर पखों में रखकर कपरौटी कर भस्म करें। यह भस्म 1 से 2 रत्ती शहद से खायें तो त्रिदोष ज्वर, कफ, श्वास, कास को समूल नष्ट करता है। यह अनुभूत योग है।

कनकासव

धतूर पंचाग (जड़-पेड़-पत्ते-फूल-फल) काट कर 16 तोला, इसी प्रकार अरूस पंचाग 16 तोला, मुलहठी, पीपल, कटेरी की जड़, नाग केशर, तालीस, सोंठ, भारंगी प्रत्येक का चूर्ण आठ तोला, धवा के फूल आठ तोला, मुनक्का आधपाव—सब को बीस सेर पानी में पकायें। गुड, ढाई सेर, शहद डाल दें। मुंह बंद करके रख दें। एक मास में खोलकर छान लें। यह कनकासव डेढ़ रत्ती से दो रत्ती प्रातः-शाम सेवन करें। तो श्वास को हरण करे।

श्वास चिंतामणि रस

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला, घोंटकर कज्जली बनायें। अभ्रक 1 तोला, हरताल भस्म 1 तोला, ताम्र भस्म 1 तोला, सोंठ, मिर्च, पीपल, चौकिया, सोहागा, भुना 1-1 तोला लें। चूर्ण करें, सब चीजें मिलाकर अदरक के रस से घोंट एक रत्ती की गोली बनायें। शहद से 1 वटी, बढ़े श्वास में दो वटी शहद से दें। यह त्रिदोष ज्वर, कफ, खांसी, श्वास को हरण करने वाला है।

एकड्रीन गोलियां

एकड्रीन वटी बाजार से लेकर 1 वटी सुबह-शाम खायें। श्वास को बंद करने वाला है।

नीला थोथा भस्म

2 तोला नीला थोथा, 1 तोला तूतिया को पीसकर 2 मुर्गी के अंडों का रस डाल-डालकर घोंटते रहें और घोंटकर उन्हीं अंडों में भर दें। दो परैयों में बंद कर कपरौटी करके अदहरे में रखकर पकायें। भस्म शीतल होने पर निकालकर पीस लें। 2 चावल भर श्वास वाले रोगी को दीजिये, पान के रस व शहद से दमा अवश्य दूर हो जायेगा।

श्वासारि भस्म

भटकटैया पंचांग आध सेर, पीपल की ऊपरी सूखी छाल पावभर, दोनों को सुखाकर पीस लें, फिर हंडिया में भरकर मुंह बंद करके कपरौटी कर दें। कंडों के अदहरे में रखकर भस्म कर दें। शीतल होने पर निकाल लें। जवान के लिये 1 तोला भस्म, आधपाव घी, आधपाव दही भस्म डालकर घी दही में फेट दें। श्वास वाले को जरा दौड़ा-चलाकर श्वास उखाड़ दें। यह दवा पिला दें तो श्वास को बंद कर देगी।

श्वास नाशक जड़ियां

1. चिड़चिड़ा की जड़ किसी लकड़ी से खोद लायें। लोहा ना छुआएं, सुखाकर पीस लें। यह चूर्ण आठ आनेभर शहद से खायें, श्वास रोग दूर हो जायेगा।

2. धतूर के फलों को मटके में भरकर भस्म कर दें। काली भस्म होगी, 2 रत्ती शहद से चाटें तो श्वास-कास का कष्ट दूर होगा।

संन्यासी योग

अर्जुन (श्रौहा) की छाल कूटकर चूर्ण बना लें। शरद पूर्णिमा के दिन उपवास करें, रात को दूध-चावल की खीर बना लें। रातभर चंद्रमा की रोशनी में रखें। जागते रहें। प्रातः 4 बजे उस खीर में 1 तोला चूर्ण

मि़लाकर खिलायें। सोयें नहीं। यह श्वास को बंद करने वाली है। य़ह चित्रकूट में भी बांटी जाती है।

अपामार्ग आसव

अपामार्ग (चिड़चिड़ा) 1 सेर, बेरी की छाल 1 सेर, अरूस पत्र 1 सेर, गुड़ 2 सेर, जवाखार एक छटांक, सज्जीखार एक छटांक, नौसादर आधपाव, सबको पीसकर सेर भर पानी में पकायें। पांच सेर रहने पर उतार लें। मुंह बंद करके 15 दिन रख छोड़ें फिर छानकर सेवन करें। 1½ से 2 तोला प्रतिदिन सेवन करें। शहद मिला कर कास-श्वास को नष्ट करने वाला है।

श्वास हरण योग

गाय के दूध एक सेर में आठ आनाभर शुद्ध शंखिया डाल दें और 3 मुर्गी के अंडे डाल कर पकायें। जब पक जाये, उतार कर अंडे निकाल लें, दूध को फेंक दें, अंडों को छीलकर अंदर का गूदा निकाल कर कतर डालें। सुखा लें, सूखने पर पीसकर शीशी में रख लें। एक चावल भर पान में रखकर खायें। श्वास को बंद कर देता है। दवा खाने के पहले दूध पी लें। मुनक्के डाल लें। फिर दवा खायें। खाली पेट दवा ना खायें।

शंखली रस

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें, फिर शंख भस्म 4 तोला, कौड़ी भस्म 6 तोला, मिर्च 6 तोला, शुद्ध सोहागा 3 माशे, सबको 4 माशे घी में घोंटें। यह रस 1 माशे मिश्री से खाने पर कफ रोग, क्षय रोग को नष्ट करने वाला है।

श्वास कुठार रस

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें। फिर मीठा तेलिया 1 तोला, पीपल सोंठ 1 एक तोला, मिर्च 10 तोला, शुद्ध मैनसिल भुना चौकिया सोहागा 1-1 तोला—सब पीसकर मिला दें। अदरक के रस से घोंट कर एक-एक रत्ती की गोली बांध लें। यह गोली 3 बार शहद से खायें। श्वास कास को बंद कर देता है।

वसंतकुसुमाकर रस

स्वर्ण भस्म 6 माशा, चांदी भस्म 6 माशा, वंग भस्म 9 माशा, शीशा भस्म 1 माशा, लौह भस्म 9 माशा, अभ्रक भस्म एक तोला, प्रवाल भस्म 1 तोला—सबको दूध, अरूस के रस, केले का रस, लाख के काढ़े से सात भावना देकर घोंटें। तीन माशा कस्तूरी डाल दें। कमल के रस की भावना देकर घोंट दें। एक से दो रत्ती की वटियां बना लें। यह रस एक रत्ती से दो रत्ती तक मधु से दूध मिश्री से खायें। यह क्षय रोग, निर्बलता, धातु विकार, कास, श्वास, उन्माद, प्रमेह, शीघ्र पतन, प्रमेह आदि सर्व रोगों को नष्ट करता है। कांति वर्धक, पुत्र उत्पत्ति का कारण बनता है। मधुमेह को मिटाता है।

अपामार्ग के सिद्ध गुण

शनिवार को स्नान करके लाल अपामार्ग चिड़चिड़ा के पेड़ को स्नान करायें। लाल चंदन लगा दें, धूप-दीप से पूजन करें। लाल धागा बांध दें। अपनी सर्व कामना सिद्धि का निमंत्रण दे आयें। प्रात: सूर्य उदय से पहले कुछ अंधेरे में ही हाथ से या लकड़ी से जड़ खोद ले आयें। चलकर पीछे की तरफ न देखें, रास्ते में किसी से बात न करें। इसको सदैव पास में रखें तो लाभ हो। स्त्री जड़ को उबाल कर पी ले तो गर्भवती हो जाये।

3. घिसकर कपाल में लगायें, वशीकरण हो।

4. यह जड़ जब प्रसव में पीड़ा हो, गर्भ रुका हो, बच्चा न होता हो तो योनि द्वार पर बांध दो, शीघ्र प्रसव हो जाएगा, दवा को छोड़ दे।

5. इस जड़ का चूर्ण आठ आनाभर शहद के साथ खाने से श्वास बंद हो जाएगा।

जुकाम के प्रयोग

1. जुकाम में हल्दी को पीसकर 6 माशा चूर्ण, गुड़ 6 माशा मिलाकर रात में खा लें। पानी नहीं पियें, तीन दिन के प्रयोग से जुकाम पक जायेगा, ठीक हो जाएगा।

2. 1½ रत्ती आनन्द भैरव रस सुबह-शाम शहद से खायें, जुकाम 3 दिन में पक जायेगा। अच्छा हो जायेगा। रात्रि में भोजन जुकाम, खांसी में न करें।

अष्टदश अध्याय

पर्वशूल योग

1. मीठा तेलिया, राई, हरताल, हींग, नौसादर, मैनसिल, लहसुन, खुरासानी, वच, एलुवा सब बराबर-बराबर पीसकर धतूरे के रस में घोंटकर गर्म-गर्म पसली पर लेप करें तो पसली का दर्द दूर हो। तारपीन के तेल में हींग मिलाकर पसली में मालिश करने से दर्द बंद होता है।

2. धतूरे का रस, मकुइया का रस, हींग, बारहसिंगा का सींग सब घिसकर पीस कर गर्म-गर्म पसली पर लेप करने से पसली का दर्द बंद हो।

3. दालचीनी पीसकर गर्म करें। अमृतधारा 1 बूंद मिलाकर लेप करें तो पसली दर्द बंद होता है।

4. स्प्रिट एक छटांक, शंखिया एक छटांक, सज्जीखार मिलाकर पसली में मालिश करें तो दर्द बंद होता है। पहले से सेंक करें।

5. स्प्रिट, हींग मिलाकर पसली में मालिश करें और पहले सेक करें तो दर्द बंद हो जायेगा।

6. एक कपड़े का टुकड़ा 4 अंगुल चौड़ा, 6 अंगुल लम्बा लेकर मुर्गी के अंडे के भीतर का रस लेप कर दें। उसके ऊपर अनबुझा चूना पीसकर बुरक दें, मिला दें। पसली में चिपका दें, यह प्लास्टर पसली दर्द को दूर करता है।

7. नीला थोथा शुद्ध 1 माशा, कंजा की बीजी 10—सब पीस लें। इडोरन के फल के गूदे में घोंट कर 2-2 रत्ती की गोली बांधें। गर्म जल से खायें, इससे ज्वर, पसली का दर्द, कब्ज सब दूर हो जाता है।

उन्नीसवां अध्याय

तपेदिक (मोती झरा योग)

वसंतमालती रस

वर्क सोना 6 माशा, मोती शुद्ध 1 तोला, शुद्ध ईंगुर 2 तोला, काली मिर्च 2 तोला, शुद्ध रस ख़परिया अथवा जस्ता भस्म 4 तोला—सब डालकर गाय के मक्खन में घोंट लें। फिर नींबू का रस डालकर घोंटें। जब चिकनाई दूर हो जाए, तब वटी बना लें। यह वसंत मालती रस है। अनुपान से तपेदिक, पुराने ज्वर को दूर करने वाला है। 1 रत्ती पीपल मधु से खायें अथवा इलायची के 5-6 दाने, मिश्री, मधु से खायें। इसी अनुपान से मोती झरा के ज्वर को भी शमन करने वाला है। पथ्य अन्न नहीं खायें। दूध, मुनक्का के साथ पकाया हुआ पिलायें।

टायफाइड (मोती झरा योग) मोती भस्म अथवा पिष्टी

मोती लेकर घी कुवांर के गूदे में घोंटकर गोला सरवा सम्पुट दो सकोरों के बीच रखकर भस्म कर लें। यह मोती भस्म है। फिर मोती को गुलाब के अर्क में घोंटकर सुखा लें, यह मोती पिष्टी है। अनुपान—मोती भस्म 1 रत्ती शहद के साथ खिलायें। यदि दाने न निकले हों तो पीपल मधु के साथ दें।

मोती की भस्म आधी रत्ती, अभ्रक आधी रत्ती दें तो दाने निकलकर ज्वर उतर जायेगा। फिर मोती की भस्म का सेवन करायें।

मुक्ता सीप की भी मोती की तरह भस्म व पिष्टी बनाई जाती है और खाने का अनुपान भी मोती ही के समान है। मोती झरा में दी जाती है।

2 रत्ती की खुराक है। गर्मी का बुख़ार, प्यास, दिल की धड़कन में इलाइची, मिश्री से 2-2 रत्ती देना चाहिये।

प्रवाल की शाखा पंसारियों से लेकर मोती ही के समान भस्म अथवा पिष्टी बना लें। इसकी भी खुराक 2 रत्ती है। इलायची, मिश्री से सेवन करें। पित्ती ज्वर, प्यास, दिल की हवल को दूर करने वाली है।

बीसवां अध्याय

सर्वांग वात रोग योग

महानारायण तेल

असगंध, गगरेन की छाल, बेल का गूदा, पाटला, कटेरी की जड़ें, नीम की छाल, आलू की छाल, पत्थरचटा की जड़, अरनी, खीप, सब टके-टके भर लेकर घोंटकर 20 सेर पानी में काढ़ा बना लें। 5 सेर रहने पर उतार लें फिर पावभर शतावर का चूर्ण कूटकर इलायची, वच सेंधा नमक, सोंठ, मिर्च, पीपल, देवदारु, सौंफ, इन्द्रायण की जड़, दातुन की जड़ें, 2-2 तोला लेकर चूर्ण बना लें। मदार का रस आध सेर, धतूरे का रस आध सेर, तिल का तेल 2 सेर—सब कड़ाही में डालकर पका लें। जब पानी जल जायें, तेल रह जाये, तब छानकर इस तेल की मालिश करें। सर्व वात पीड़ा, संधिवात, कमर-पीठ का दर्द नष्ट करने वाला महानारायण तेल है। इसके साथ-साथ योग राज गुग्गुल खाना आवश्यक है। यह अंदर से वायु दोष को शमन करता है।

योगराज गुग्गुल वटी

चितावर, पीपरामूल, अजवाइन, कलौजी, वायविडंग, अजमोद, श्वेत जीरा, काला जीरा, देवदार, चाव, इलायची, सेंधा नमक, कूट, भुनी हींग, रासना, गोखरू, खस, नागरमोथा, सोंठ, मिर्च, पीपल, तज, पत्रज, तालीस—सब दवा एक-एक तोला लेकर चूर्ण करें। सब के बराबर शुद्ध गुग्गुल मिलाकर त्रिफला के रस में घोंटकर बेर के बराबर वटी बना लें। जंगली बेर के प्रमाण प्रातःशाम सेवन करें। यह उदर रोग, गुल्म शूल, संधि पीड़ा, कमर, पीठ का दर्द नष्ट करने वाला है। इस प्रयोग में 1 तोला शुद्ध सीधिया 4 तोला मिला दें, घोंटकर गोली बना लें। अद्भुत चमत्कारी योग है।

वंगेश्वर रस

शुद्ध पारद 1 तोला, गंधक शुद्ध 2 तोला की कज्जली बनायें, फिर हरताल भस्म 1 तोला, बंग भस्म 2 तोला, मदार के दूध की 21 भावना देकर घोंट डालें। गोला बनाकर बालुका मंत्र से कड़ाही में भरकर आतशी शीशी में पकायें। सिद्ध होने पर निकाल लें, यह 1 रत्ती मधु, पीपर से प्रात:शाम खायें। यह सर्वांग वात पीड़ा, कटि शूल, उन्माद, क्षीणता, मंदाग्नि कुष्ठ को दूर करने वाला है।

प्रसारनी तेल

गंध प्रसारनी 5 सेर में 20 सेर पानी डालकर काढ़ा बनायें। 5 सेर रहने पर उतार लें। फिर पीपरामूल, मुलहठी, सेंधा नमक, चितावर, देवदार, रासना, राजपीपर, भेलामा, सौंफ, सोंठ, मिर्च, पीपर सवा-सवा तोला लेकर कूटकर काढ़े में डाल दें। कड़ाही में काढ़ा, दवाइयां, दूध चार सेर, तेल दो सेर, मट्ठा दो सेर सब मिलाकर पकायें। पानी जल जाने पर जब तेल ही रह जाये, सब छानकर बोतलों में भर लें। यह तेल मालिश करने से एकांग वात, संधिगत वात, सर्वांग वात, कुबड़ा, पंगुवा, जंघाकटि का वात सब निर्मूल नष्ट करने वाला सिद्ध तेल है। यह अनुभूत है। वात रोगों के तेलों के साथ-साथ योगराज गुगुल अवश्य सेवन करें।

मेथी पाक

मेथी आध सेर भूनकर पीस लें, ढाई सेर दूध में डालकर पकायें। जब खोया बन जाये तब सोंठ, पीपल, मिर्च, तज, पत्रज, जीरा, चित्रक, वंशलोचन, हर्र, नागर मोथा, अजमोदा, लौंग, इलायची, सब एक-एक तोला लेकर चूर्ण बना लें, छान लें, खोया में मिला दें। आधसेर घी में खोया पकायें, जब सुर्ख रंग का हो जाये, दूध का अंश जलकर रेती, सरीखा, दानादार हो जाये तब शक्कर सवा सेर में डेढ़ पाव पानी डालकर पका कर चासनी बनायें। इसी चासनी में पका हुआ खोया, अभ्रक भस्म, 6 माशा लौह भस्म एक माशा मिला दें। घी वाले बर्तन में भर लें। यह पाक एक छटांक दूध के साथ दोनों वक्त खायें तो वात पीड़ा, मंदाग्नि, संधिपीड़ा को नष्ट करता है।

रसनादि क्वाथ

अंडी के जड़ की छाल, अरूस, दुशलभा, कचूर, देवदार, वला, नागर मोथा, सोंठ, पीपल, अतीस, हर्र, गोखरू, अमलतास, सौंफ, धनिया, पत्थरचटा की जड़, असगंध, गुरिज, विधारा शतावर, वच, वायविडंग, पिपर वासा, कटेरी चाव सब दवा एक-एक तोला लेकर चूर्ण करें। 20 सेर पानी में काढा पकायें। 5 सेर पानी रहने पर उतार कर छान लें। 1½ से 2 तोला प्रातः-शाम सेवन करें तो सर्वांग वात, कटिशूल, पक्षाघात, हृदय-शूल, योनि-शूल को नष्ट करती है।

लहसुन योग

1. लहसुन छिले हुए 12 तोले, हींग 6 माशा पीसकर घी में भून ल। सुर्ख होने पर निकाल लें। फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, स्याह जीरा, सेंधा नमक, सोचर नमक, हर्रे 1-1 तोला लेकर पीसकर कपड़ छान चूर्ण करें। लहसुन के साथ मिलाकर आद के रस से घोंटें। बेर प्रमाण गोली बनायें। 1 गोली सुबह-शाम रास्नादि काढ़े के साथ सेवन करें तो सब प्रकार के वातज दर्द, उदर-शूल, मंदाग्नि, कटिशूल को नष्ट करने वाला है।

अन्य प्रयोग

1. स्प्रिट 1 बोतल, हींग 1 तोला, अफीम 6 माशा—यह सब स्प्रिट की बोतल में पीसकर भर दें। काग बंदकर दें, धूप में रख दें, 3 दिन में दवा तैयार है। इसकी मालिश वात पीड़ा में, पसली की पीड़ा में करें, सेंक करें, बदन के दर्दों में राम बाण है।

2. तारपीन तेल पावभर में 6 माशा कपूर मिलाकर धूप में रख दें। काग बंद रखें। इस तेल की मालिश बदन की पीड़ा में करें। सेंक करें तो वात के दर्द, सूजन को नष्ट कर देता है। यदि सूजन किसी अंग में ज्यादा है तो धतूरे के पत्ते में अंडी का तेल, सोंठ बुरक कर बांध दें। सूजन दूर हो जायेगी।

वातारि अर्क, लकवा पर

1. लहसुन के 20-25 बीज घी में भून लें। सूर्ख होने पर दूध आधा

सेर में पीसकर डाल दें। एक छटांक गुड़ मिला दें, पकाकर यह दूध दोनों वक्त पान करें तो सर्वांग वात पीड़ा, सूजन को नष्ट करने वाला है।

2. शुद्ध पारा 1 तोला, गंधक शुद्ध, आंवला सार 1 तोला, सब घोंटकर कज्जली बनायें। हरताल भस्म 1 तोला, अभ्रक भस्म 1 तोला, वच्छ नाग शुद्ध सिंधिया 1 तोला भर—सब पीसकर नींबू के रस में घोंटकर 1 रत्ती प्रमाण की गोली बनायें। प्रात:-शाम खाकर ऊपर से दूध बनाकर पियें। लकवा की उत्तम दवा है। अर्द्धांग को अच्छा करता है। मसारनी तेल गर्म करके मालिश करें, मांस खायें।

तिलस्मी तेल

सरसों का तेल 250 ग्राम में धतूरे का रस 250 ग्राम डालकर हींग चार आनेभर, लहसुन के बीज 10-15 पीसकर तेल में डाल दें। लाल रतन जोत 1 तोला डालकर पकायें। जब पानी जल जाये, तो छानकर बोतल में भर लें। इसमें तारपीन का तेल पावभर मिला दें। यह तेल कान दर्द, वात दर्द, झुन्नवाई, पसली दर्द को दूर करता है।

तारपीन तेल

तारपीन तेल बदन में दर्द होने पर मालिश करें तो दर्द बंद हो जाता है। कान के दर्द में 4-5 बूंद डालने से दर्द बंद कर देता है। कान की सनसनाहट, धूं-धूं होना बंद करता है। सिर के दर्द में सरसों के तेल में आधा तारपीन तेल डालकर लगायें तो सिर-दर्द बंद कर देता है। बिच्छू-बरैया के विष में काटे स्थान में सुई से खोदकर चुभा दें तो विष उतर जायेगा, सेक करें।

वातारि तेल

सरसों का तेल 10 छटांक, सोडा 1 तोला, शंखिया 3 माशा, धतूर के पत्तों का रस आध सेर, नीम के पत्तों का रस आध सेर, मंदार का रस आध सेर, जुंद वदेस्तर 1 तोला, दालचीनी आधपाव—सब कूटकर तेल रस मिलाकर कड़ाही में पकायें। जब पानी जल जाये, सिर्फ तेल ही रह जाये, तब छानकर इस्तेमाल करें। इसके लगाने से सर्वांग वात-पीड़ा, कटि-जंघा का वात, अर्द्धांग सब दूर होते हैं।

झुन्नवाई प्रयोग

कबूतर के रक्त की मालिश करने से झुन-झुन वाई दूर होती है।

अर्द्धांग लकवे में चूर्ण

सौंफ, सोंठ, अजमोद, वायविडंग, सेंधा नमक, देवदार, चीता, काली मिर्च, पीपरामूल, पीपल, हर्रे कूट—सब दवा 1-1 तोला लेकर चूर्ण बना, छानकर 3 माशे प्रातः खायें। इससे कोष्ठ शुद्ध होकर अर्द्धांग लकवा में लाभ होता है।

शतावरी तेल

शतावर गंगेरुवा, शालपर्णी, पृष्ट पर्णी, अंडी की जड़, असगंध छोटी बड़ी, कटेरी—सब 1-1 तोला लेकर चूर्ण करें। सौंफ, चंदन, जीवक, इलायची, दाख, शिलाजीत, मैदान करी, तगर, कूट, शतावर, सोंठ, जटामासी, ऋद्धि-वृद्धि, देवदारु, मिर्च, पीपल, दो-दो तोला लेकर चूर्ण करें। शतावर दस छटांक चूर्ण करें, तेल सरसों का डेढ़ सेर, दूध दो सेर—सब दवाइयां पहले दस सेर पानी में डाल कर पकायें। 2½ रहने पर उतार लें। यह काढ़ा तेल शतावर, दूध की कड़ाही में पकायें। जब पानी जल जाये तेल ही रह जाये तब छानकर सेवन करें। इसकी मालिश से कटि शूल, एकांग वात, सर्वांग वात, संधि पीड़ा, ज्वर सब नष्ट हो जाता है।

पीपल पाक

पीपल आध सेर लेकर चूर्ण करें, 5 सेर दूध में डालकर पका लें। खोया बनायें। 2 सेर घी में कड़ाही में पकायें। जब पककर रेती सरीखी हो जाय उतार लें फिर तज, पत्रज, इलायची, लौंग, जायपत्री, सोंठ, खस, चन्दन, नागमोथा, पीपल, चितावर, सिंघारा, आंवला, नाग केशर, मूसली, मिर्च, खरेटी, जीरा, जायफल, कंकोल, बहेरा, मोचरस, वंशलोचन, असगंध सब दवा 2-2 तोला लेकर कूट-छानकर उसी कड़ाही में डालकर मिला दें। शक्कर ढ़ाई सेर की चाशनी बनाकर उसी में मिला दें। पाक तैयार है। अब गरी, चिरौंजी, छुहारा, मखाना, पिस्ता, आध पाव लेकर मिला दें। केशर 3 माशे पीसकर मिला दें। अभ्रक भस्म, लौह भस्म, सोना

भस्म, मकवी भस्म 1-1 तोला मिला दें। यह पाक दूध से एक छटांक भर या कुछ कम ज्यादा तादाद से सेवन करें। यह वायु दोष, कफ दोष, कास-श्वास, मंदाग्नि, पांडू, आंव वात, सर्वांग वात पीड़ा को नष्ट करने वाला है।

विषगर्भ तेल

धतूरे की जड़, निंगुड़ी, कडुवी लौकी की जड़, अंडी की जड़, असगंध, पंवार के ब्रीज, सहजन चित्रक, काग लहरी, कलिहारी, नीम की छाल, बकाइन छाल, दशमूल, शतावर, मकुइया, कारस, गौरी रस, चिरायता, थूदर का रस, आक का रस, कनेर की जड़—यह एक-एक तोला लेकर काट डालें। 5 सेर पानी में काढ़ा बनायें। एक सेर रहने पर उतार लें। फिर तिल तेल एक सेर, अंडी का तेल आध सेर, सरसों का तेल आध सेर, गौमूत्र आध सेर डालकर कड़ाही में चूल्हे पर चढ़ा दें और सोंठ, मिर्च, पीपल, असगंध, रासना कूट, नागरमोथा, देवदार, बच, इन्द्र जौ, दोनों हल्दी, सेंधा नमक, सोचर नमक, जायफल, पारद, भारंगी, गंधक, पूदकर मूल, हरताल सीधिया, शिलाजीत, सब कूट कर चूर्ण करें। कड़ाही में डालकर पकायें। पकते-पकते जब सब पानी जल जाये और तेल ही रह जाये तब उतारकर बोतलों में भर लें। इसके मालिश से सर्व वात, कुरि, कटि, जंघा, संधि पीड़ा, सूजन, कर्णशूल गृद्धसी, हड़ कूटन, बदन के दर्द नष्ट होते हैं।

अर्धांग और लकवा के प्रयोग

कोचिला शुद्ध करके उसको जला दें। फिर ठंडा करके बराबर काली मिर्च डालकर पीसकर 1-1 रत्ती की वटी बनाकर सेवन करें। यह अर्द्धांग, कमर की पीड़ा, लकवा में गुणकारी है। पहले जुलाब लेकर मल साफ करके दवा खायें। कुटकी, मालकागनी, वावची सोंठ, सब दवा एक-एक तोला कूटकर पानी में भिगो दें। दूसरे दिन आध सेर पानी और डालकर काढ़ा करें। जब पावभर रह जाये तब उतार कर धतूरे के रस आध सेर में डाल तिल के तेल में पका लें। जब सब पानी जल जाये तो छानकर तेल निकाल लें। यह तेल शून्य अंगों में मालिश करें। भोजन पक्षियों का मांस यह अर्द्धांग और लकवा में गुणकारी है अथवा प्रसारनी तेल की मालिश करें।

गुग्गुल वटी

शुद्ध गुग्गुल एक छटांक, नीम की बीजी एक छटांक, हींग एक तोला, रसौत एक छटांक, सोंठ एक छटांक, सबको पीसकर 3 रत्ती की वटी बना रासनादि कोट से सेवन करें तो सर्व वात शूल, उदर शूल, रक्त विकार, मल बंध सब रोगों को समूल नष्ट करने वाली है।

च्वयनप्राश अवलेह

बेल की छाल, अशिमंथ, सोना पाठा, खंभारी, मुम्हपीर्ण, मास पर्ण, शालपर्ण, पृष्ठ पर्ण, पाउर की छाल, खरेटी, पीपल, गोखरू, कटेरी की जड़, नागरमोथा, पुनर्नवा (पत्थरचटा), की जड़, अरूस, लाल चन्दन, नीलोकर, बिहारी कंद, काक नासा, कोंच के बीज, शतावर, केकरा सिंधी, भूम आंवला, मुनक्का, जीवन्ती, कूट, हर्र, मेदा, मदा मेहा, काकोली क्षीर, काकाली ऋद्धि, वुद्धि, जीवक, कृष, भकल, कचूर, तज, नाग केशर, ब्राम्ही, संख पुष्पी, कमल फूल। यह सब दवा एक-एक तोला लेकर चूर्ण बना लें। छान लें, फिर इलायची, सत गुरिज, पीपल, शीतल, चीनी, वंशलोचन 4-4 तोला लेकर चूर्ण बना छान लें। केशर 6 माशा पहला चूर्ण 2½ सेर पानी डालकर पकायें। 3 पावभर रहने पर उतार लें। फिर यह काढ़ा और दूसरा चूर्ण केशर में मिला दें। फिर 550 आंवलों की गुठली निकाल कर कूटें और पीसकर पीठी बना लें। यह भी उसी में मिला दें फिर घी 10 छटांक कड़ाही में डालें, शहद पावभर, मिश्री सवा सेर की चासनी बनाकर मिला दें। पहले पका लें घी में फिर चाशनी में डाले। यह सब वायु कफ के दोष, कास, श्वास, मंदाग्नि, उदर रोग, आंव वात, गुल्म को नष्ट करने वाली रसायन है। मात्रा 6 माशे दूध के साथ नित्य सेवन करें। यदि गर्मी करे तो खुराक कम करके खायें।

आजमोदा प्रयोग

यदि बदन में दर्द होता हो, गठिया, वात कमर, कूलों में दर्द बना रहता हो तो आनन्द भैरव रस नियम बांधकर दोनों पहर डेढ़-डेढ़ रत्ती सेवन करें। प्रसारनी तेल की मालिश करें। हर प्रकार के वात को समूल नष्ट कर देता है। सिद्ध प्रयोग है।

वात हरण तेल

भेलमा 40, धतूरे आक के रस पाव-पाव भर, मीठा तेलिया 6 माशा, सरसों का तेल पावभर डालकर पकायें। सिद्ध होने पर उतार लें। यह तेल सर्वांग वात पीड़ा को नष्ट करता है।

कुचिलादि वटी

1. जावित्री, लौंग, जायफल, सोंठ, मिर्च, पीपल, अकर करा 1-1 तोला लेकर चूर्ण बनायें। शुद्ध कोचिला चूर्ण 2 तोला, सीधिया छह माशा पीसकर चूर्ण में डाल दें। इन्द्रायण के रस की 21 भावना देकर अफीम छह माशा, केसर तीन माशा, डालकर घोंटें। एक-एक रत्ती की वटी बनायें। प्रात:-शाम दूध से सेवन करें। सर्वांग वात पीड़ा, अर्द्धांग, वात-कटि जंघा, संधि वात पीड़ा, विषम ज्वर—सबको समूल नष्ट करने वाली है। वात के प्रयोगों में दवा खाने से पहले कोष्ठ शुद्धि करना जरूरी है। तब पूर्ण लाभ होता है।

2. माल कांगनी, रतन जोत, पीपल, तीन माशे, स्याह मूसली 1 तोला, सोंठ आठ आनेभर, शुद्ध जमाल गोटा आठ आनेभर, नीम के रस में घोंटकर एक-एक रत्ती की वटी बना लें। 2 गोली रोज खायें। यह लकवा, अर्द्धांग पर लाभदायक है और सोंठ एक तोला, लहसुन एक तोला पीसकर भंड़िया में भर दें। नीम के पत्ते पत्थरचटा, शंखिया की पत्ती पावभर, दो सेर पानी में पकायें। यह रस पकी ईटों में छिड़क कर खटेरी चारपाई में रोगी को लिटाकर स्वेदन करायें। ऊपर से रोगी को कपड़े से ढक दें, पसीना निकलेगा, रक्त का संचालन होगा। भोजन में पक्षियों का मांस सेवन करें।

इक्कीसवां अध्याय

वात रक्त दोष (रक्त विकार)

कुष्ठ प्रयोग

हरताल भस्म 1 रत्ती, मंजीष्ठादि काठे के साथ दें। प्रातः-शाम तो बदन के बिगड़े रक्त को स्वच्छ करके कुष्ठ श्वेत चकतेषि सर्प, छाजन, खुजली, रक्त विकार से बदन में फुंसी, दानों का पड़ना सब नष्ट हो जाते हैं। नमक, तेल, खटाई, वादी चीजों का परहेज करें। ककत चना, गेहूं चना, घी, दूध, फिकी दरिया खा सकता है। यह रोग वर्षों के प्रयोग से नष्ट होता है। यदि रोग से निर्मूल होना है तो विश्वास से धैर्य पूर्वक दवा सेवन करें। शिव-आराधना करें, सब कुष्ठ अच्छे होते हैं।

कुष्ठ पर लेप

1. मूली के बीज 4 तोला पीसकर एक छटांक सिरके में कांच के बर्तन में डालें। 1 माशा शंखिया पीसकर डाल दें। रात को ओस में रख दें। बस दवा तैयार है। यह लेप रात को जब रोगी सोता है तब दागों पर लगायें तो श्वेत कुष्ठ का दाग नष्ट हो जाता है।

2. हरताल, मैनसिल, चित्रक घमिरा, हल्दी पीसकर पानी से गोली बांध लें। गोमूत्र से घिसकर श्वेत दागों में लेप करें। श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जायेगा।

गलित कुष्ठ प्रयोग

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला की कज्जली बनायें। ताम्र भस्म 1 तोला, अभ्रक भस्म 1 तोला, हरताल तवकी भस्म 1 तोला, लौह भस्म 1 तोला, शिलाजीत 1 तोला, शुद्ध कोचिला चूर्ण 1 तोला। सब मिलाकर घमिरा के रस की 1 भावना देकर घोंटें फिर चित्रक वच 1 तोला, वकुची

1 तोला, शुद्ध मैनसिल पीसकर मिला दें। 2-2 रत्ती की वटी बनायें। 2 रत्ती में यदि गर्मी करे तो डेढ़ रत्ती दवा खायें। शहद से खाना खाने के बाद मंजिष्ठादि काढ़ा दोनों पहर सेवन करें। घाव व्रण हो तो नीचे लिखे दोनों प्रयोगों में किसी एक को करें। नीम के अथवा कार्बोनिक साबुन से सफाई करें। मिरचादि तेल लगायें। इसके प्रयोग से श्वेत कुष्ठ, गलित कुष्ठ, चकत्ते मंडल, जहर वात, बदन की फुंसियां, खुजली सब चर्म रोग नष्ट हो जायेंगे। नमक, तेल, खटाई, वादी वस्तुओं का परित्याग करें। लाल मिर्च के बदले काली मिर्च का सेवन करें। धूप में रहना मना है। परिश्रम ज्यादा न करें। शिव आराधना करें। यह मेरा आजमाया प्रयोग है। गलित कुष्ठ का उत्तम प्रयोग है। पथ्य चना, गेहूं, घी, दूध इसके सिवा कुछ ना खायें।

घावों पर मरहम

सोहागा, फिटकिरी, मुरदा संख, नैनिया गंधक, तूतिया राल, यह सब पीसकर घमिरा के रस, सरसों के तेल में घोंट दें। मरहम तैयार हो गया। घावों को अच्छा कर देता है। इसमें कपूर भी पीसकर चार आने भर मिला दें, वकुची तेल आठ आनाभर अथवा वकुची बीज एक तोला पीसकर मिला दें। यह कुष्ठ के घाव, जहर, वात को ठीक करता है।

चाल मोगरा तेल

1. सवेरे-शाम 5-5 बूंद, चाल मोगरा तेल गाय के मक्खन या मलाई में मिलाकर खायें। हर पांचवे दिन 5 बूंद बढ़ाते जायें अर्थात 1 बूंद नित्य बढ़ाते जाएं जहां तक रोगी बरदाश्त करे। जब दवा बरदाश्त नहीं होती तब मिचली आने लगती है तब मात्रा कम करके सेवन करें। जब तक रोग अच्छा न हो, तब तक दवा का सेवन करें। खटाई, तेल, नमक का परित्याग करें। भोजन में गेहूं, चना, घी, दूध का सेवन करें।

2. गलित कुष्ठ के घावों को नीम के पानी, कार्बोनिक साबुन से धोकर एक पट्टी या कई पुटियां चाल मोगरा तेल में तर करके चिपका दें। फौरन घाव भर जायेंगे।

3. चाल मोगरा तेल छः माशा, वकुची तेल एक तोला, मक्खन एक तोला सब मिलाकर खाज-खुजली में लगायें। फौरन ठीक हो जायेगी।

गलित कुष्ठ चकते पड़ने पर

पारद शुद्ध 1 तोला, गंधक शुद्ध 2 तोला की कज्जली बनायें फिर ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, हरताल, वर्की भस्म, लौह भस्म, मिर्च, चित्रक वच, वकुची, हल्दी 6-6 माशे पीसकर धमिरा के रस से घोंटकर एक रत्ती की वटी बनायें। प्रात:शाम शहद से खायें। खाना खाने के बाद मंजिष्ठादि काढ़ा पियें। चना, गेहूं का भोजन करें। दूध, घी का सेवन करें। तेल, नमक, खटाई वादी चीजों का परहेज करें। यह श्वेत कुष्ठ गलित कुष्ठ को निर्मूल करता है। अंगों की सड़न, घाव ठीक हो जाते हैं।

होठों के श्वेत कुष्ठ पर

गन्धक, लाल चीता की जड़, हरताल, त्रिफला सब बराबर लेकर जल से या धमीरा के रस में घोंटकर गोली बनायें। इसका लेप रोज दाग पर करें, कुष्ठ अच्छा हो जायेगा।

श्वेत कुष्ठ कोई कुष्ठ नहीं है। चर्मरोग का दाग है। इसमें (वावची) वकुची बीज बड़े दाने वाली पीसकर चूर्ण दस तोला बना लें। तीन मासा दोनों वक्त खायें। यदि गर्म करें तो एक ही बार खायें। पानी पियें साथ ही नीचे लिखा नं. 3 का लेप करें। दाग नष्ट हो जायेंगे।

श्वेत कुष्ठ पर लेप

1. पारद गंधक, मैनसिल, छः माशा सिन्दूर, हल्दी, दारू हल्दी एक-एक तोला, हरताल छः माशा, वकुची छः माशा सब कच्ची वस्तुएं लेकर घोंटकर घी में घोंटकर दागों में लेप करें, श्वेत कुष्ठ दूर होता है।

श्वेत कुष्ठ पर आजमूदा लेप

1. तूतिया, सोहागा, गंधक 1-1 तोला, वावची 1 छंटांक पीसकर चूर्ण करें घमिरा के रस में लगायें। श्वेत कुष्ठ नष्ट होता है।

वावची चूर्ण गोमूत्र में पीसकर दागों पर लगायें जलन होने पर घबरायें नहीं। छोटे-छोटे दाने पड़कर कुष्ठ को गला कर चमड़े का रंग बदल देगा। कुष्ठ दूर हो जायेगा। नीम के पानी से धोकर मक्खन लगा दें। जलन दूर होगी।

लंकेश्वर रस तथा अर्क

रस सिन्दूर, अभ्रक, ताम्र भस्म, गंधक, आंवला सार, शुद्ध हरताल, तबकी भस्म, शिलाजीत, अम्लवेत चूर्ण एक-एक तोला लेकर 1 तोला भर घी, 2½ तोला भर शहद में 3 दिन घोंटें। एक-एक रत्ती की वटी बनायें। नित्य प्रात:-शाम सेवन करें। दोपहर रात में नीचे लिखा काढ़ा सेवन करें।

त्रिफला डेढ़ पाव, नीम छाल आधपाव, मजीठ आधपाव, वच आधपाव, पाटला आधपाव, (पाटल की जड़), कुटकी आधपाव, हल्दी आधपाव सब कूटकर दरदरा चूर्ण करें। सोंठ, मिर्च, पीपर, दो-दो तोला पीसकर डाल दें। 5 सेर पानी में पकायें। 2 सेर रहने पर छानकर सेवन करें। यह रक्त शोधक है।

हरिद्रा तेल

हल्दी आधपाव, घमिरा आधपाव के रस में पीस लें। फिर सरसों के आधपाव तेल में पकायें। जब हल्दी जलने लगे तब उतार लें। इस तेल घी की निरंतर मालिश से श्वेत कुष्ठ के दाग ठीक हो जाते हैं।

वकाइन योग

वकाइन फल 2 सेर लायें। इसमें से 1 सेर कूट कर 8 सेर पानी में काढ़ा बनायें। 1 सेर रहने पर उतार लें फिर बाकी फलों को कूटकर चूर्ण करें। 1 तोला चूर्ण खाकर एक छटांक काढ़ा नित्य पियें। 21 दिन में रक्त विकार, कुष्ठ रोग ठीक हो जायेगा। पथ्य गेहूं, चना का भोजन करें। नमक, तेल, खटाई का परहेज करें।

चर्म रोगों पर तेल

वकुची, हल्दी, दारू हल्दी, अमलतास, कूट, कंजा, पंवार के बीज, मिर्च एक-एक तोला लेकर कूट डालें। 2½ सेर पानी में काढ़ा करें। 10 छटांक रहने पर सरसों का तेल काढ़ा कड़ाही में पकायें। घमिरा का रस सभी डाल दें। पानी जब सब ज़ल जायें, तेल ही रह जाये तब खाज-खुजली, अपरस, छाजन में लगायें, लाभ होगा।

पंचामृत कुष्ठ कुठार रस

तूतिया, सोहागा, गंधक, पारा, हल्दी का चूर्ण, घमिरा के रस में घोंटकर श्वेत दागों में रोज लेप करें। श्वेत कुष्ठ अच्छा हो। पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला, शुद्ध कज्जली बनायें। हरताल भस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म एक-एक तोला लेकर मिर्च आठ आनेभर, चित्रक आठ आनेभर, वकुची आठ आनेभर, हल्दी भुनी आठ आनेभर— सब चीजों को नीम के रस की घमिरा रस की सात-सात भावना देकर एक-एक रत्ती की वटी बनाकर नित्य प्रातः-शाम खायें। सब प्रकार के रक्त विकार, श्वेत कुष्ठ, गलित कुष्ठ, चकत्ते पड़ना, घाव होना, अंगों का झड़ना, सब व्याधियां नष्ट करने वाला कुष्ठ कुठार रस है। पथ्य फीकी चने, गेहूं-चने की रोटी खायें। नमक, तेल, खटाई का परित्याग, वादी वस्तुओं का परित्याग करें।

श्वेत कुष्ठ पर लेप

1. हल्दी, आक के जड़ की छाल, वावची बराबर लेकर घमिरा के रस से घोंटकर श्वेत दागों में मलें। लेप कर दें तो कुष्ठ के श्वेत दाग ठीक हो जाते हैं।

2. सोहागा, कचिया, ईंगुर, पीसकर नींबू के रस से घोंट कर श्वेत कुष्ठ के दागों में लेप करें। श्वेत दाग नष्ट हो जायेंगे।

3. हल्दी एक छटांक, वाकची के बीज एक छटांक, पीसकर 2 सेर पानी में पकायें। आधे सेर रहने पर पौन पाव सरसों का तेल डालकर पकायें। पानी जल जाने पर तेल दागों में लगायें। श्वेत दाग नष्ट हो जायेंगे।

हरिद्रा खंड अवलेह

हल्दी 10 छटांक, कूटकर चूर्ण कर छान लें। 4 सेर दूध में पकायें। खोया होने पर उतार लें। सोंठ, पीपल, तज, कमज मिर्च, चाव, वायविडंग, नाग केशर, निसोत, त्रिफला, नागर मोथा, देवदार, चित्रक—सब टके-टके भर लेकर चूर्ण करें। छान लें, फिर घी 1 सेर कड़ाही में डालकर खोया को पकायें। जब सुर्ख दानेदार हो जायें तब चूर्ण उसी में डालकर मिला दें। अब मिश्री 1½ सेर की चाशनी बनाकर दवा चाशनी में डाल

दें। यह पाक एक छटांक से आध पाव तक दूध के साथ खायें तो सब प्रकार के रक्त विकार, खाज, खुजली, कुष्ठ अच्छे होते हैं।

अमृत भल्लातक योग

1. शुद्ध भेलमा एक सेर, गुरिज आध सेर को चार सेर पानी में काढ़ा करें। 1 सेर रहने पर उतार लें। घी एक सेर, दूध चार सेर, शहद आध सेर, मिश्री सवा सेर कड़ाही में डालें। चूर्ण वाकची के बीज, नीम की छाल, हर्रे, आंवला, बहेड़ा, नागर मोथा, इलायची, नागकेशर, तज, पत्रज, देवदार, नेत्रवाला खस, चंदन, गोखरू, कचूर सब टके-टके भर लेकर चूर्ण बनाकर छान लें। यह भी कड़ाही में डालें, काढ़ा भी डाल दें। पाक गाढ़ा हो जाये तब लौह भस्म, हरताल भस्म, एक-एक तोला डाल दें। नित्य एक छटांक खायें। प्रातः-शाम दूध पीयें। इसके खाने से रक्त-दो मंडल चकते, कुष्ठ, खुजली, फोड़े, व्रण सब प्रकार के रक्त दोष नष्ट होते हैं।

हरताल वटिका

1. शुद्ध हरताल, तबकी 2-2 तोला, फिटकिरी चूर्ण 3 तोला को मदार के दूध की भावना देकर घोटें। टिकिया बनाकर सरवा संपुट दो सकोरों में कपरौटी करके भस्म कर दें फिर लौंग, इलायची, दालचीनी, जायफल, अकर करहा, कुटकी, जायपत्री 6-6 माशे लेकर चूर्ण बनाकर छानकर भस्म में मिला दें। अदरक के रस में घोटें। 2 रत्ती की गोली बनायें। दोनों वक्त खायें। मंजिष्ठादि काढ़ा सेवन करें तो सब प्रकार के रक्त विकार, मंडल, चकते, बदन में फोड़े, व्रण, श्वेत कुष्ठ सब दूर हो जाते हैं। पथ्य—चना, गेहूं, चना का अलोना भोजन, दूध, घी सेवन करें। तेल, मिर्च, खटाई, नमक का परित्याग करें।

2. शुद्ध हरताल तबकी को चितावर के रस में घोंटकर गोली बांधें। अमलतास (केलवार) कील, कड़ियां जलाकर राख करें। इस राख को एक सकोरे में थोड़ी डाल कर हरताल रख दें। फिर राख दाब-दाब भर दें। मुंह बंद करके मजबूत कपड़ मिट्टी कर दें। भट्टी में रख दें। शीतल होने पर निकाल लें। उत्तम भस्म होगी। यह वात-रक्त दोषों में, ज्वर, कुष्ठ रोगों में 1 रत्ती नित्य सेवन करें।

महामंजीष्ठादि क्वाथ

मजीठ, इन्द्र जौ, नागर मोथा, गुरिज, सोंठ, वच, हल्दी, दारू हल्दी, छोटी-बड़ी कटेरी, नीम छाल, पटोल, कूट, भारंगी, वायविडंग, चित्रक, मूर्वा देवदार, घमिरा, पीपल, त्रायमाण पाठ, शतावर, खैर, सार, त्रिफला, चिरायता, बकायन, किरमाला, निसोत, वाकची, लाल चंदन, वरूना, दातुन की जड़, शार वोट, अरूस, पित्त पापरा, गौरी सर, अतीस जवासा, इन्द्रायण की जड़, कचनार छाल, बबूल छाल, कंजा, उसवासर, कोका, घमोय की जड़, दालचीनी, तेजपात, सुंगध वाला सेंहुड़, नाग केसर, सब टके-टके भर लेकर चूर्ण बनाकर 30 सेर पानी में काढ़ा पकायें। चौथाई रहने पर उतारकर 8 दिन मुंह बांधकर रखा रहने दें, फिर छानकर बोतलों में भर लें। नित्य खाने के बाद पियें। सब प्रकार के रक्त-दोष, खाज-खुजली, मंडल, चकत्ते, कुष्ठ विसर्प, वापस्स, छाजन आदि-आदि चर्म रोग नष्ट होते हैं।

कैशोर गुग्गुल

त्रिफला एक सेर, गुरिज पावभर को कूटकर 10 सेर पानी में पकाकर काढ़ा करें। 2½ सेर रहने पर उतार कर छान लें फिर शुद्ध गुग्गुल आध सेर, गुड़ एक सेर, डालकर पकायें। जब गाढ़ा हो जाये तब चूर्ण त्रिफला 4 तोला, सोंठ, पीपर, वायविडंग एक-एक तोला, दातुन की जड़ 4 तोला, निसोत 4 तोलाभर। सब कूट छानकर मिला दें। गाढ़ा होने पर 2 तोला नित्य सेवन करें तो उदर रोग, रक्त विकार, फोड़े, व्रण, पामा, खाज, कुष्ठ, विचर्चिका मंडल, चकत्ते, विसर्प, सर्व रक्त दोष नष्ट होते हैं। मंजिष्ठादि काढ़ा पीयें। पथ्य—चना, गेहूं, घृत सेवन करें। तेल, खटाई, नमक, मिर्च का परित्याग करें।

मिरचादि तेल

सरसों का तेल 2 सेर, गौमूत्र 5 सेर, काली मिर्च एक छटांक, निसोत, दातुन की जड़, मदार का दूध व रस, थूहर का दूध व रस, गूमा का रस पाव-पाव भर, देवदार, हल्दी दारु हल्दी, जटामासी कूट, लाल चंदन, इन्द्रायन की जड़ें, कनेर की जड़ें, चित्रक फलिहारी, वकुची, वायविडंग,

पंवा़र के बीज, सिरसा के बीज व छाली, कुटग, छाल नीम, छाल गुरिज़, अमलतास, कंजा के बीज, नागर मोथा, पीपल, वच, माल कागनी सब सवा-सवा तोला लेकर 20 सेर पानी में कूट कर डाल दें। काढ़ा पकायें। 2½ सेर रहने पर उतार लें। 2 सेर गौमूत्र, तेल काढ़ा, हरताल 1 तोला, मैनसिल 1 तोला, मीठा तेलिया 1 तोला कूटकर कड़ाही में डालकर पकायें। पानी जल जाने पर उतार लें। छान लें, इसके मर्दन से चर्म रोग, खाज, खुजली, विसर्प छाजन, फोड़े, व्रण, विस्फोटक आदि चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं।

शोरकादि तेल छाजन पर

शोरा पावभर, कैथा की छाल, सहजन छाल, नीम छाल प्रत्येक दस छटांक। ऊंट की लेड़ी 5 सेर। सब चीजें कूटकर मटके में भरकर पाताल यंत्र से तेल निकालें। यह तेल अपरस, उकावत, छाजन के बाहरी प्रयोग के लिये है। इसमें गंधक, तूतिया, फिटकिरी, मुरदा शंख, मिर्च बराबर लेकर चूर्ण कर कैथे के रस में घोंट लगायें तो उक्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

कुष्ठ नाशक बूटी

सरकों की जड़ की छाल 1 तोला, काली मिर्च 5 तो रोज पीस छान कर रोज पीयें। 7 दिन के बाद 2 दिन के लिये बंद कर दें फिर 10 दिन पियें। इसी विधान से 7 हफ्ते पियें तो श्वेत कुष्ठ दूर हो जाता है। कभी-कभी कै हो जाती है पर इससे कुछ हानि नहीं होती।

सालसा परेला

उसवा, देवदार, नाग केशर, नीम छाल, शतावर, हल्दी, दारु हल्दी, मजीठ, वायविडंग, दातुन की जड़, इन्द्रायण की जड़, घमिरा, पीपल, मिर्च, सोंठ, वकायन छाल, निसोत, वाकची, अरूस, घमिरा का रस, पत्थरचटा की जड़ें, कटेरी की जड़, हर्रे, आंवला, बहेड़ा—सब टके-टके भर लेकर चूर्ण कर लें। 30 सेर जल डालकर पकायें। 10 सेर रहने पर उतार लें। 8 दिन रखा रहने दें फिर छानकर बोतलों में रख लें। डेढ़-दो तोला रोज पियें। सब प्रकार के रक्त विकार, फोड़ा-फुंसी, कुष्ठ, दाद, चम्पल, विसर्प, छाजन, अपरस नष्ट हो जाते हैं।

हरताल वटी

हरताल तवकी भस्म 1 तोला, मिर्च छः माशे, शुद्ध सिंगरफ छः माशे पीसकर अदरक के रस की भावना देकर 1-1 रत्ती की गोली बनाकर सेवन करें। इससे सब प्रकार के रक्त विकार, विसर्प, चकत्ते, दाद-खुजली, फोड़े, व्रण, श्वेत कुष्ठ को नष्ट करने वाली है। पथ्य—चना, गेहूं, चना घी खायें। नमक, तेल, खटाई इन वस्तुओं का परहेज करें।

दद्रु विनाश

1. सोहागा 2 तोला, नौसादर 2 तोला, शोरा 6 माशे, फिटकिरी 9 माशे पीसकर गरी के तेल से दाद को खुजला कर लगायें। दाद नष्ट हो जाते हैं।

2. गंधक एक तोला, नीलाथोथा एक तोला, दालचिकना एक तोला, रस कपूर एक तोला, चाल मोगरा तेल, सब दवा पीसकर गरी के तेल, चाल मोगरा तेल, मोम 2 तोला डालकर पकायें। फिर घोंट कर डिब्बी में रख लें। यह मरहम दाद-खाज, घाव, सड़े-गले को भी ठीक कर देने वाला है। दाद की उत्तम दवा है।

दद्रु गज केसरी

1. हरताल गोबरहा 1 तोला, गंधक नैनीसार आठ आनेभर, नौसादर आठ आनेभर सब पीसकर नींबू के रस से अथवा मिट्टी के तेल से दाद, खुजला कर लगाएं। दाद नष्ट हो जायेगी। अपरस-छाजन को भी नष्ट करेगी।

2. सोहागा 1 तोला, कचिया पीस लें। एक छटांक की मात्रा एक सेर पानी में पका लें। गंधक का तेजाब 5-7 बूंद डाल दें। यह अर्क दाद को शर्तिया दूर कर देता है।

रिंग वर्म आईंटमेंट

गंधक, रस कपूर, नीला थोथा, नौसादर, कचिया, सोहागा, दाल चिकना, फिटकिरी एक-एक तोला लेकर खूब पीस लें। आधे पाव नारियल के तेल में 2 तोला मोम डालकर जरा गर्म करके पिघल जाने पर

दवाइयां डाल दें। घोंट दें, कपूर 1 आने भर मिला दें। यह दाद की शर्तिया दवा है तथा फोड़ों के घाव को भरने में रामबाण है। व्यापारिक योग है।

दाद की जड़ी

चूक पंसारियों से ले आयें अथवा यह घमोय की जड़ है, इसे थूक में घिसकर दाद में लेपकर दें। एक ही लेप से दाद का विनाश हो जाएगा।

दद्रुहन योग

कवीला, नौसादर, सोहागा, फिटकिरी, सेंधा नमक, शोरा 6-6 माशे लेकर पीस लें। नींबू के रस व मिट्टी के तेल से दाद खुजला कर लगायें। दाद को शर्तिया नष्ट कर देगा।

फोड़े-व्रण नाशक योग

यदि फोड़े का उभाड़ हो तो मिर्च पीसकर थोप दें। फोड़ा बैठ जाएगा।

1. यदि फोड़ा उभड़ आया है, पथरा गया है। दर्द बहुत है तो कच्चे तिल को पानी में पीसकर मोटा लेप कर दें। पानी से तर रखें सूखे नहीं। इससे दर्द कम होगा। 2 दिन में फोड़ा पक कर फूट जायेगा।

2. फोड़े का घाव भरने के लिये राल 6 माशा, तूतिया 3 माशा पीस लें। मिर्च 10-12 पीस दें फिर अलसी के तेल में नीम की कोचैया सेराकर उसी में चूर्ण डाल दें। मोम डाल दें। मलहम बन जाएगा। वह मलहम घाव को भरने वाला है। कच्ची फिटकिरी भी पीसकर मिला दें।

3. नीम की बीजी पानी में पीसकर थोप दें। पानी से तर रखें। फोड़ा पककर फूट जाएगा।

पत्थरचटा की जड़ पीसकर फोड़े में बांध दें। फोड़े को फौरन या तो बैठा देगा या तो फूट जायेगा।

अंडी की बीजी पानी में पीसकर थोप दें। फोड़ा पककर फूट जायेगा फिर फिटकिरी का चूर्ण बुरक दें। फोड़ा पकेगा नहीं घाव अच्छा हो जाएगा।

4. चाल मोगरा तेल में कपड़े की पट्टी भिगोकर चिपका दें तो घाव बहुत जल्द ठीक हो जाता है।

नीम का गामा पीसकर घाव में रोज बांधे, घाव फौरन भर जायेगा चाहे जैसा भी घाव हो।

प्लास्टर

5. एक छोटी-सी कपड़े की नई चिट लेकर उसमें विरोजा को सेंक कर कपड़े में लेप कर दें। फोड़े में चिपका दें। इससे या तो फोड़ा बैठ जायेगा नहीं तो पककर फूट जायेगा।

6. हर प्रकार के फोड़े-फुंसी, खाज-खुजली, जहरीले कीड़ों के काटने पर फुंसी पड़ी हो तो सर्व मृत्यु तेल फाहे से लगा दें और ठीक हो जायेगा। 2-3 बार लगायें।

रक्त शोधक अर्क

नीम पंचांग 1 सेर लेकर 5 सेर पानी में काढ़ा करें। 1 सेर पानी रहने पर उतार कर डालकर पियें। रक्त शोधक है, चर्म रोगों में लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

अतस्यादि मलहम (जल जाने पर)

राल एक छटांक, अलसी तेल पावभर, नीम के पत्तों की लुगदी एक छटांक पीसकर तेल में पकायें। जब नीम पककर सूख जाये उतार कर तेल निकाल लें, उसमें राल पीसकर घोंट दें। 21 बार पानी डाल-डालकर फेंटें। 11 बार यह घी के समान एक कर मलहम बन जायेगा। दो आने भर कपूर पीसकर मिला दें जले हुये घावों, छालों में लगायें सब अच्छे हो जायेंगे।

जहरवात प्रयोग

कठिया गेहूं 2 सेर, नारियल के छिलके 4-5, नारिवर के हाथी चिघार जंगल में होता है। टेढ़े-टेड़े कांटेदार काले फल होते हैं। सबको कूटकर ऊंट के लेड़ी 5 सेर मटके में भर दें। पेंदी में छेदकर दें, गड्ढे में पाताल यंत्र से तेल निकालें। यह तेल जहर वात की फुंसी, घाव, अपरस, उकवत, छाजन को नष्ट कर देता है।

बाईसवां अध्याय

अर्श (बवासीर) योग

अर्शोघ्नी पाक

कुड़ा की छाल 3 सेर लेकर 15 सेर पानी में कूटकर काढ़ा बनाये। 2 सेर रहने पर उतार लें। छानकर उसमें आध सेर गुड़ डाल दें फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, नागर मोथा, आंवला, हर्रे-बहेड़ा टके-टके भर कूटकर छान लें। फिर रसौत एक छटांक, चितावर एक छटांक, इन्द्र जौ एक छटांक पीसकर डाल दें। शहद पावभर कड़ाही में डाल कर पकायें। गाढ़ा होने पर घी आध सरे डालकर पकायें। यह पाक टके-टके भर प्रात:शाम खायें। यह खूनी वादी बवासीर, अम्ल-पित्त, पांडु को हरण करने वाला है।

प्राणदा वटी

अदरक आध सेर, पीपल पावभर, काली मिर्च, चाव-चितावर, नाग केशर, पीपरामूल, इलायची, अजमोद, काला जीरा, हर्रे सब टके-टके भर लेकर चूर्ण करें। अदरक और पिपली भी पीसकर पीठी बना लें। आध सरे घी में पकायें। जब पक जाये तब उसी में चूर्ण मिला दें फिर 1 सेर गुड़ की चासनी बनाकर सब दवा डाल दें। गाढ़ा होने पर एक छटांक नित्य दोनों वक्त सेवन करें। यह पाक बवासीर, कामला, पांडू, अरुचि, मंदाग्नि को नष्ट करने वाला है।

बवासीर के रक्त का प्रयोग

* नारियल के जटा की राख व शक्कर बराबर लेकर 3 माशे प्रात:शाम जल से सेवन करें। रक्तार्श का खून गिरना बंद होता है।

अर्शोघ्नी मलहम

* चिड़चिड़ा का रस पावभर, लहसुन का रस एक छटांक, प्याज का रस एक छटांक, मैनसिल 6 माशे, सरसों का तेल आधपाव—सब कटोरी में डालकर पकायें। जब रस जल जाये तब उतारकर मैनसिल पीसकर डाल दें। 2 तोला मोम डालकर घोंट दें। यह मलहम मस्सों में लगायें, पान या धतूर का पत्ता चिपका दें। मस्से सूख जायेंगे।

मस्से निर्मूल योग

* मदार का दूध, हल्दी पीसकर लेप मस्सों में करें। लगोटा बांध लें। बवासीर के मस्से सूख जायेंगे।

* नीम की बीजी एक छटांक पीसकर एक छटांक भर सरसों के तेल में पकायें। सुर्ख होने पर सोहागा, फिटकिरी, तूतिया 1 तोला, मोम डाल दें। यह मलहम बवासीर के मस्से सुखा देता है।

* रसौत, चीनिया कपूर, नीम की बीजी सब पीसकर पानी में मस्सों पर लेप करें, मस्से सूख जायेंगे।

* खाने वाला चूना, सज्जीखार, सोहागा, तूतिया बराबर-बराबर पीसकर नींबू के रस से मस्सों पर लेप करें तो सम्पूर्ण मस्से सूख जायेंगे।

* शंखिया, तूतिया, चूना एक-एक तोला लेकर पीसकर मस्सों में लेप करें। मस्से सूख जायेंगे।

* हल्दी, कसई लौकी का चूर्ण पानी में पीसकर लेप करें अथवा सरसों के तेल में पकाकर तेल मदार के पते में लगाकर मस्सों में चिपका दें। लंगोट कस दें, मस्से सूख जायेंगे।

अर्श कुठार रस

शुद्ध पारा 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला, की कज्जली बनायें। ताम्र भस्म 3 तोला, लौह भस्म 1 तोला मिलाकर घोंट दें। सोंठ, मिर्च, पीपल, का 2-2 तोला का चूर्ण बना छान लें। शुद्ध मीठा तेलिया 1 तोला पीस लें। शुद्ध जमाल गोटा 2 तोला, चितावर, सोहागा, सेंधा नमक, बेल का गूदा 2-2 तोला, जवाखार 1 तोला, सब पीसकर छान लें। सब दवाइयां मिला दें, गौ का मूत्र डेढ़ सेर कड़ाही में डालें। थूदर का दूध पावभर

डालें, चूर्ण डालकर सब पकायें। गाढ़ा होने पर उतार लें। यह 1 माशे से 2 माशे तक नित्य सेवन करें तो असाध्य बवासीर, कामला, पांडू को नष्ट कर देगी। पथ्य—तेल, मिर्च, खटाई, गुड़, वादी वस्तुओं का परहेज करें।

रक्तार्श बवासीर योग

रसौत 1 तोला, मुनक्का बीजों सहित 2 तोला, कतीरा 1 तोला सब पीसकर बेर के बराबर गोलियां बनायें। प्रातः-शाम एक-एक गोली खायें। ऊपर से घी व रोटी के 2-3 निवाले खा लें। बवासीर का रक्त बंद हो जायेगा।

कसीसादि तेल

हीरा, कसीस, कटिहारी कूट, सोंठ, पीपर, सेंधा नमक, मैनसिल, कनेर की जड़, वायविडंग, चीता, अरूस, दातुन की जड़, कसई लौकी का रस, धमोय की जड़, हरताल—सब आठ-आठ आने भर लेकर सरसों के दस छटांक तेल में कड़ाही में कूट कर डाल दें। मदार का दूध आधपाव, गौमूत्र दो सेर, सेहुड़ का रस पावभर डाल दें। पकायें, जब भली-भांति पक जाए पानी जल जाये तब उतार कर तेल छानकर रख लें। इस तेल को बवासीर के मस्सों में लगायें। मदार के पत्ते चिपका कर लंगोट बांध लें। सब मस्से सूख जायेंगे।

जायफल, लौंग, पीपल, सोंठ, शुद्ध सोहागा, भुनी फिटकिरी, सब एक-एक तोला नींबू के रस में घोंटकर 3-3 रत्ती की गोली बना लें। सुबह-शाम मक्खन से चाटें। इसके सेवन से रक्त का गिरना बंद होता है। मस्से सूख जाते हैं।

कंकाइन मोदक

हर्रे 40 तोला, काली मिर्च, पीपल 8-8 तोला, पीपरामूल 16 तोला, चव्य 24 तोला, चिंतावर 32 तोला, सोंठ 40 तोला, जवाखार 16 तोला, शुद्ध भेलामा 64 तोला, सूम कंद 128 तोला, शुद्ध पकाया हुआ सब चीजें कूटकर छान लें। सूरज की वांटकर पीठी बना लें। इस पीठी में चूर्ण मिला दें। दुगुना गुड़ मिलायें। चासनी बनायें, पहले पीठी करें। घी ढाई सेर में पका लें, फिर गुड़ की चासनी में मिलाकर एक-एक छटांक

के लड्डू बना लें। सेवन करें वलावल के अनुसार। दवा कम या अधिक बना लें। यह मंदाग्नि, मलबंध, बवासीर, पांडू, कामला, उदर के समस्त रोग विनाश करने वाला मोदक है।

अभयारिष्ट अर्श पर

हर्रे 10 सेर, मुनक्का 5 सेर, वायविडंग एक सेर, महुवा एक सेर सब कूटकर 8 गुने पानी में पकायें। 2-3 बार में चौथा-चौथा भाग रहने पर उतारते जायें। दूसरे मटके में भरते जायें। 10 सेर गुड़ डाल दें, फिर गोखरू, काली मिर्च, निसोत, पीपल, घबई के फूल कूटकर डाल दें। तीन-तीन छटांक इन्द्रायण की जड़ें, चथ, सोंठ, सौंफ, दातुन की जड़ें, मोचरस, दस तोला पीसकर डाल दें। मुंह बंद करके रख दें। 2 महीने के बाद खोलकर छानकर 2 तोला नित्य पियें। यह खूनी वादी, बवासीर, उदर रोग, मलबंध, मंदाग्नि, प्लीहा, कृमि शोथ सर्व रोग नष्ट करने वाली है।

सूरन वटिका

सूरन 1 सेर, विधारा 2 सेर, मूली का रस, चितावर आध सेर, आध सेर सूरन पानी में उबालकर पीठी बनायें। दवा कूटकर चूर्ण करें, मूली के रस से भिगो दें। आंवला, हर्रे-बहेड़ा, शुद्ध भेलामा, पीपर, सोंठ, पीपरामूल, वायविडंग, तालीस, पाव-पावभर तज, मिर्च, इलायची आधपाव प्रत्येक का चूर्ण कर छान लें। पीठी को आधे सेर घी में भून लें। सुर्ख होने पर सब चूर्ण भी डाल दें। फिर गुड़ की ढ़ाई सेर की चासनी बनाकर मिला दें। 1 छटांक नित्य सेवन करें। रस से अर्श मंदाग्नि, हाथी पांव, शोथ, कामला, पांडू, हिचकी, सर्व उदर रोगों को नष्ट करने वाली है।

रक्तार्श की दवा

बकाइन, नीम के फलों की बीजी और सौंफ बराबर मिश्री दोनों के बराबर मिलाकर दो माशे प्रातःशाम जल से खायें। बवासीर का रक्त गिरना बंद होता है।

अर्श हर वटी

कचूर एक छटांक, कुकरौंधा का रस छह तोला, मिर्च 2 तोला को

पीसकर रस में पकायें। गाढ़ा होने पर बेर के बराबर वटी बनाकर सेवन करें। बवासीर नष्ट हो जाती है।

कुकरौंधा का रस पावभर, हुरहुर का रस पावभर, काली मिर्च का चूर्ण टका भर, रसौत टका भर डालकर पकायें। गाढ़ा होने पर बेर के बराबर गोली बना लें। यह एक-एक गोली दोनों वक्त खायें। इसी को पानी में घिसकर मस्सों में लगायें तो सूजन, पीड़ा, बवासीर दूर हो।

अर्श हर तेल

हुरहुर के बीजों को आध सेर लेकर मटके में भरकर पेंदी में छेदकर गड्ढे में पाताल यंत्र से तेल निकालें। घी 3 तोला, जड़नाखूना छ माशा जड़ वावूना छः माशा, कूटकर तेल, घी, चूर्ण, घमिरा का रस पावभर में पकायें। जब तेल सिद्ध हो जाये तो नित्य बवासीर वाले रोगी की पीठ पर रीढ़ में मलें, बवासीर नष्ट हो जाएगी।

मस्से निर्मूल करने का अर्क

मारू बैंगन के नरचे को चीरकर सुराख करके 1 तोला तूतिया पीसकर भर दें फिर नरचों को धागे से बांध दें। हांडी में पानी भर कर चावल डाल दें। बैंगन उन्हीं चावलों के साथ पकायें। जब चावल पक जाये उतार कर बैंगन निकाल लें। चावल फेंक दें इस बैंगन का रस निचोड़ लें। शीशी में रख लें। इस रस में रूई का फाहा तर करके गूदा के अंदर मस्सों में दबाकर मदार के पत्ते लगाकर लंगोट कस लें। बवासीर के मस्से निर्मूल होकर नष्ट हो जायेंगे।

इमली के 4-6 पोर लेकर रेशे निकाल कर गुठली फेंक दें। पोरों को पीसकर रूई की गादी बनाकर उसमें इमली पिसी हुई लेप करके फिटकिरी का चूर्ण बुरक लें और मस्सों में चिपका दें। पट्टी बांध दें। टट्टी के समय निकाल लें। फिर बाद में दूसरी दवा बांध दें। इसी प्रकार 7 दिन नई दवा लगाकर पट्टी या लंगोट बांधे रहें। मस्से अंदर ही अंदर सूखकर गिर जायेंगे। बिना शस्त्र के मस्से निर्मूल करने का प्रयोग है।

हुर-हुर के बीज दो माशे पीसकर शक्कर एक आनाभर के साथ फांक कर दूध पियें। दोनों पहर खूनी वादी दोनों बवासीर को दूर कर देगा।

तेईसवां अध्याय

शीत पित्त प्रयोग

अदरक अवलेह

अदरक सवासेर लेकर पीस लें, पीठी बन जाने पर सवा सेर घी में भून लें। सुर्ख होने पर उतार लें। अदरक को निकालकर उसी बाकी बचे घी में खोया सवा सेर डालकर भून लें। जब यह भी सुर्ख हो जाये उतार कर अदरक में मिला दें। फिर सोंठ, मिर्च, पीपर, नागर मोथा, पीपरामूल, चाव, चितावर, वायविडंग, नाग केशर, काला जीरा, तज-पत्रज, इलायची, लौंग सब 2-2 तोला का चूर्ण बनाकर छान लें और अदरक में मिला दें, फिर शक्कर डेढ़ सेर की चाशनी बनाकर मिला दें। यह अवलेह शीत पित्त (रिस्पती), कामला, पांडू, आंव, वात को नष्ट करने वाला है।

लेप रिस्पिती में

कुकरौंधा के रस पावभर में 3 माशे मिर्च पीसकर पकायें और फिर यही रस शीत पित्त में लगायें। कम्बल से बदन ढक लें, शीत पित्त दब जायेगा।

सिद्ध चूर्ण रिस्पिती में

काली मिर्च का चूर्ण 5 तोला, मिश्री तीन तोला में मिला दें। छः माशा प्रातः-शाम फांक लें और पानी पी लें। शीत पित्त बंद हो जायेगा। खाज-खुजली, फुंसी, दाने, रक्त विकार से चर्म रोगों को नष्ट करने वाला योग है। पुराने-से-पुराने रोगों को नष्ट कर देता है। कम-से-कम 40 दिन सेवन करें फिर कभी भी नहीं निकलेगी।

आनन्द भैरव रस

रिस्पिती के निकलने पर 2 रत्ती आनन्द भैरव रस खा लें। सब पित्ती इसी रस से दब जायेगी। 2-3 बार दवा का सेवन करें।

पेट की तृषा दाह पर योग

आनन्द भैरव अथवा संजीवनी डेढ़-दो रत्ती शहद से सुबह-शाम खायें तो वायु की तृषा-दाह शान्त हो जायेगी। सिद्ध प्रयोग है।

मलयागिरि चंदन घिसा हुआ, आनेभर इलायची के दाने, मिश्री 1 तोला घोलकर पियें तो पित्ती, गर्मी की प्यास व दाह शमन हो जाती है। सिद्ध प्रयोग है।

शरबत में नींबू निचोड़कर पीयें। पेट की तृषा-दाह शांत हो गर्मी का योग है।

चौबीसवां अध्याय

रक्त पित्त प्रयोग

लक्षण

मुख, नाक, गुदा, लिंग, योनि से रक्त प्रवाह हो तो यह रक्त-पित्त रोग है। इसके प्रयोग नीचे दर्ज हैं। इस रोग की औषधियां सब ठंडी की जाती हैं। क्योंकि पित्ती की गर्मी असली गर्मी है। इसी के बढ़ जाने पर रक्त स्राव होता है।

प्रयोग

1. लाल फिटकिरी पीस लें, 1 तोला शीशी में रख लें। यह स्फटिक चूर्ण बहुत रोगों में फायदा करता है। एक माशा चूर्ण 3 माशा शक्कर में मिलाकर फांक लें, फौरन दूध के साथ खा जायें। यह रक्त पित्त रोग चाहे जहां से रक्त गिरता हो बंद कर देगा। 2-3 बार पियें।

2. नींबू को शरबत में निचोड़ कर 2-3 बार पियें। रक्त प्रवाह हर प्रकार का नष्ट होता है। लाख, पीपल की लाकर चूर्ण कर लें। 1 माशे शहद से 2-3 बार चाटें तो खून की कै बंद होती है।

3. फाहू दाना, लाजवंती बीज, ताल मखाना, मूसली बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लें। सब के बराबर मिश्री मिला दें। छः माशे घृत से खाकर दूध पियें। रक्त प्रवाह, धातु क्षीणता दूर होती है।

4. चंदन, धनिया, सौंफ, गुरिज, पित्त पापरा एक-एक तोला लेकर कूटकर डेढ़ सेर पानी में पकायें। पावभर रहने पर उतार कर मिश्री एक छटांक मिलाकर पियें, तो रक्त पित्त दूर हो जाता है। 2-3 बार पियें।

5. चौलाई की जड़ की छाल 2 तोला अथवा न मिलने पर पत्ते पेड़ सहित 2 तोला पीसकर पानी से छान लें। पावभर पानी बनायें शक्कर डालकर 2-3 बार पियें। हर तरह के रक्तस्राव को बंद करता है। यह अनुभूत योग है।

नोट—कभी-कभी ठंडी औषधियों से मुंह का रक्त गिरना नहीं बंद होता तब नीचे लिखा प्रयोग करें।

6. अरूस का रस एक तोला, शहद आनाभर मिलाकर तीन-चार बार पियें तो रक्त पित्त दूर होता है। कहीं-कहीं अरूस के पत्ते कपड़े में लपेट भूल-भूल में दबा देते हैं। फिर निकाल कर रस निचोड़ा जाता है इसका सेवन शहद से होता है। अरूस का रस पका लेना आवश्यक है। रस ना मिलने पर जड़ की छाल का काढ़ा कर लें 2-3 बार पियें।

7. राल संजरावत, गेरू 1-1 तोला पीस चूर्ण करें। 3 तीन माशे चौलाई के रस (ठंडाई) के साथ पियें। हर प्रकार के रक्त स्राव प्रदर रोग को नष्ट करने वाला है। जब तक रोग दूर न हो, सेवन करें, सिद्ध प्रयोग है।

पच्चीसवां अध्याय

धातु वर्धक योग

वाजीकरण योग—प्रमेह रोग

मूसली एक सेर, दूध 8 सेर, घी 2 सेर, शक्कर 5 सेर प्रथम मूसली खल में कूटकर चूर्ण करें। छान लें। फिर दूध कड़ाही में डालकर पकायें। जब दूध चार सेर रह जाये सब मूसली डालकर पकायें। खूब नीचे से चलाते जाएं नहीं तो कड़ाही में लिपट जाता है और जलने लगता है। गाढ़ा होने पर उतार लें, घी कड़ाही में डालकर पकायें। जब इतना पक जाये कि दाने-दाने हो जाये तब उतार लें और अभ्रक भस्म 2 तोला, लौह भस्म 2 तोला, वंग भस्म 2 तोला, कपूर उड़ाया हुआ 1 तोला—सब उसी पके पाक में बड़ी परात या कड़ाही में डालकर मिला दें। अब शतावर, जीरा, गोखरू, अजमोद, चितावर, गजपीपर, पीपरामूल, आंवला, कचूर, धनियां, असगंध, नागरमोथा, समुद्र सोख, हर्रे, लौंग, जायफल, जायपत्री, नाग केशर, ताल मखाना, खरेटी के बीज, गंगेरन के बीज, मुलहठी, सेमर का गोंद, सिंघाड़ा, कमल गट्टा, वंशलोचन, कंकोल, अकरकरहा 2-2 तोला लेकर पीसकर चूर्ण बनायें, छान लें। यह चूर्ण भी पाक में मिला दें, अब शक्कर 10 छटांक पानी डालकर कड़ाही में पकायें। जब पाक बन जायें सब इसी पाक में ऊपर की सब चीजें मिलाकर रख दें। घी वाले बर्तन में भर दे। यह पाक एक छटांक नित्य दूध से खायें। यह महान ताकत वर्द्धक वीर्य बढ़ाने वाला, क्षीणता, कमजोरी, धातु पतन, प्रमेह, स्वप्न दोष को दूर करने वाला, कांति वर्धक पुरुषत्व बढ़ाने वाला है।

वाजीकरण शक्ति वर्धक योग

बादाम के बीज दस छटांक, सिंघाड़े का चूर्ण पाव भर, सफेद तिल,

पावभर, पीस लें। सब पीसकर एक में मिलाकर कड़ाही में डेढ़ सेर घी डाल कर पकायें। खोया भी डेढ़ सेर डाल दें। बिनौले पावभर पीसकर छान लें। दूध डाल दें और पकायें। जब पककर दाने-दाने हो जायें, उतार लें। केशर पीसकर पानी में मिला दें, फिर चूर्ण दालचीनी, पीपर, सोंठ, मिर्च, कुली जल, सफेद वहमन, लाल वहमन, गाल छड़, तूहरी सफेद, तूहरी लाल, लौंग-इलायची, जायफल, जायपत्री, अकरकरहा, जीरा श्वेत और काला छहरोला, साल्म मिश्री, मूसली, डोड़ा सब डेढ़-डेढ़ तोला लेकर चूर्ण बना छान लें। उसी कड़ाही में डालकर मिला दें। शहद पावभर मिला दें, शक्कर 2 सेर में पानी आधे सेर डालकर शीरा बनायें। जब चिपकने लगे उतारकर दवाइयों में डाल दें। अब अभ्रक 1 तोला, वंग भस्म 1 तोला, शिलाजीत 1 तोला, अफीम छः माशे पीसकर उसी पाक में डाल दें। खूब मिलाकर एक दिल कर दें, बस पाक तैयार है। एक-एक छटांक सुबह-शाम आध सेर दूध के साथ पियें। महान गई गुजरी शक्ति को पुनः प्रदान करेगा। नपुंसकता, कमजोरी, धातु पतन, स्वप्न दोष, प्रमेह को नष्ट करने वाला योग है।

मृग मदाम्बर वटी का योग

1. मोती मृग, मद (कस्तूरी), अंवर स्वर्ण भस्म, अफीम, केशर छै माशे लेकर वंग भस्म 1 तोला, हिंगुल भस्म 1 तोला सब वेद मुश्क के अर्क में घोंट दें फिर नीचे लिखा चूर्ण बना छानकर मिला दें।

2. रूमा मुस्तगी, वंशलोचन, लौंग, जायफल, अकरकरहा, जायपत्री, वहमन, सफेद वहमन, लाल दालचीनी, सालम मिश्री, सकाकुल मिश्री, सोंठ, द्रोनज, अकरवी, अद हिन्दी, अद स्लेव, जदवार, सताई यह सब 6-6 माशे लेकर चूर्ण करें। छान लें फिर ऊपर की पिसी दवाइयों में मिलाकर घोंट दें। उड़द प्रमाण एक-एक रत्ती वटी बना लें। एक-एक वटी खाकर दोनों वक्त दूध पियें। दो सप्ताह में चित्त प्रसन्न कर देगी। गुजरी हुई शक्ति को फिर से नवीन शक्ति पैदा करेगी। भोग की इच्छा प्रदान करेगी। नपुंसकता, कमजोरी, धातु पतन, प्रमेह, स्वप्न दोष को दूर कर देगी। पुरा बल प्रदान करेगी। यदि एक वटी शहद और कपूर मिला कर लिंग में लगाकर पुनः भोग करें तो आनन्द की सीमा नहीं रहेगी। भोग के प्रथम गर्म दूध या चाय पी लें। भोगानन्द में विह्वल हो जायेगा। स्तंभन शक्ति बढ़ायेगी। भोग के बाद भी 2 वटी खाकर पका हुआ दूध

पान करें जिससे गयी हुई शक्ति फिर से ठ़ीक हो जाती है। यह मृग मदाम्बर वटी है।

विशाक्ता बादाम वटिका

मत्ल सिंदूर 1 माशे लेकर खरल में पीस लें। 7 बादाम के बीज फूले हुए घोंट डालें उसमें मत्ल सिंदूर भी डालकर घोंट दें। इसी प्रकार 7 दिन नये 7 बीज डालकर घोंटते जायें, 4-6 बादाम पड़ जायेंगे फिर हिंगुल भस्म 1 तोला, वंग भस्म 1 तोला मिलाकर आंवलों के रस में घोंट दें। उड़द प्रमाण वटी बनायें। 1 वटी मक्खन-मिश्री से या मलाई से खायें। 1 सेर दूध पियें, घी खूब खायें। यह बहुत बाजी करण शक्ति वर्द्धक योग है। नपुंसकता को दूर करके संभोग शक्ति प्रदान करने वाली है।

हिंगुल भस्म

भेलामा डेढ़ पाव, माल कांगनी 10 तोला, दोनों को खूब कूट डालें फिर घी पौन सेर, शहद आध सेर डालकर मिला दें। अब शुद्ध हिंगुल 10 तोला लेकर नींबू के रस से घोंटकर गोला बनायें। आधी दवा की 1 कोचइया बनाकर गोले के ऊपर रखकर चारों तरफ से गोले को बंद कर दें। अब एक डेगची में गोले को रख दें। ऊपर एक कटोरी से मुंह बंदकर दें, मिट्टी से या आंटे से सांसें बंद कर दें, खूब मजबूत कपड़ मिट्टी कर दें, चूल्हे में चढ़ा दें, कोई ज्यादा वजनदार पत्थर ऊपर कटोरी के रख दें ताकि खुले नहीं। 4 पहर तक धीमी-धीमी आंच दें, डेगची में कुछ हल्ला सा मचेगा, पक जाने पर हल्ला बंद हो जायेगा, तब डेगची को उतार लें, ठंडी होने पर गोले को फोड़कर हिंगुल का गोला निकाल कर पीस लें। शीशी में रख लें। यही हिंगुल भस्म है। बहुत बाजीकरण ताकतवर भस्म है, यह वीर्य वर्द्धक, कांति बढ़ाने वाला, रक्त उत्पादक, धातु विकार, प्रमेह, स्वप्न दोष मिटाकर पुरुषत्व को बढ़ाने वाला है। मात्रा 1 रत्ती मलाई या मक्खन, मिश्री से प्रातः शाम खायें, दूध का सेवन करें।

हिंगुल वटी

हिंगुल भस्म 5 तोला, मत्ल सिंदूर 3 माशे को नींबू के रस में 3

दिन घोटें। फिर केशर 6 माशे, कस्तूरी 3 माशे, चांदी भस्म 1 तोला, सोने के वर्क दो आना भर, अफीम 2 आनाभर डालकर नींबू के रस में घोटें। उर्द प्रमाण वटी बनायें। यह वटी प्रातः-शाम मलाई, मिश्री से सेवन करें। साथ ही 1 सेर दूध पियें, घी खूब खायें। अत्यंत बाजीकरण, शक्तिशाली वटी है। नपुंसक को पुरुषत्व प्रदान करके शरीर में रक्त वीर्य की लहरें उत्पन्न करती है। चेहरे पर कांति पैदा करत्ती है, प्रमेह धातु क्षय, शीघ्र पतन, स्वप्न दोष को नष्ट करत्ती है। फिर से नवीन शक्ति का संचार करके वलिष्ट बनाती है।

कुक्कढ़ांक मोदक

माल कांगनी, पोस्ते के दाने, अकरकरहा, लौंग, जायपत्री, केशर, दवाइयां दो-दो तोले केशर 1 तोला पीसकर 25 मुर्गी के अंडों की जरदी में मिला दें। आध सेर शहद कड़ाही में डालें, आग पर चढ़ाकर सब दवा डाल दें। मंद-मंद आंच से पकायें। गाढ़ा होने पर दो-दो तोले के लड्डू बना लें। एक लड्डू प्रातः एक शाम को सवा सेर दूध के साथ खायें। यह मोदक बल बढ़ाने, प्रमेह, नामर्दी को दूर करने वाला है। मैथुन में स्तम्भन शक्ति बढ़ाने वाला है।

आयुर्वेदिक शक्तिवर्धक योग

विनौले एक छटांक लेकर पानी में पीसकर छान लें, यह सत्त्व खीरा, कंकड़ी के छीले बीज, मगजतरबूज, चिरौंजी, तिल, पोस्ता, सेमर, मूसर, मूसली, शतावर, असगंध, सिंघाड़ा, इमली के छीले बीज, लसोड़ा एक-एक तोला लेकर पीस डालें। केवड़े के बीज, प्याज के बीज, शलजम के बीज, मूली के बीज, भूकली, ताल मखाने, समुद्र सोख, मैदा लकड़ी, नौ-नौ माशे कुलीजन, चुन्नी गोंद, नागर मोथा, तज, शुद्ध केवांच के बीज, दूध, दूध में पके हुए इन्द्र जौ, बबूल की कोमल सिंगनी, कमलगट्टा, धाय के फूल, बीज बंद सेमर का गोंद, मोचरस, अकरकरहा छह-छह माशे लें। इलायची छह माशे, पीपल, सोंठ, खुरासानी, अजवाइन, असगंध, उटंग बीज तीन-तीन माशे सब दवा कूट-पीसकर छान लें। खोवा दो सेर कड़ाही में डालें। तीन सेर घी डालकर पकायें। सुर्ख होने पर छना हुआ चूर्ण डाल दें और आध सेर घी डाल दें, मिला दें। उतारकर दो

सेर मिश्री की चाशनी बनाकर ठंडी होने पर सब दवा मिला दें। घी के बर्तन में रखकर एक-एक छटांक प्रातः-शाम खायें। छुहारा डालकर पका हुआ दूध पियें। यह बाजीकरण शक्ति वर्धक पाक है। प्रमेह, स्वप्न दोष, धातु क्षीणता, कमजोरी को मिटाने वाला है।

इन्द्रिय दृढ़करण तिला

एक बीता कपड़े को मदार के दूध में 8 दिन लगातार भिगोयें ताकि मोटा प्लास्टर चढ़ जायें। छाया में सुखा कर गाय का 10 तोला घी डालकर 1 कटोरी में कपड़े को भी डाल दें, पकायें, पक जाने पर उतार लें। यह घी इन्द्रिय में अगला भाग छोड़कर मालिश करें। अंडे का पशा बांधकर लंगोट कस लें, इससे इन्द्रिय की शिथिलता दूर होकर तेजी (स्फूर्ति) पैदा हो जाती है, नसों का खराब पानी निकल जायेगा।

वंगेश्वर रस

रांगा भस्म दो तोला, पारद हिंगलोत्थ को खरल में घोंट दें, केशराज (घमोई) के रस से घोंटकर दो बड़े उपले पांच सेर के बना सुखा लें। बीच में थोड़ा गड्डा रखें, इस गड्ढे में मेहंदी की पत्तियों के चूर्ण में आधे उपले के गड्डे में बिछाकर रांगा की गोली रख दें, ऊपर से आधा चूर्ण से ढक दें। दूसरा कंडा से ढक दें, तार से बांध दें और कंडों का एक अदहरा बनायें। उस अदहरे के बीच में दोनों उपले दबा दें, उपर से और कंडों से ढक दें, आग लगा दें, जब अदहरा जल जाए पकने लगे तो अंदर के दोनों उपलों को निकाल कर वंग की गोली निकाल लें, पीस लें। यह वंगेश्वर रस है। इसके दो रत्ती के मक्खन-मिश्री से खाने से प्रमेह धातु, क्षीण कमजोरी नष्ट होती है।

अश्वगंधा पाक

1. तज पत्रज, इलायची, लौंग चार-चार तोला पीसकर चूर्ण बनायें।
2. पीपरामूल, श्वेत जीरा, सत गुरिज, तगर, जायफल नेत्र वाला, सफेद चंदन, नागरमोथा, धाय के फूल, वंशलोचन, आंवला, चितावर, शतावर, अकरकरहा, मूसली, ताल मखाना, गोंद बबूल, सेमल का गोंद, बिहारीकंद यह एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनाकर छान लें।

3. असगंध नागोरी 40 तोला, सोंठ 10 तोला, पीपर 5 तोला, ये सब कूट कर चूर्ण कर लें।

विधि—दूध 5 सेर में खोया बनायें। नं. तीन का चूर्ण मिला दें। कड़ाही में दो सेर घी भरकर यह खोया बनायें। सुर्ख होने पर उतार लें, फिर एक-दो के चूर्ण उसी कड़ाही में डाल कर मिला दें। मिश्री डेढ़ सेर की चाशनी बनाकर दवा मिला दें। यदि चाहें तो वंग भस्म एक तोला, लौह भस्म एक तोला मिला दें। यह पाक एक छटांक नित्य खाकर दूध पियें। यह औषध, धातुक्षय, कमजोरी, शीघ्र पतन, आमाशय, यकृत दोष, पुरुषत्व को बढ़ाने वाला स्त्रियों के सम्पूर्ण योनि दोष, गर्भाशय दोष दूर होते हैं।

चन्द्र कान्त रस प्रमेह पर

शुद्ध पारद 1 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला, की कज्जली बनायें। अभ्रक भस्म, चांदी भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, हरताल तबकी भस्म, लौह भस्म, वंग भस्म तीन-तीन माशे, कज्जली में डालकर घोट दें। नाग भस्म 2 तोला मिला दें। मूसली, जायफल, जायपत्री, केशर, लौंग, नागर मोथा, तज इलायची दो-दो तोला का चूर्ण मिला दें फिर लाजवन्ती बीज 1 तोला पीसकर पानी डालकर मिला दें। घोटें, आम के गाभ, बरगद की बरोहें, आंवला के रस में घोट दें, दो-दो रत्ती की वटी बना लें। प्रातः-शाम दूध से सेवन करें। यह प्रमेह, धातु क्षीणता, शीघ्र पतन, कमजोरी, मूत्र कृच्छ, यक्ष्मा को नष्ट करने वाला है।

सदाबहार वटी

प्रवाल भस्म, वंग भस्म, लौह भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, चांदी भस्म, अभ्रक भस्म, रस सिंदूर एक-एक तोला, शिलाजीत दो तोला, में घोट दें फिर केशर, जायफल, अकरकरहा, लौंग, इलायची, दालचीनी, शीतल चीनी छह-छह माशे के चूर्णकर मिला दें। आंवले के रस में घोटकर दो-दो रत्ती की वटी बना लें। प्रातः-शाम दूध से सेवन करें। प्रमेह, धातु क्षीणता, शीघ्र पतन, निर्बलता को नष्ट करके पुरुषत्व को बढ़ाती है।

कामेश्वर मोदक

जायफल, जायपत्री, लौंग, रूमा, मुस्तगी, चीनिया कपूर, अकरकरहा,

दालचीनी, अगर-तगर, वंशलोचन, खस कपूर, पीपर, सोंठ, केवांच बीज, मूसली, सालम, मिश्री, सेमर का गोंद, इलायची, बादाम, अखरोट, खीरा, ककड़ी के छिले बीज, मगज, तालमखाना बीज, बंद, गोखरू, नाग केशर, सुगंध वाला स्याह, मसूर मोचरस, मुलहठी, विदारी कंद, जीरा, धनिया, कमल गट्टा दो-दो तोले लेकर कूट छानकर चूर्ण बनायें। 2 तोला शिलाजीत घोलकर मिला दें। एक सेर घी मिला दें, डेढ़ सेर मिश्री की चाशनी बनाकर लड्डू बांध लें। एक-एक छटांक दूध के साथ प्रातः-शाम खायें। यह पुरुषों के धातु के रोग, प्रमेह, शीघ्र पतन, कमजोरी, नपुंसकता को नष्ट करने वाला है।

माल कांगनी पाक

माल कांगनी, केवड़े के बीज, अकरकरहा दो-दो तोला, लौंग एक तोला, केशर छै माशे, असगंद छह माशे, पिस्ते के बीज दो तोला, तिल पांच तोले, सब पीस लें। पांच मुर्गी के अंडों की जर्दी में भिगो दें, 10 तोला घी में भून लें, मिश्री, शहद मिलाकर पावभर चाशनी बनाकर मिला दें। एक या दो तोला खाकर दूध पियें। यह बल-वीर्य वर्धक, मैथुन शक्ति बढ़ाने वाला है। वृद्ध को भी जवान बनाता है।

कामदेव गुटका

सफेद मसूर, स्याह मसूर, रतन जोत, सेमर का गोंद, बबूल का गोंद, शतावर, मोचरस, समुद्र सोख, ताल मखाना, बीज बंद, लाजवंती का बीज, सका छुल, मिश्री, अखरोट, पिस्ता, धनिया, गोखरू, चिरौंजी, मगजतर बूज, मगज कद्दू, मगज खीरा, ककड़ी, धवा के फूल सब सवा-सवा तोला लेकर चूर्ण बनाकर छान लें। जायफल, जायपत्री, उटंग बीज, लौंग, दालचीनी, सेल खरी, इलायची, चीनिया, गोंद छै-छै माशे लेकर कूटकर छानकर मिला दें। मिश्री चूर्ण कर मिला दें, नित्य प्रातः शाम एक-एक तोला खाकर दूध पियें। घी मिलाकर खायें। इससे प्रमेह, धातु पतन, कमजोरी, स्वप्न दोष धातु के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं।

हरि शंकर रस

हिंगुल का निकाला पारा, अभ्रक भस्म एक-एक तोला लेकर आंवले

के रस की 7 भावना देकर घोटें। एक-एक रत्ती की वटी बनायें। प्रात:शाम एक-एक वटी खाकर दूध को पियें। यह दवा प्रमेह, धातु क्षय, कमजोरी, शीघ्र पतन, कमजोरी को दूर करने वाला है।

वंगेश्वर रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक एक-एक तोला लेकर घोटें, कज्जली बनायें फिर अभ्रक भस्म 1 तोला, सोने के वर्क 3 माशा, शुद्ध मोती 3 माशा, केशराज के रस से घोटें, वंग भस्म एक तोला मिला दें। घोट दें, दो-दो रत्ती की वटी बनाकर दूध से सेवन करें। इसका प्रयोग प्रमेह, धातु क्षय, कमजोरी, शीघ्र पतन, स्वप्न दोष, सर्व कमजोरी को नष्ट करने वाला है।

प्रमेह गज केशरी

इलायची, शिलाजीत, केशर, बीज बंद, जायफल, जायपत्री, अकरकरहा छह-छह माशे लेकर चूर्ण करें। अभ्रक भस्म, वंग भस्म, लौह भस्म, रस सिंदूर छह-छह माशे मिलाकर सेमर, मूसर के रस में घोट-घोटकर दो रत्ती की वटी बनायें। दूध से प्रात:शाम खाएं तो प्रमेह रोग, धातु पतन, क्षीणता, नपुंसकता को दूर कर देती है।

जवारिश शक्ति वर्धक

मगज बादाम, पिस्ता, अखरोट, किसमिस, मुनक्का, आध पाव चिलगोजा, मगज, फिदक पोस्ता, मगज कद्दू, मगज पेठा, मगज तरबूज, मगज कुसुम, मगज बिनौला, टके-टके भर लें। वंशलोचन, इलायची, डोंडा रूम, मुस्तगी, तूदरी सफेद, तूदरी लाल, बबूल का गोंद, वहमन सफेद, वहमन लाल, सालम, पंजेदार सफाकुल, मिश्री, मूसली, लाजवन्ती बीज, शतावर, सौंफ, असगंध—सब एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनायें। बंग एक तोला, केशर छह माशा, कस्तूरी एक माशा, शिलाजीत दो तोला, वर्क सोना, 16 वर्क चांदी 25, घोटकर मिला दें। दो सेर शक्कर की चासनी बनाकर एक छटांक के लड्डू बांधें। यह पुरुषों के धातु रोग, कमजोरी, शीघ्र पतन, प्रमेह, स्वप्न दोष, दिल की धड़कन, सिर के चक्कर आना आदि समस्त रोग विनाश करने वाली है।

किसमिस पाक

किसमिस डेढ़ पाव को पीसकर एक सेर में घी में कड़ाही में डालें। खोया आधा सेर डालें, पकायें। जब यह सुर्ख हो जाये उतार लें। फिर मोचरस, सालम, मिश्री, समन्दर सोख, श्वेत मूसली, स्याह मूसली, असगंध, ताल मखाना, बीज बंद यह दो-दो तोले पीसकर छानकर मिला दें, शतावर 10 तोला पीसकर छान लें। सोंठ कुलीजन एक-एक तोला पीसकर छान लें, मिला दें, वंग भस्म एक तोला डाल दें, दो सेर मिश्री की चाशनी करके मिला दें। दो-दो तोले सुबह-शाम दूध के साथ खायें। महान शक्ति वर्धक, धातु क्षीणता, कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रमेह को नष्ट करके बलवान बनाने वाला पाक है।

चन्द्रोदय मकरध्वज योग

सोने के वर्क एक तोला, शुद्ध हिंगुल आठ तोला, शुद्ध आंवला सार, गंधक छह तोला, घी कुवार के रस में घोटें। 3 दिन आतशी शीशी में कपरौटी करके बालुका यंत्र से पकायें। मंद-मंद आंच दें। जब निर्धूम हो जाये, शीशी तोड़कर निकाल लें। यह बल वीर्य वर्द्धक, कफ विकार, हृदय की कमजोरी को नष्ट करने वाला है।

मकरध्वज वटी

जायफल, लौंग, इलायची, कपूर, केशर, कस्तूरी, अकरकरहा 3-3 माशे, चन्द्रोदय 2 तोला मिलाकर आंवले के रस से एक-एक रत्ती की वटी बनायें। यह समस्त वीर्य दोष, प्रमेह, कमजोरी को नष्ट करता है।

हिंगुल योग

हिंगुल 3 तोला, शुद्ध लोहे की कटोरी में रखें, नींबू का रस भर दें ताकि हिंगुल डूब जाये। आग में रखकर पकायें, उबाल आने पर और रस डाल-डालकर पकाते जायें। तीन माशे नौसादर पीसकर घोंट दें, फिर जायफल, लौंग, केशर, अकरकरहा, जायपत्री, इलायची सब पीसकर मिला दें। वंग भस्म, लौह भस्म, शिलाजीत, प्रवाल भस्म, एक-एक तोला मिला दें। झड़वेरी के बेर के प्रमाण गोली बनायें। प्रातःशाम एक-एक वटी

दूध के साथ सेवन करें। प्रमेह, स्वप्न दोष, कमजोरी, धातु क्षय के समस्त वीर्य दोष नष्ट होते हैं।

नोट—यदि दवा वादी करे, फायदा न हो तो मत्ल सिंदूर डेढ़ माशे मिलाकर घोंटकर फिर गोली बना लें तो पूर्ण लाभ प्राप्त हो जायेगा। नपुंसकता, कमजोरी को नष्ट कर देगी, इन वटियों को दूध से खायें, खाली पेट न खायें।

मधुमेह योग

शिलाजीत दो तोला, वंग एक तोला, प्रवाल भस्म एक तोला, मिलाकर आंवला के रस की भावना देकर सात बार घोट दें। चार रत्ती की वटी बनायें। प्रातः-शाम दूध के साथ सेवन करें, मधुमेह, धातु पतन, प्रमेह, क्षीणता को दूर कर देती है।

गंधामृत रस

शुद्ध पारद 2 तोला, शुद्ध गंधक 2 तोला मिलाकर घोट दें। फिर घी कुवार के रस में घोंट दें। सुखाकर सरवा संपुट में रखकर भस्म कर दें। फिर घी 1 तोला, शहद आठ आनेभर में घोटकर गोली बनायें। दो-दो रत्ती की मात्रा दूध के साथ सेवन करें। नीचे लिखा चूर्ण रोज खायें।

चूर्ण

छाया में सुखाया हुआ जड़ सहित घमिरा का चूर्ण एक छटांक, त्रिफला चूर्ण एक छटांक, दोनों मिलाकर 10 तोला शक्कर मिला दें। एक तोला नित्य प्रातः-शाम खायें तो मनुष्य जरा-मृत्यु से मुक्त हो जाता है।

पुष्य धन्वारस रस

शीशा भस्म, अभ्रक भस्म, रस सिंदूर, वंग भस्म एक-एक तोला लेकर धतूरे के रस, भांग के रस, सेमर के गाध के रस से घोटकर दो या दो रत्ती मलाई मक्खन से मिश्री मिलाकर नित्य प्रातः-शाम खाकर दूध पियें। यह शक्तिवर्द्धक, आयु को बढ़ाने वाला, बल वीर्य को बढ़ाने वाला है।

नामर्दी के योग

1. केवांच की जड़—यह खजोहरा है—इस जड़ को एक आनेभर सूखी पीस कर चूर्ण करें। एक आनेभर दूध के साथ दिन-रात में 4 बार पिएं। नामर्द मर्द बन जायें। एक भी दिन बिना संभोग किये चैन न पड़ेगा।

2. ब्रह्मदंडी (ऊंट कटेरा) की कच्ची कोपल छै माशे दूध से पीसकर 3 दिन पियें। यह रोग (नपुंसकता) मिट जायेगी दवा कड़वी लगने लगेगी, तीन ही दिन में मर्द बन जायेगा।

माल कांगनी योग

माल कांगनी चार आने भर, केशर पिस्ते के बीज चार आने भर घमिरा के रस में भिगो दें, शाम को प्रातः पीस लें, एक सेर दूध का खोया कर लें। सब डालकर पका लें। सुर्ख होने पर उतार लें, शक्कर आध सेर, शहद आधपाव, मिला दें। यह प्रथम दिन एक तोला फिर रोज एक-एक तोला बढ़ाते जायें। 40 दिन दूध छुहारे का डाला पका हुआ पियें। घोड़े के समान बलवान, वृद्ध भी जवान हो। काम शक्ति चौगुनी हो, यह योग 40 दिन के लिये नहीं होगा, फिर से बना लें।

करेंछ पाक

करेंछ बीज 3 सेर लेकर जल से पकायें और उनके बीज निकालें फिर पीसकर पीठी बना लें। पांच सेर दूध का खोया बनायें। उसी में पीठी भी डाल कर पका लें। गाढ़ा होने पर 2 सेर घी डालकर पकायें। जब पक कर दानेदार हो जाये, उतार लें फिर तज, पीपल, मिर्च, तगर, जायफल, आंवला, चंदन, लौंग, इलायची, हर्रे-बहेड़ा, सोंठ, वंशलोचन, शतावर, अगर, मूसली, दो पैसा भर, सवा तोला लेकर चूर्ण बनायें और जायपत्री, तालमखाना, बीजबंद, रूमा मुस्तगी, सालम, पंजेदार, लाजवंती, बीज दो-दो तोला लें। चूर्ण बना लें, सब खोया में मिला दें, शक्कर दो सेर की चाशनी बनाकर रख दें। केशर 3 माशे, अभ्रक छह माशे, वंग दो-दो तोला डालकर मिला दें। यह पाक एक-एक छटांक नित्य दूध से सेवन करें। यह प्रमेह, धातु पतन, क्षीणता, कमजोरी, स्वप्न दोष को नष्ट करके कांति बढ़ाता है।

कुष्मांड पाक

पके हुए कुम्हड़े का गूदा 5 सेर निकाल कर पानी में उबालें और पीस कर पीठी बना लें व ढाई सेर घी डालकर कड़ाही में पीठी डालकर पकायें। जब सुर्ख हो जाये उतार लें, फिर आंवला, हर्रे-बहेरा, सोंठ, मिर्च, पीपर, तज, इलायची, वंशलोचन, अगर-तगर, चंदन का बुरादा, खस, शतावर, मूसली, जायफल, अकरकरहा, ताल मखाना, अखरोट, बादाम, चिरौंजी, नाग केशर, नाग वला, निसोत, असगंध, पिपरामूर, कमलगट्टा, कंकोल, बिहारी कंद, गोंद, बबूल, सेमर का गोंद, स्याह मूसर, सिंघारा गज पीपर, सालम, मिश्री, सफाकुल, मिश्री, कचूर, तिल, उडग बीज, गोखरू, के बीज, शुद्ध दूध में पके 2-2 तोला कूटकर चूर्ण करें। पीठी में मिला दें, शक्कर 2½ सेर की चाशनी बनाकर कड़ाही में मिला दें। वंगभस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म एक-एक तोला मिला दें। केशर छह माशे पीसकर मिला दें, एक छटांक नित्य प्रात:-शाम खायें, दूध पियें, यह पुरुष के धातु के विकार, प्रमेह, स्वप्न दोष, रक्त, पित्त रोगों को हरण करने वाला है। कांति वर्धक है। पुरुषत्व बढ़ाने वाला है।

प्रमेह नाशक वटी

प्रवाल भस्म, हाजरत आनेभर, यहूद भस्म, मोती भस्म 8-8 आनेभर वंग भस्म एक तोला को गुलाब जल में घोट कर दो रत्ती मलाई-मिश्री से दोनों वक्त खायें। प्रमेह, धातु क्षय, को नष्ट करने वाला है।

वंग भस्म नाग भस्म विधि

शुद्ध रांगा अथवा शीशा कड़ाही में डालकर पिघलायें। इमली और पीपल की चैली का चूर्ण बनाकर थोड़ा-थोड़ा कड़ाही में पिघले रांगे में डालते जायें, पीपल के डंडे से घोटते जायें, सब भस्म के रूप में हो जायेगा। इसी को वंग भस्म और शीशे की भस्म को नाग भस्म कहते हैं। यह भस्में बहुत बलिष्ट, धातु वर्धक, प्रमेह, स्वप्न दोष, को नष्ट करने वाली हैं। मक्खन, मिश्री से एक या दो रत्ती सेवन करके दूध पियें।

रजत चांदी की भस्म

शुद्ध चांदी को रेती से रेत कर चूर्ण करें, फिर बबूल की कली के गूदे और पतियों के रस से घोट दें। सरवा संपुट में रखकर भट्ठी में रख दें, भस्म हो जायेगी। इसी प्रकार तीन बार भस्म करें, यह वलवीर्य वर्धक, प्रमेह, धातु विकार को नष्ट करने वाली कांति वर्धक भस्म है।

स्वर्ण भस्म

1. शुद्ध साने के वर्क सोनार से बनवा लें, फिर वकायन की हरी छाल पीसकर लुगदी बनायें, पत्रों में लपेट. दें, सरवा संपुट में रखकर भट्ठी में जलाकर भस्म करें। 3 बार में भस्म तैयार हो जायेगी।

2. कांटे वाली चौराई 12 तोला लेकर कूट-पीसकर हरी ही की लुगदी बनाकर सोने के पत्रों में पलेट दें। भट्ठी में सरवासंपुट से भस्म कर दें। 3 बार में उत्तम भस्म बन जायेगी।

नोट—दूसरी तीसरी पुटें देने में लुगदी की जरूरत नहीं है, सिर्फ रस निकाल कर घोटकर गोला बनाकर परैयों के बीच रखकर भस्म कर दें।

मात्रा—आधी रत्ती से एक रत्ती मक्खन, मिश्री से खायें। इसके खाने से शरीर का वर्ण स्वर्ण के समान हो जाता है।

यह वलवीर्य वर्धक है, क्षयरोग को नष्ट करने वाली है।

नीला थोथा भस्म

रीठे के छिलके पावभर कूट डालें, पन्द्रह तोले मदार के दूध में मिला लें। फिर दो टिकिया बनायें, एक टिकिया में शुद्ध नीला थोथा पीसकर मदार के दूध से घोट कर गोला बनाकर रख दें। दूसरी टिकिया उपर से रखकर गोला बना लें। सरवा संपुट में रखकर भस्म कर दें, श्वेत भस्म होगी, थोड़ी-सी दही में डालकर देख लें। यदि हरियाली न दे तो ठीक है, वरना फिर इसी तरह से दूसरी आंच दें, तब शुद्ध भस्म होगी। यह उपदंश (आत्तशक गर्मी) को नष्ट कर देती है। आधी रत्ती खायें।

फौलाद भस्म

शुद्ध फौलाद चूर्ण, रेती का रेता हुआ, शुद्ध संखिया 1-1 तोला,

कपूर 1½ माशे, घी कुवार के रस से घोट्कर गोला बनाकर सरवा संपुट से भट्ठी में भस्म करें। फिर हरताल शुद्ध 1 तोला, कपूर 1½ माशा, घी कुवार के रस से घोटकर गोला बनाकर सरवा संपुट से भस्म करके फिर शुद्ध हिंगुलोय पारद 1 तोला, कपूर 1½ माशा, घी कुवार के रस में घोटकर सरवा संपुट से भस्म कर दें। फिर शुद्ध आंवला सार, गंधक 1 नोला, कपूर 1½ माशा घोटकर सरव संपुट से भस्म तैयार करें। इसी प्रकार घी कुवार से घोटकर 12 बार आंच और दें। उत्तम भस्म तैयार होगी। दो परैयों का जो संपुट बनाया जाये उसमें कपड़ मिट्टी अच्छी प्रकार से कर दें वरना दवा उड़ने का भय रहता है। मात्रा आधी रत्ती से 1 रत्ती मक्खन-मलाई से सेवन करें। यह पुरुषों के वीर्यदोष मिटाकर वलवान बनाती है। नामर्दी, कमजोरी को दूर करके नौजवानी की लहरें उत्पन्न करती है। संतान उत्पति का कारण बनती है। इसमें घी, दूध का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिये। यह उत्तेजक भस्म है।

मोमिया सिंगरफ

यह भस्म बहुत ही उत्तेजक भस्म, काम वर्धक है। दूध, घी को पाचाती है। चेहरा सुर्ख बनाती है। 10-12 दिन में गया गुजरा नपुंसक मर्द बन जाता है। बाहरी दोष यदि न हो तो भीतरी दोष ठीक कर देती है।

पहले जो नीला थोथा भस्म बनाने की विधि लिख चुके हैं वही भस्म 1 तोला, 10 तोला मदार के दूध में डालकर 7 दिन रखे रहें फिर छानकर दूध निकाल लें। अब एक परैयों में सिगरफ शुद्ध को रखकर दूध छने हुये को डालते जायें। जब सब दूध पड़ जाये सिंगरफ नाम हो जाये तब उतार कर शीशी में रख लें। 1 चावल से 2 चावल मलाई में खायें।

सिंगरफ भस्म न. दो

काले तिल पानी में पिसे डेढ़ पाव, सिंगरफ शुद्ध 5 तोला, घी एक पाव—सब कड़ाही में आधे तिल की कोचइया रखें। उसके उपर सिंगरफ शुद्ध (हिंगुल) रख दें। उपर से आधे तिल की कोचइयां रखकर सिंगरफ को ढक दें, बंदकर दें। अब घी कड़ाही में डाल कर चूल्हे में चढ़ा दें, खूब तेज आंच पर जलायें। यहां तक कि कड़ाही जल उठे। यदि

न जले तो उपर से आग लगा दें। जब सब घी जल जाये तब उतार लें, सावधानी से टिकिया खोलकर सिंगरफ निकाल लें, पीसकर शीशी में रख लें। यह भस्म 1 से 2 रत्ती मक्खन, मिश्री के साथ खायें। धातु पतन, कमजोरी, मूत्र कृच्छ, प्रमेह, नामर्दी को नष्ट करत्ती है।

नामर्दी के प्रयोग

इन्द्रिय दृढ़करन तिला

1. केवांच (खजोहरा की जड़) 1 आनाभर मुख में डालकर चबायें। रस चूसते जायें, स्त्री के साथ संभोग करें, जब तक रस चूसोगे, वीर्य स्खलित नहीं होगा, पूर्ण स्तम्भन होगा। जब थूक दोगे तब वीर्य स्खलित होगा।

2. इन्द्रायण फल (इंडोरन) के बीज संभोग से आधे घंटे पूर्व मुख में रख लें फिर संभोग करें पूर्ण स्तम्भन होगा। जब दवा थूक दोगे तब वीर्य स्खलित होगा।

3. लाजवन्ती की जड़ 1 आनाभर संभोग के पहले मुख में डालकर चबायें। रस चूसें फिर संभोग करें। पूर्ण स्तम्भन होगा। दवा थूक देने पर वीर्य स्खलित होगा।

4. इमली के बीज आध तोला, बबूल का गोंद आध तोला, करुई लौकी के बीज आध तोला, अफीम आठ आनेभर—सब पीसकर जल से एक-एक रत्ती की गोली बनायें। संभोग के आधे घंटे पहले 2 गोली खाकर गर्म दूध पियें फिर संभोग करें तो पूर्ण स्तंम्भन होगा। रति क्रिया में संपूर्ण आनन्द की प्राप्ति होगी।

नौ रतनी शक्ति वर्धक योग

1. नाग भस्म, 2. वंग भस्म, 3. अभ्रक भस्म, 4. लौह भस्म, 5. स्वर्ण भस्म, 6. चांदी भस्म, 7. हिंगुल भस्म, 8. शिलाजीत—सब छह-छह माशे, मत्ल सिंदूर 1½ माशे, केशर 6 माशे, सब मिलाकर जायफल, जायपत्री, लौंग, इलायची, अकरकरहा आठ आनेभर—सब पीसकर केशर पीसकर आंवला का रस डालकर खूब घोटें फिर भस्म भी डाल दें। अफीम 6 माशे डाल दें, रस डालकर घोटकर एक-एक रत्ती की वटी बनायें। दूध से खायें, मक्खन-मलाई में मिश्री मिला दें, यह पुरुषों के

वीर्य दोष, प्रमेह, क्षीणता, कमजोरी, शीघ्र पतन, स्वप्न दोष को नष्ट करने वाला है। पुत्र उत्पन्न कराने वाला है। यदि संभोग से आधे घंटे पूर्व मलाई से खाकर गर्म दूध पी लें और बाद में संभोग करें तो पूर्ण स्तम्भन करने वाला है। काम शक्ति में उत्तेजना पैदा करता है।

कस्तूरी योग नामर्दी पर

कस्तूरी, केशर, त्रिवण, लौह भस्म, प्रवाल भस्म, अभ्रक भस्म, मत्ल, सिंदूर, जायफल, जायपत्री, अकरकरहा—सब दो-दो आना लेकर पीसकर भस्म में मिला दें। भांग के रस से घोटकर दो-दो रत्ती की वटी बनायें। प्रात:शाम मक्खन मिश्री से सेवन करें। दूध, घी खूब खायें। यह नामर्द को मर्द बनाने वाला प्रमेह, स्वप्न दोष, कमजोरी, धातु क्षीणता, शीघ्र पतन को नष्ट करने वाला है।

तिला

मलमल की 1 पट्टी 2 अंगुल चौड़ी थूहर के दूध में 3 बार भिगो दें फिर माल कंगनी का तेल उसके उपर डालकर इन्द्रिय में वही बांधें। आगे का भाग खुला रखें। इससे इन्द्रिय में उत्तेजना पैदा हो जायेगी, और भी योग पहले लिखे गये हैं।

कौड़ी भस्म

पीली थीसा कौड़ी 10 तोला पीसकर मदार के दूध में घोटें। गोला बनाकर सरवा संपुट से भस्म कर दें, श्वेत भस्म होगी। यह उष्ण, वात, धातु क्षीणता, कमजोरी, स्वप्न दोष, प्रवाहिका, सोम रोग, कर्ण पीड़ा पर रामबाण है। 1 रत्ती से 2 रत्ती मक्खन से खायें। कर्ण शूल में 2 रत्ती कान में डालकर नींबू का 4-5 बूंद अर्क डाल दें। कठिन-से-कठिन दर्द को नष्ट करती है। प्रवाहिका में नींबू में डालकर चूसें, 3-4 बार चूस लें तो पेचिश बंद कर देती है।

नपुंसकता पर मृगांग योग रसायन

शुद्ध हिंगुल का निकाला पारद 1 तोला, वंग भस्म 1 तोला को

खरल में डाल कर घोट दें। 1 तोला नौसादर डालकर शुद्ध आंवला सार गंधक 1 तोला डालें। सब एक में घोट दें। 1 से 2 रत्ती मक्खन मिश्री के साथ खायें, दूध पियें, दूध आध सेर में आठ आनेभर खूबकला पीसकर मिश्री मिलाकर पीयें। यह क्षीणता, कमजोरी, नपुंसकता, प्रमेह, शीघ्र पतन का अमृत है। इससे जवानी की उमंगें दौड़ने लगती हैं, मनुष्य मोटा-ताजा हो जाता है।

मृगांग योग

शुद्ध पारद, शुद्ध रांगा, शुद्ध आंवला सार, गंधक 2-2 तोला लें। पहले रांगा पिघलाकर हंडियों में उसके उपर परैया रख दें जिसमें पेंदी में छेदकर दें। इस छेद से पारा रांगा में मिला दें, पारा उड़ने वाला है, उछलता है, इससे सावधानी से डालकर फौरन छेद कपड़े की पुटकी से बंदकर दें। ठंडा होने पर रांगों को रेती से रेतकर रेता कर दें। पानी डालकर धोयें। कई बार ताकि कालापन दूर हो जाये। फिर पानी में नमक मिलाकर घोटते धोते जायें, जब कालापन दूर हो जाये तब गंधक टके भर, नौसादर 1 तोला डालकर घोट दें। बालुका मंत्र से आतशी शीशी में भरकर 4-5 घंटे मंद-मंद आंच दें फिर 3-4 घंटे तेज आंच दें, शीशी कपड़ मिट्टी कर दें, मुंह खुला रखें, निर्धूम होने पर निकाल लें, शीशी तोड़कर पीसकर रख लें। मलाई, मिश्री के साथ खायें, उपर से दूध पियें। मात्रा दो रत्ती।

छब्बीसवां अध्याय

स्तम्भन शक्ति वर्धक योग

जाफरान वटी

केशर, लौंग, अकरकरहा, सोंठ, पीपल, जायफल, जायपत्री, चंदन का बुरादा 3-3 माशे लेकर पीसकर छान लें। अफीम 1 तोला मिला कर पानी में घोट दें। दो रत्ती की वटी बनाएं सहवास से 1 घंटे पहले 1वटी खाकर गर्म दूध पीयें, फिर संभोग करें। स्तंम्भन शक्ति बढ़े, ठंडा दूध या शरबत पीने पर वीर्य स्खलित होगा। यह औषध काम शक्ति को बढ़ाने वाली है।

जासीफलादि वटी

जायफल, जायपत्री, स्वेत कनेर की छाल, समुद्र सोख, खुरासानी, अजवाइन, पीपल 3-3 माशे लेकर चूर्ण बनाकर छान लें। अफीम 1 तोला मिलाकर पानी से घोटकर 2-2 रत्ती की गोली बनायें। 1 गोली संभोग से 1 घंटे पहले खाकर गर्म-गर्म दूध पियें फिर संभोग करें तो पूर्ण स्तम्भन होगा, काम शक्ति बढ़ेगी, ठंडा दूध या शरबत पीने पर वीर्य स्खलित होगा।

कस्तूरी वटी

केशर 3 माशा, लौंग 6 माशा, जायफल 9 माशा, अफीम 1 तोला, कस्तूरी 3 रत्ती मिलाकर जल में घोट दें। एक-एक रत्ती की वटी बनायें, संभोग के 2 घंटे पूर्व खाकर गर्म दूध पियें, पीछे संभोग करें, चौगुनी काम शक्ति बढ़ाये, बलवान हो। स्तम्भन शक्ति बढ़ाये। ठंडा दूध, आंवले का रस पिये, वीर्य स्खलित हो।

विविध जड़ी बूटियां

1. केवांच (खजोहरा) की जड़ चार आने भर कूटकर मुख में डाल लें, चबा-चबाकर रस चूसें, संभोग करें, जब तक रस चूसोगे स्तम्भन रहेगा।

2. इन्द्रायन (इडोरन) के फल के बीज मुंह में डाल लें, आधे घंटे पहले फिर संभोग करें, पूर्ण स्तम्भन होगा।

3. लाजवंती की जड़ एक आनेभर मुख में डालकर रस चूसें, 1 घंटे पहले फिर संभोग करें, पूर्ण स्तम्भन होगा।

4. इमली के बीज छीले हुये 8 दाने, लौकी करुई के बीज 12 दाने, बबूल की गोंद चार आनेभर पीसकर पानी से 1 रत्ती की गोली बांध लें, संभोग के एक घंटे पहले 1 वटी खाकर गर्म दूध पियें, फिर संभोग करें, पूर्ण स्तंभन होगा, ठंडे शरबत, दूध के पीने से वीर्य स्खलित होगा।

5. स्वर्ण क्षीरी (घमोई) के बीज एक दिन पहले एक रत्ती दूसरे दिन दो रत्ती इसी प्रकार 8 दिन तक रोज 1 रत्ती बढ़ाकर पानी से खायें। 9 वें दिन से 1 माशा रोज 40 दिन तक खायें। ब्रह्मचर्य रहे, पूर्ण संतम्भन शक्ति बढ़ेगी। इसके सेवन करने वाला ही इसके गुणों का वर्णन कर सकता है।

6. छछूंदर का अंडकोष चमड़े में लपेटकर कमर में बांधें। जब तक कमर में दवा बंधी रहेगी वीर्यपात नहीं होगा, जब छोड़ दिया जायेगा तब वीर्य स्खलित हो जायेगा।

सताईसवां अध्याय

मूत्र-कृच्छ्र, सुजाक योग

1. वकाइन के फल गुठली सहित पीस लें और 5 तोला चूर्ण बनायें। आने भर प्रातःशाम रोज खायें, दूध पीयें, एक हफ्ते में सुजाक (मूत्र-कृच्छ्र) दूर हो जायेगा। यदि पेशाब में कड़क, जलन ज्यादा होती हो तो एक आना भर हर सूराक में कलमी आठ आनाभर मिश्री मिला दें।

2. फिटकिरी पिसी हुई 10 तोला, कलमी शोरा 1 छटाक पीस लें। एक परैया या सकोरे में आधी फिटकिरी भर दें, उसके उपर कलमी शोरा डाल दें, फिर फिटकिरी उपर डाल दें। मुंह बंद करके कंडों के अंदहरे में रख दें, शीतल होने पर निकाल कर पीस लें, शीशी में रख लें। 4-5 रत्ती शक्कर के साथ फांक लें, शरबत पियें या दूध, मिश्री का पान करें, सुजाक दूर हो जायेगा।

3. बिरोजा सूखा एक तोला, शीतल चीनी एक तोला, इलायची एक तोला, सफेद चंदन एक तोला पीसकर चूर्ण बना लें। 6 माशे कलमी शोरा पीसकर मिला दें। एक या दो माशे दूध, मिश्री से दिन-रात में तीन बार खायें, सुजाक दूर हो जायेगा, इन्द्रिय की कड़क, जलन नष्ट हो जायेगी।

श्वेत पर्पटी मूत्र कृच्छ्र पर

1. कलमी शोरा 2 तोला पानी में घोलकर छान लें, फिर किसी कटोरी में पानी भरकर आग पर चढ़ा दें। 1 तोला फिटकिरी पीसकर उसी में डाल दें और पानी डाल दें। पकायें जब गाढ़ी लेई बन जाये तब एक केले के पते में सब दवा निकाल कर रख दें। दूसरा पत्ता उपर् से रखकर दवा दें। पर्पटी तैयार हो जायेगी। इसकी मात्रा 4 से 6 रत्ती तक है। खाकर दूध, मिश्री-पानी का शर्बत 1 सेर बनाकर पी

जायें, सब गर्मी पेशाब के द्वारा निकल जायेगी। 3-4 बार दवा दिन रात में सेवन करना चाहिये, इन्द्रिय की कड़क-जलन सब दूर हो जायेगी।

गुर्दे की पीड़ा पथरी का प्रयोग

हजसल यहूद भस्म 1 तोला, खरबूजा, खीरा, ककरी के छिले बीज 6-6 माशा, कुलथी 6 माशा, गोखरू 6 माशा, सौंफ, अजमोद, बबूल का गोंद 3-3 माशा—सब चूर्ण कर एक-एक तोला दिन में 3 बार खायें, दूध, पानी, मिश्री का शर्बत पीयें। चार रत्ती कलमी शोरा डालकर पथरी दूर होगी।

शिलाजित्यादि चूर्ण

1. शिलाजीत कवाब, चीनी, रेबन्द, चीनी, जवाखार, कलमी शोरा, कतीरा गोंद, गेरू, भुनी फिटकरी, राल, चन्दन का बुरादा, गूरिज सत, विरोजा सत 6-6 माशा लेकर चूर्ण बनाएं। 3 से 6 माशा दूध, मिश्री से 3-4 बार खायें, मुत्र कृच्छ्र (सुजाक) दूर हो जायेगी।

2. वकायन के फल गुठली सहित पीसकर चूर्ण बनाकर रख लें। 6 माशा दवा प्रातः-शाम दूध से सेवन करें, सुजाक दूर हो जायेगा। मिर्च-मसाला खूब खायें, इस योग में परहेज नहीं है।

पथरी के प्रयोग

1. दो तोला चौलाई के पत्ते पानी में पीसकर छान लें, आधपाव शरबत बना लें, 1 माशे जवाखार डालकर पियें तो पथरी रेती बनकर पेशाब से निकल जायेगी।

2. जवाखार 2 माशे, फिटकरी भूनी 2 माशे—दोनों मिश्री से फांक कर दूध पियें। पथरी रेत बनकर निकल जायेगी, कलमी शोरा 4 रत्ती मिला दें, पेशाब खुलकर होगा।

3. पाषाण भेद आधपाव पानी में पीसकर छान लें। 3 सेर पानी बनाएं फिर 1 तोला जवाखार डाल दें अब जवाखार 2 माशे खाकर आधा सेर पानी पियें। 3-3 घंटे में कई बार दवा खायें, यही पानी पित्ता जाये, खाना कुछ न खाये, दूध, मिश्री पिया करें, इससे पथरी कट कर पेशाब से निकल जाती है।

गुरदे की पीड़ा पर

बर्फ का पानी ठंडाई अधिक पीने से गुरदे में पीड़ा होने लगती है। जो गुरदे से पीठ की ओर या अंडकोषों की तरफ चलती है। पेशाब की इच्छा बार-बार होती है परंतु बूंद-बूंद आता है। इसका प्रयोग नीचे दर्ज है।

1. मेहंदी के पत्ते 6 माशे लेकर आधे सेर पानी में पकायें, छानकर गर्म-गर्म पिलायें।

मूली का रस आधा पाव, मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पियें, दर्द गुरदा बंद होता हैं। पेशाब भी खुलकर आता है।

2. फिटकरी, कलमी शोरा, सज्जीखार, सोहागा, नौसादर एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनायें। 3 माशे 2-3 बार मिश्री जल से खायें। दर्द बन्द हो जायेगा। तीन-चार दिन तक सेवन करें यदि पथरी बड़ी भी होगी तो टुकड़े-टुकड़े होकर निकल जायेगी।

अट्ठाइसवां अध्याय

उपदंश योग

उपदंश नाशक वटी

रीठे की काली-काली बीजी निकाल दें, चूर्ण बना लें, शहद से बेर के बराबर गोली बना लें, सुबह-शाम एक-एक गोली दही के साथ खायें अथवा पानी ही से खायें। यह उपदंश, कंडू, दाद, चम्बल चर्म रोगों को नष्ट करने वाली है। रक्त शोधक है।

उपदंश नाशक जड़ी

उपदंश वाले रोगी को प्रथम जुलाब देकर कोष्ठ शुद्धि हिंगुल एक तोला, कच्चा सोहागा दो तोला, जमाल गोटा चार तोला पीसकर 20 निम्कुप्रों के रस से घोंटे, मिर्च के बराबर गोली बनायें। 1-2 गोली खाकर गर्म दूध घी मिलाकर पीयें दस्त हो जायेगा। पहले दिन खिचड़ी खा लें फिर जुलाब लें। इसके बाद उपदंश की दवा सेवन करें। सत्यानाशी अर्थात स्वर्ण क्षीरी (घमोय की जड़ उखाड़ लायें, पानी से साफ करके पीस लें)। आठ आनाभर छानकर इस रस को पीयें। दवा खाने के बाद चार घंटे कुछ न खायें पानी पी सकते हैं। 11 दिन में रोग नष्ट हो जायेगा, इसमें पथ्य करने की जरूरत है। सिवाय गेहूं की रोटी के संसार की कुछ वस्तु नहीं खायें, घी, रोटी, पानी के सिवाय कुछ नहीं खाना चाहिये।

उपदंश पर धूम्रपान

1. समुद्र फेन एक तोला, पाषाण भेद एक तोला, मोचरस एक तोला पीसकर बकरी के मूत्र में घोंटकर बेर के बराबर गोली बांध लें। एक गोली चिलम में भरकर धुआं का पान करें। सुबह-शाम चावल भात खायें, नमक का परहेज करें और कोई वस्तु न खायें। उपदंश अच्छा हो जायेगा।

2. सिंगरफ छह माशे, माजूफल डेढ़ तोला, पत्थरचटा की जड़ें तीन तोला मिलाकर पीसकर तीन रत्ती की गोली बनायें। चिलम में भरकर धूम्रपान करें, दोनों पहर नमक, तेल, खटाई का परहेज करें, गेहूं की रोटी, घी खाएं, उपदंश दूर हो जायेगा।

3. सिंगरफ छह माशा, अकरकरहा छह माशा, मजीठ, छह माशा, सोहागा छह माशा, अजवाइन छह माशा, तूतिया छह माशा, सबको पीसकर चूर्ण बना लें। 3-4 रत्ती चिलम में भरकर धुआं का पान करें, नमक तेल, खटाई का परहेज करें, गेहूं की रोटी घी खायें, उपदंश का रोग नष्ट हो जायेगा।

4. रूमी सिंगरफ तीन माशे की छह खूराक बनाएं। एक खूराक तम्बाकू में मिलाकर सुबह-शाम हुक्के में धूम्रपान करें। तीन दिन में सब पी डालें, नमक, तेल, खटाई और अन्य वस्तु कुछ न खायें। चना की रोटी, भूने चने, गेहूं, घी, का सेवन कर सकते हैं। भयानक उपदंश को नष्ट करने वाला योग है।

उपदंश पर नीला थोथा भस्म

रीठे के बकले पावभर पीसकर मदार के दूध में तर करें, फिर इसकी दो टिकिया बनायें। एक पैरया में एक रोटी रखकर शुद्ध नीला थोथा दो तोला, मदार के दूध में घोटकर गोला बनाकर रख दें। उसके उपर दूसरी टिकिया ढककर चारों तरफ से गोले को बंद कर दें, दूसरी पैरया उस पैरया में ढककर कपड़ मिट्टी करके बंद करें। भट्ठी में रखकर भस्म कर दें, ठंडी होने पर उतार लें, पीस लें, जरा-सी दही में डालकर देख लें। यदि हरापन न दे तो ठीक है यदि हरापन दे तो फिर मदार के दूध में घोटकर भस्म कर दें। यह भस्म 2 चावल भर मलाई में लपेटकर खा जायें। नमक, तेल, खटाई का परहेज करें। दवा दोनों पहर खायें। चना, गेहूं-चना की रोटी, घी के अलावा कुछ न खायें। इससे उपदंश रोग नष्ट हो जाता है।

रक्त शोधक अर्क

नीम की छाल, कचनार छाल, इन्द्रायन (इडोरन) की जड़ें, बबूल की सिंगरी, भटकटैया की जड़, फूल-फल सब आधे पाव कूट डालें।

गुड़ पावभर डाल दें, पांच सेर पानी में काढ़ा पकायें। सवा सेर जब रह जाये, उतार कर छान लें। एक छटांक रोज सुबह-शाम पियें, दो हफ्ते में मल साफ होकर रक्त साफ कर देगा। फोड़े-फुंसी घाव सब दूर हो जायेंगे।

पंचामृत सत्त्व

शुद्ध रस, कपूर शुद्ध, दाल चिकना, मुरदा संख, शुद्ध तूतिया एक-एक तोला लेकर पीसकर 9 माशे संखिया पीसकर शराब में घोंट दें। डमरू पत्र से ऊर्द्ध पतन करें, सत्व उड़कर उपर की हंडिया के अंदर पेंदी में जम जायेगा, उसको ब्रश या कपड़े से पोंछकर निकाल लें, शीशी में भर लें, चावल भर औषध मलाई में या मुनक्के में लपेटकर निगल जायें। दांतों में नहीं लगे, दूध पियें, खाली पेट दवा नहीं खायें। दोनों वक्त दवा सेवन करें। नमक, तेल, खटाई अन्य वस्तुएं कुछ न खायें। गेहूं, चना पीक, हरे भूने चने खा सकता है। यह पुराने से पुराने उपदंश को नष्ट कर देता है। प्रथम जुलाब देकर मल सफाई करना जरूरी है।

घावों के मलहम

1. कच्चा पारा, नैनिया गंधक, हरताल, मैनसिल, नेनू, पीसकर बराबर मिर्च के 8-10 दाने पीसकर मिला दें। नेनू में घोंट दें, यह मलहम घावों को अच्छा करने वाला है। उपदंश के घावों को नीम के पानी से साफ करके चालमोगरा तेल में रूई तरकर के लगायें। कई बार घाव भर जायेंगे।

2. कत्था, राल मुनी, पीली कौड़ी, तूतिया छह-छह माशे, पुराना जला चमड़ा छै माशा, जली सुपारी, गंधक पीसकर एक तोला मिर्च पीसकर नेनू से मिलाकर घोट दें। थोड़ा-सा चाल मोगरा तेल, फिटकरी आठ आनेभर पीसकर मिला दें। घोंट दें, यह मलहम घावों को अच्छा कर देता है, घाव की सफाई नीम के पानी से करके मलहम लगायें।

उपदंश हर लेप

भैंस की चर्बी गर्म करके पैर में एड़ी के उपर की नसों में जो पीछे होता है मला करें। 7 दिन में उपदंश दूर हो जायेगा।

उन्तीसवां अध्याय

स्त्री रोग चिकित्सा

प्रदर रोग योग

चौलाई की जड़ जिसमें कीड़ा न लगा हो अथवा जड़ न मिले तो पेड़-पत्ते सब टका भर पानी से पीस लें। पाव भर पानी में मिलाकर छान लें, शक्कर मिलाकर पीयें। यह असाध्य प्रदर को बंद करने वाली है। गर्म चीजें नहीं खाना चाहिये। अनुभूत है। और भी जहां इन्द्रियों में मुंह, नाक, गुदा, लिंग से रक्त प्रवाह होता हो बंद कर देगी।

कामनी सुधा रस

राल दो तोला, संजरापत पांच तोला, गेरू एक तोला—सब पीसकर चूर्ण बना लें। दो माशे से एक माशे चौलाई रस अथवा दही, दूध, गूलर के फल के काढ़ा से सेवन कर सकता है। अनोपान के रस या दूध, दही पावभर, शक्कर से पीना चाहिए। अनुभूत योग है, प्रातः-शाम दवा सेवन करें।

अशोकारिष्ट

अशोक छाल 10 सेर 1 मण पानी में काढ़ा पकायें। 10 सेर रहने पर उतार लें, गुड़ 5 सेर डाल दें फिर घवा के फूल, सवा सेर काला जीरा, नागर मोथा, हल्दी, नील कमल, आंवला, हर्रे-बहेरा, आम की गुठली, चंदन 8-8 तोले कूटकर काढ़े में डाल दें। मुंह बंद करके एक मास रख छोड़ें बाद में निकाल कर छान लें, बोंतलों में भर लें, दो तोला नित्य प्रातः-शाम दवा पियें तो प्रदर रोग, रक्त, पित्त, खूनी अर्श को नष्ट करने वाला है।

सुपारी पाक

दक्षिणी सुपारी 15 तोला कूट डालें, महीन करके फिर 2 सेर दूध में पकाकर खोया बनायें। फिर दवा छोटी माई, बड़ी माई, कमर कस एक-एक छटांक पीसकर चूर्ण बना लें। कड़ाही में आध सेर चाशनी कड़ी बनाकर मिला दें। एक-एक छटांक के लड्डू बनाकर प्रातः-शाम दूध से सेवन करें तो स्वेत प्रदर रोग नष्ट हो, यह लघु सुपारी पाक है, तेल, मिर्च, खटाई का परहेज करें।

प्रदर पर अश्वगंधा चूर्ण

अध्सगंध नागोरी पावभर, गोंद बबूल आधपाव पीसकर, छानकर चूर्ण बना लें। मिश्री डेढ़ पाव मिला दें, यह एक तोला चूर्ण घी में या नेनू में मिलाकर खायें। दूध पियें तो प्रदर रोग दूर हो।

बंद रजोधर्म खोलने के योग

1. नीम की छाल आधपाव और गुड़ पावभर को सवा सेर पानी में पकायें, पावभर रहने पर छटांक-छटांक मासिक के टाइम पर पहले से दोनों प्रहर पियें तो बंद रजोधर्म खुल जाता है।

2. अखरोट का छिलका, मूली के बीज, गाजर के बीज, वायविडंग, अमलतास, केलवार का गूदा—सब छह-छह माशे लेकर दो सेर पानी में पकायें। गुड़ पाव भर मिला दें, जब आधा सेर रह जाये, उतार कर छान लें, एक छटांक प्रातः, इतना ही शाम को ऋतु होने के एक हफ्ते पहले पियें तो बंद रजोधर्म जारी हो।

3. एलुवा उसारा, रेवन्द एक-एक तोला लें, केशर 3 माशा, हीरा, कसीस छह माशा, भुनी हींग छह माशा को पीसकर जल से झड़बेरी के बेर प्रमाण गोली बनायें। ऋतु के दो हफ्ते पूर्व से एक गोली प्रातः-शाम गर्म दूध या चाय से खायें, बंद रजोधर्म खुले।

नोट—आनन्द भैरव रस दो रत्ती प्रातः-शाम खायें, बंद रजोधर्म खुलकर आयेगा। अनुभूत योग है।

प्रसूत रोग प्रयोग दशमूलारिष्ट

शालपर्णी, षष्ट पर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, बेल की छाल, अरनी छाल, अरलू छाल, पाटल, गम्भारी छाल, दस-दस तोला, चितावर आध सेर, पुष्कर मूल आध सेर, गुरिज आध सेर, आंवला पावभर, दुरालगा पावभर, वायविडंग आधपाव, हर्रे आधपाव—सब कूट डालें, फिर मजीठ कूट देवदार, वायविडंग, मुलेठी, भारंगी, पुनर्नवा (पत्थरचटा की जड़ें) चाव, जटामासी, प्रिंयगु अनन्त मूल, काला जीरा, निशोथ, रेनुका, रासना, पीपर, कचूर, हल्दी, सोया के बीज, पद्माख, नाग केशर, नागर मोथा, इन्द्र जौ, ककड़ा सिंगी, काकरेली, क्षीर, काकोली, जीवक ऋषभक, मेदा मदा, मेदा, ऋद्धि वृद्धि सब दवा चार-चार तोला लेकर कूटकर 8 गुना दवा से पानी मिलाकर कई बार में पकायें। चौथाई रहने पर उतार कर मटके में भरते जायें, फिर दाख सवा सेर, गुड़ दस सेर, शहद तीन पाव, धबई के फूल आधे सेर—यह भी सब मटके में डाल दें। शीतल चीनी, दालचीनी, इलायची, जायफल, लाल चंदन, लौंग पत्रज, नाग केशर, पीपल, चार-चार तोला कूटकर डाल दें। मटके का मुंह बंद करके एक मास रखा रहने दें। बाद में छानकर बोतलों में भर लें। इसकी मात्रा डेढ़ तोला से दो तोला प्रातः-शाम पीयें। यह प्रसूत रोग, उदर के समस्त रोग, ज्वर, योंनि पीड़ा, बदन व सिर का दर्द, मंदाग्नि, शूल, कास, भगंदर, अर्श वात, व्याधि, कामला, पांडु, स्त्रियों के योनि-दोष सब को नष्ट करने वाली है। यह अरिष्ट बच्चा पैदा होने के बाद नित्य मिलायें तो प्रसूत रोग का भय नहीं रहता। स्त्रियों की तंदुरुस्ती नहीं बिगड़ती। दवाइयां इसी औसत से लेकर कम भी बनाई जा सकती हैं, औसत कम कर लें।

सूतिका रोग लक्षण

स्त्रियों के सन्तान होने के बाद यह रोग स्त्रियों के उत्पन्न होता है, क्योंकि संतान होने के बाद स्त्रियों के पेट में वायु का प्रकोप हो जाता है। शीतांग हो जाता है। कभी-कभी स्त्रियां बेहोश, निमोनिया में दब जाती हैं, इसी से यह प्रथा आमतौर से चली आती है कि सोंठ, पीपल, हल्दी, पिपरामूल, अजवाइन, हींग, हर्रे इत्यादि तथा ताकत की चीजें लोग खिलाते हैं, परंतु बहुत-सी औरतें इन चीजों को खाने में इनकार करती हैं, फेंक देती हैं। इसी कारण से प्रसूत रोग उत्पन्न हो जाता है,

बदन में, सिर में पीड़ा, टट्टी न आना, भूख बंद हो जाना, ज्वर आदि नाना प्रकार के उपद्रव पैदा हो जाते हैं, यही प्रसूत रोग के लक्षण हैं। कोठे में शीत वायु से उत्पन्न होता है।

सूतिका भरण रस

अभ्रक भस्म, हरताल भस्म, ताम्र भस्म, प्रवाल भस्म, शुद्ध मैनसिल एक-एक तोला, चांदी के वर्क एक तोला, सोने के वर्क छह माशा, शुद्ध पारद एक तोला, शुद्ध गंधक एक तोला की कज्जली वनाकर सब चीजें मिला दें। मदार के दूध से घोंट सरवा संपुट से भस्म करें। फिर कुटकी, सोंठ, मिर्च, पीपल, जायफल छह-छह मासे का चूर्ण भी उसी में मिलाकर भस्म करें। ठंडा होने पर निकाल लें, इसकी मात्रा दो चावल से चार चावल तक है। यह प्रसूत रोग, पांडू, कामला-वात, रक्त दोष, प्रसूत वात, व्याधि सबल वाय, सिरदर्द, कमर, योनि के दोष सब समूल नष्ट करने वाला है। दवा खाने से पहले कोष्ठ शुद्धि अवश्य कर दें, मात्रा भी अनुकूल बनाकर खायें, मलाई, मिश्री, दूध, घी, का सेवन खूब करें। दवा औसत से कम भी कर लें, कम बना लें।

सूतिका वल्लभा रस

शुद्ध गंधक, शुद्ध पारद, हिंगुल का निकाला लेकर कज्जली बनायें, फिर स्वर्ण माक्षिक भस्म, अभ्रक हरताल, ताम्र भस्म, वंग भस्म, शुद्ध मैनसिल एक-एक तोला मिला दें फिर जावित्री, जायफल कूट, पीपल एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनाकर आद के रस से घोंटकर गोला बनाकर सरवा संपुट से भस्म कर दें। शीतल होने पर निकालकर रख लें। इसकी मात्रा दो चावल से चार चावल भर मक्खन, मिश्री से खायें। इससे स्त्रियों का प्रसूत रोग, सिर पीड़ा, योनी पीड़ा, बदन की पीड़ा, मंदाग्नि, मल दोष, वात व्याधि, वात, रक्त दोष, कामला, पांडु, अर्श सबको नष्ट करने वाला है।

सौभाग्य सूंठी पाक

सौंठ सवा सेर को कूट-छानकर 5 सेर दूध में डालकर कड़ाही में खोया बना लें, फिर घी डेढ़ सेर डालकर पका लें। सुर्ख होने पर

उतार लें, फिर शतावर, बिहारी कंद, मूसली, गोखरू, बादाम सत, गुरिज, सोया के बीज, श्वेत जीरा, काला जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, चितावर, दालचीनी, पत्रज, अजवाइन, तालीस, नाग केसर, अजमोद, सौंफ, रासना, पुष्कर मूल, वंशलोचन, देवदार, कचूर, जटामासी, मोच रस जीवन्ती, भुनी मेथी, मुलेठी, चन्दन का बुरादा, असगंध, लाल चंदन, वायविडंग, सुगंध वाला अरूस, धनियां, कंट फल, नागर मोथा, सब चार-चार तोला लेकर चूर्ण बना लें। छानकर खोये में मिला दें। केशर एक तोला, अभ्रक एक तोला, लौह भस्म एक तोला, वंग भस्म एक तोला, ताम्र भस्म एक तोला सब मिलाकर घोट दें, दवा में मिला दें, अब ढाई सेर चीनी की चाशनी बनाकर दवा मिला दें। किसी घी वाले बर्तन में रख दें, इसको एक-एक छटांक दोनों प्रहर खायें, दूध पियें, इसके सेवन से स्त्रियों के योनि दोष, कमर का दर्द, सरदर्द, मंदाग्नि, सूतिका रोग, ज्वर शूल, आंव वात, उदर रोग, कामला, पांडू, सब रोगों को समूल नष्ट करने वाला है। स्त्रियों को सगर्भा पुत्रवती बनाने वाला योग है।

योनि से पानी बहने का योग

चुन्नी गोंद एक तोला, फिटकरी चार तोला, धाय के फूल एक तोला, फिटकरी पीसकर एक तवे में डालकर आग में रख दें, गोंद पीसकर जब फिटकरी पिघले तो उसी के उपर बुरक दें, पका लें, पक जाने पर पीस लें, घबई के फूल पीसकर मिला दें, इसकी छै रत्ती दवा शक्कर से खायें, दूध पियें, इसी दवा को योनि में घृत से लगायें।

बदन में, सिर में पीड़ा, टट्टी न आना, भूख बंद हो जाना, ज्वर आदि नाना प्रकार के उपद्रव पैदा हो जाते हैं, यही प्रसूत रोग के लक्षण हैं। कोठे में शीत वायु से उत्पन्न होता है।

सूतिका भरण रस

अभ्रक भस्म, हरताल भस्म, ताम्र भस्म, प्रवाल भस्म, शुद्ध मैनसिल एक-एक तोला, चांदी के वर्क एक तोला, सोने के वर्क छह माशा, शुद्ध पारद एक तोला, शुद्ध गंधक एक तोला की कज्जली बनाकर सब चीजें मिला दें। मदार के दूध से घोंट सरवा संपुट से भस्म करें। फिर कुटकी, सोंठ, मिर्च, पीपल, जायफल छह-छह मासे का चूर्ण भी उसी में मिलाकर भस्म करें। ठंडा होने पर निकाल लें, इसकी मात्रा दो चावल से चार चावल तक है। यह प्रसूत रोग, पांडू, कामला-वात, रक्त दोष, प्रसूत वात, व्याधि सबल वाय, सिरदर्द, कमर, योनि के दोष सब समूल नष्ट करने वाला है। दवा खाने से पहले कोष्ठ शुद्धि अवश्य कर दें, मात्रा भी अनुकूल बनाकर खायें, मलाई, मिश्री, दूध, घी, का सेवन खूब करें। दवा औसत से कम भी कर लें, कम बना लें।

सूतिका वल्लभा रस

शुद्ध गंधक, शुद्ध पारद, हिंगुल का निकाला लेकर कज्जली बनायें, फिर स्वर्ण माक्षिक भस्म, अभ्रक हरताल, ताम्र भस्म, वंग भस्म, शुद्ध मैनसिल एक-एक तोला मिला दें फिर जावित्री, जायफल कूट, पीपल एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनाकर आद के रस से घोंटकर गोला बनाकर सरवा संपुट से भस्म कर दें। शीतल होने पर निकालकर रख लें। इसकी मात्रा दो चावल से चार चावल भर मक्खन, मिश्री से खायें। इससे स्त्रियों का प्रसूत रोग, सिर पीड़ा, योनी पीड़ा, बदन की पीड़ा, मंदाग्नि, मल दोष, वात व्याधि, वात, रक्त दोष, कामला, पांडु, अर्श सबको नष्ट करने वाला है।

सौभाग्य सूंठी पाक

सौंठ सवा सेर को कूट-छानकर 5 सेर दूध में डालकर कड़ाही में खोया बना लें, फिर घी डेढ़ सेर डालकर पका लें। सुर्ख होने पर

उतार लें, फिर शतावर, बिहारी कंद, मूसली, गोखरू, बादाम सत, गुरिज, सोया के बीज, श्वेत जीरा, काला जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, चितावर, दालचीनी, पत्रज, अजवाइन, तालीस, नाग केसर, अजमोद, सौंफ, रासना, पुष्कर मूल, वंशलोचन, देवदार, कचूर, जटामासी, मोच रस जीवन्ती, भुनी मेथी, मुलेठी, चन्दन का बुरादा, असगंध, लाल चंदन, वायविडंग, सुगंध वाला अरूस, धनियां, कंट फल, नागर मोथा, सब चार-चार तोला लेकर चूर्ण बना लें। छानकर खोये में मिला दें। केशर एक तोला, अभ्रक एक तोला, लौह भस्म एक तोला, वंग भस्म एक तोला, ताम्र भस्म एक तोला सब मिलाकर घोट दें, दवा में मिला दें, अब ढाई सेर चीनी की चाशनी बनाकर दवा मिला दें। किसी घी वाले बर्तन में रख दें, इसको एक-एक छटांक दोनों प्रहर खायें, दूध पियें, इसके सेवन से स्त्रियों के योनि दोष, कमर का दर्द, सरदर्द, मंदाग्नि, सूतिका रोग, ज्वर शूल, आंव वात, उदर रोग, कामला, पांडू, सब रोगों को समूल नष्ट करने वाला है। स्त्रियों को सगर्भा पुत्रवती बनाने वाला योग है।

योनि से पानी बहने का योग

चुन्नी गोंद एक तोला, फिटकरी चार तोला, धाय के फूल एक तोला, फिटकरी पीसकर एक तवे में डालकर आग में रख दें, गोंद पीसकर जब फिटकरी पिघले तो उसी के उपर बुरक दें, पका लें, पक जाने पर पीस लें, घबई के फूल पीसकर मिला दें, इसकी छै रत्ती दवा शक्कर से खायें, दूध पियें, इसी दवा को योनि में घृत से लगायें।

तीसवां अध्याय

योनि दोषों के योग

बंध्या दोष

बंध्या दोष दो प्रकार का होता है। पहला प्राकृतिक जो जन्म ही से हो चुका है, दूसरा आगन्तुक जो किन्हीं कारणों से उत्पन्न हो जाता है। पहले वाले की औषधि नहीं है, दूसरे की औषधि है, जो औषधियों से दूर होकर संतान उत्पति होती है।

पहचान

1. मिट्टी के दो पात्रों में मिट्टी भरें, सात दाने गेहूं या जौ के डाल दें, दोनों प्राणी एक-एक में पेशाब किया करें, जिसके मूत्र में दाने जम जायें वह निर्दोष है जिसके न जमें वह ही दोषी है।

2. दो बर्तनो में पानी भरें, एक-एक में स्त्री-पुरुष अपना-अपना वीर्य डाले, जिसका वीर्य डूब जाये वह निर्दोष है, जिसका न डूबे वह ही दोषी है।

गर्भधारक प्रयोग

कीकर (बबूल) के वृक्ष में चार-पांच गज की दूरी पर एक फोड़ा सा निकलता है जिसको कीकर का वान्दा कहते हैं। इसको लेकर कूटकर छाया में सुखा लें, फिर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण तीन माशे ऋतु से निवृत्त होकर स्त्री दूध, मिश्री से तीन दिन तक पियें फिर पति के साथ संभोग करें। अवश्य गर्भ धारण होगा।

1. असगंध नागौरी पांच तोले का चूर्ण बनाकर छान लें, छह माशे चूर्ण, छह माशे मिश्री घी में खाकर फिर दूध पियें, प्रातः-शाम तीन दिन तक कृत स्नान के बाद फिर संभोग करें, अवश्य गर्भ धारण हो जायेगा।

2. पीपल की डोडी कच्ची पावभर, शक्कर पावभर का चूर्ण बनायें, ऋतु दर्शन के बाद एक तोला चूर्ण मिश्री-दूध से खायें, दोनों वक्त। 10 दिन में गर्भ धारण हो जायेगा।

3. ढाक (छिउल) के बीजों की भस्म बनायें, परैयों में धर के फिर ऋतु स्नान के बाद स्त्री तीन माशे मिश्री से खाकर दूध पिये, अवश्य गर्भ धारण होगा।

4. नौ दाने शिवलिंगी के बीज, सूर्योदय सूर्य दर्शन करके स्नान करके, पति के हाथ से लेकर दूध से खाये, ऋतु के स्नान के बाद सूर्य का व्रत भी करे। इसी दिन व्रत ही में धूप-दीप से सूर्य की पूजा करे, कुछ भोजन न करे, दूध ही पान करे, रात्रि में संभोग करे, अवश्य गर्भ धारण हो जायेगा। एक हफ्ते तक प्रयोग करे, दो-चार बार में गर्भ अवश्य धारण हो जायेगा।

5. बीजा वेल, नौसादर दोनों को पीस-पीसकर दो-दो तोले चार गोली एक-एक तोला की बनायें। एक गोली रोज रजस्वला के साथ खायें, दूध पियें, गर्भ शुद्ध होने पर संभोग करें। यदि पांचवें, सातवें, नौवे, ग्यारहवें, तेहरवें दिन संभोग करें तो पुत्र उत्पन्न हो।

6. शिवलिंगी बीज एक छटांक, सरकोका की जड़, श्वेत चंदन, शतावर, नाग केसर, ब्राह्मी, अरूस के फूल, तिल के फूल, असगंध, बिहारी कंद, मूसली—सब छह माशे, बरगद की कोमल जटा नौ माशे, केसर तीन माशे, वंग भस्म, त्रिवंग भस्म, लौह भस्म, छह-छह माशे, सोने के वर्क 12, चांदी के वर्क 12, सब चूर्ण बनाकर छानकर भस्म में मिला दें। शिलाजीत एक तोला घोलकर डाल दें। शतावर और बिहारी कंद को पीसकर छान लें। इसी रस से घोंटकर दो-दो रत्ती की वटी बनायें। दूध, मिश्री से दोनों प्रहर ऋतु के बाद सेवन करें, सात दिन के बाद भोग करें, अवश्य गर्भ धारण होगा।

7. हाथी दांत का चूर्ण एक छटांक, मिश्री एक छटांक, दोनों को पीसकर चूर्ण सरीखा बना लें। नौ माशे रोज प्रातः-शाम ऋतु स्नान के बाद दूध से सेवन करें। 7 दिन दवा खाने के बाद पति के साथ संभोग करें अवश्य गर्भ धारण हो जायेगा।

8. चावलों के धोवन के जल में चौलाई की जड़ दो तोला घोटकर छानकर मिश्री से पान करें तो जिस स्त्री का गर्भ गिर जाता हो वह गर्भ नहीं गिरेगा, स्थिर हो जायेगा। खांड, तिल, जौ बराबर-बराबर अर्थात् एक-एक छटांक लेकर पीस चूर्ण बना लें। एक तोला प्रातः-शाम मिश्री

से खाकर दूध पियें तो गर्भ गिरने का भय नहीं रहता, चूर्ण घृत से मिश्री मिलाकर खायें।

गर्भधारक योग

1. शिवलिंगी बीज 10 तोला, स्वर्ण भस्म एक माशे, चांदी भस्म छह माशे, वंग भस्म छह माशे, सरकोका की जड़ छह माशे, चंदन का बुरादा छह माशा, शतावर 9 माशा, नाग केशर 9 माशा, अरुस के फूल नौ माशा, तिल के फूल 9 माशे, हिंगुल भस्म नौ माशे, त्रिवंग भस्म छह माशे, असगंध एक तोला, विदारी कंद एक तोला, बरगद की कोमल जटा नौ माशा, सब चीजें कूटकर पीसकर चूर्ण बनायें। भस्में मिला दें फिर केसर छह माशा पीसकर विदारी कंद शतावर को पानी में पीसकर इसी पानी से केसर घोंट दें। सब दवा घोंट दें, दो-दो रत्ती की वटी बनायें, प्रातः-शाम दूध, मिश्री से सेवन करें, ऋतु स्नान के बाद शुरू करें। 7 दिन के बाद पति संभोग करें, अवश्य गर्भ धारण हो जायेगा।

2. जायफल और मिश्री पांच-पांच तोला पीसकर चूर्ण करें। छह माशा रोज रजस्वला के बाद खायें। दूध पियें, चावल दूध का भोजन करें। तीन दिन, चौथे दिन पति से संभोग करें, गर्भ धारण हो जायेगा।

गर्भ रक्षा वटी

जिन स्त्रियों के, गोओं, भैंसों के गर्भपात हो जाते हैं, पूरे समय तक बच्चा गर्भ में नहीं रुकता तो धतूर की जड़ थोड़ी-सी लेकर कमर में बांध दें, जानवरों के गले में बांध दें तो गर्भ नहीं गिरेगा लेकिन बच्चा पैदा होने के समय से पहले ही दवा छोड़ देना चाहिये।

सुपारी पाक

चिकनी दक्षिणी सुपारी दस छटांक चूर्ण करें, छोहारा तीन पाव, मजीठ आधपाव, सब कूटकर दस सेर दूध में पकायें, खोया बना लें फिर मूंग का आटा पावभर, निशास्ता पावभर, घी में भूनकर मिला दें, घी ढाई सेर कड़ाही में डालकर पकायें, सुर्ख होने पर उतार लें, फिर बबूल का गोंद पावभर, बादाम की बीजी आध सेर पीसकर घी में भून

लें, खोये में मिला दें। गोखरू, ढाक का गोंद, नारियल पाव भर लें, पीसकर खोये में डाल दें। दालचीनी, सालम, मिश्री, लौंग, डोडा, सोंठ टका-टका भर लेकर पीस लें। जायफल, जायपत्री एक-एक तोले, पिस्ता दो तोला, सुपारी के फूल डेढ़ तोला, कचनार की छाल, सखौली, बबूल की छाल छह माशे पीसकर डालें, केशर छह माशा डाल दें। ढाई सेर चीनी की चाशनी बनाकर सब दवा मिला दें। त्रिवंग भस्म एक तोला, वंग भस्म एक तोला, लौह भस्म एक तोला, डालकर खूब मिला दें ताकि एक दिल हो जायें। यह पाक पांच तोला नित्य प्रातः-शाम गौ के दूध व मिश्री से सेवन करें। बछड़े वाली गौ का दूध होना चाहिये, इससे स्त्रियों के सोम रोग, प्रदर, उदर शूल, क्षीणता, रक्त की कमी, बांझपन, सिर दर्द, आमाशय के रोग, दिल की धड़कन, हाथ-पैर टूटना, कटि शूल सर्व रोगों को नष्ट करने वाली रसायन है, पुत्र उत्पति का संयोग है।

फल घृत

त्रिफला कूट, मुलेठी, चंदन दार, हल्दी, वाय विडंग, पीपल, नागर मोथा, जायफल का कोली, क्षीर की कोली में महामेदा सरियन, पिठवन, मकरा सौंफ, हींग, रासना, लाल चंदन, चमेली, फूल, कमल फूल, वंशलोचन, केसर, दातून की जड़—सब एक-एक तोला लेकर चूर्ण करें। आठ गुणा पानी डालकर काढ़ा करें, चौथाई रहने पर उतार लें। कड़ाही में छानकर डाल दें, फिर उसमें गाय का दूध तथा घी डालें। जिसके बछड़ा हो और गाय के ही रंग का हो, उसका घी ढाई सेर, दूध 5 सेर कड़ाही में डालकर पकायें। पानी जल जाने पर छानकर घी हंडिया में रख लें। शुभ दिन से पुरुष तथा स्त्री दोनों सेवन करें। स्त्री मासिक दर्शन के बाद सेवन करे तो वंध्या स्त्री के भी पुत्र उत्पन्न हो। पुरुष वृषभ समान पराक्रमी हो। जिसके संतान मर जाती हों तो एक सौ वर्ष आयु वाली संतान उत्पन्न हो, यह फल घृत है। यह भारद्वाज ऋषि ने कथन किया है।

योनि में जलन, खुजली का योग

खतमी के बीज, मुलतानी मिट्टी, मकोय की पती के रस में घोंटकर योनि में लगायें।

संतति योग

वहुधा देखा गया है कि किसी-किसी स्त्री के कन्यादि कन्या उत्पन्न होती है, पुत्र नहीं होते। इसके तो अन्य बहुत से कारण होंगे लेकिन मैं एक क्रिया प्रयोग वर्णन करता हूं, इसके फलस्वरूप पुत्र अवश्य उत्पन्न होगा। क्रिया में गलती न हो।

जब स्त्री ऋतु से शुद्ध हो, वही पहला दिन संभोग का है, इस दिन से अंतरकर अर्थात् प्रथम, तीसरे, पांचवे, सांतवें, नौवें, ग्यारहवें, तेहरहवें दिन भोग करने पर जो संतान होती है वह पुत्री ही होती है और ऋतु स्नान के दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दसवें, बारहवें दिन जो संभोग किया जाये तो जो गर्भ स्थापित्त होगा उससे पुत्र उत्पन्न होगा। यह अद्‌भुत योग है।

चांद-सा पुत्र उत्पन्न हो

मोर के पंख की आगे की टिकुली कैंची से बारीक कतर डाले, गुड़ में लपेट कर जब गर्भ दो मास को हो, जब शुभ दिन दाहिना स्वर स्त्री का चलता हो, खा लें व बछड़े वाली गौ का दूध पिये, उस दिन कुछ न खायें, शाम को दूध, चावल खायें तो अत्यंत सुन्दर चन्द्रमा के समान पुत्र उत्पन्न हो।

योनि में पीड़ा हो उसका प्रयोग

विडनोन नाकची, अडूस, पिपली, वच, मिर्च, पिपरा मूल, सोंठ, बराबर लेकर काढ़ा बना लें, यह काढ़ा कुछ गर्म-गर्म पियें तो योनि की पीड़ा दूर होती है।

सोंठ, पीपल, वायविडंग, चार-चार आने भर लें, पीस लें आधा चूर्ण पानी में पीसकर पका लें, छानकर पियें, गर्भाशय का दर्द बंद करता है। आक के पत्ते गर्म करके पेट में बांधें तो योनि की पीड़ा दूर हो जो मासिक के समय हुआ करत्ती है। या इन्हीं पत्तों का रस गर्भ में फाहा तर करके योनि में रखें तो पीड़ा दूर हो।

रज प्रवर्तनी

हींग भूनी, भूना सोहागा, भूना हीरा, कसीस, एलुवा सब बराबर-

बराबर लें, चूर्ण करके घी कुवार के रस में घोंट कर तीन-तीन रत्ती की गोली बांधें। एक-एक वटी प्रात:-शाम मासिक के एक हफ्ते पूर्व खाएं शुद्ध कर दें तो योनि दोष, रज का कष्ट से आना बंद, रजोधर्म, कमर पेडू, योनि के दर्द सब ठीक हो जाते हैं। यदि दवा की गर्मी सहन न हो तो कुछ कम करके खाना चाहिये।

कुच रोगों के प्रयोग, दूध बढ़ाने का प्रयोग

साफ की हुई सौंफ पावभर, शक्कर पावभर को पीसकर चूर्ण बना लें। एक या डेढ़ तोला गर्म दूध से सेवन करें, दोनों पहर स्तनों में दूध बढ़ जायेगा, इसमें शतावर चूर्ण पावभर भी मिला दें, तो और गुणकारी हो जायेगा।

कुच संकोचन योग

1. छोटी-बड़ी कटेरी की जडें, अनार का बकला, फदूंरी की जड़, मौलश्री की छाल, यह सब पीसकर कुचों में लेप करें तो कुच कठोर हो जायेंगे।

2. बरगद की कोमल बरोहें, लाल-लाल पानी में पीसकर कुचों में लेप करें तो कुच कठोर हो जाये।

3. अनार के बकले एक सेर, माजू फल आधपाव—दोनों को कूटकर दो सेर पानी में काढ़ा पकायें। आधा सेर रहने पर उतार कर छान दें फिर आधपाव तिल्ली का तेल डालकर पकायें। आधा सेर रहने पर उतार कर रख लें। यह तेल कुचों को कठोर करने वाला है।

4. गिजाई जो बरसात में लम्बी-लम्बी होती है, काली-काली एक के उपर एक चढ़ी रहती है उनको इकट्ठा करके बर्तन में भर लें। नमक और मुलतानी मिट्टी पीसकर डाल दें। यह मिट्टी कुचों के ऊपर लगाने से कुच कठोर हो जाते हैं।

5. मोच रस पानी में पीसकर कुचों में लेप करें, कुच कठोर हो जाते हैं।

6. धतूर के पत्तों में अंडी का तेल लगाकर गर्म करें। गर्म-गर्म कूचों के ऊपर कर वहीं बांध दें। कुच कठोर हो जायेंगे लेकिन यह प्रयोग बच्चे वाली मां को नहीं करना चाहिये। इससे दूध सूख जाने का भय है।

गर्भ निवारण योग

1. प्रसव काल में यदि पेट में पीड़ा बहुत हो, बच्चे की पैदाइश रुकी हो तो निम्नलिखित प्रयोग करें, इससे बच्चा जल्द पैदा हो जायेगा।

ऊंट कटेरा (इट किटोर जिसके पेड़ पत्ते, घमोय के समान होते हैं। काटेदार गोल फूल होते हैं। इस बूटी को पीसकर स्त्री के सर, तालु में लेप करें तो बच्चा फौरन बाहर आ जायेगा। बच्चा होने के बाद दवा फौरन बाहर निकाल कर फेंक दें वरना हानि होने का भय है। गर्भ तक बाहर निकाल देगी।)

2. अपा मार्ग चिरचिरा की तीन अंगुल उखाड़कर ले आयें। स्त्री की कमर में एक छीर बांधकर उसी छीर में एक तागा जिसमें दवा बीच में बंधी हो, दवा का सिरा स्त्री की योनी में रहना चाहिये। उस तागे को एक सिरा तागे का आगे पेड़ के नीचे बांध दें और दूसरा सिरा पीछे कांख में बांध दें। दवा योनि में रखी रहे। इस वूटी के इस प्रकार प्रयोग करने पर गर्भ का बच्चा बाहर आ जायेगा। बच्चे के पैदा होने पर दवा छोड़ कर फेंक दें।

3. कबूतर की विष्टा, गाजर के बीजों को आग में डालकर योनि में धुआं दें, इससे गर्भ बाहर निकल जाता है, सांप की केंचुली की धुआं देने से मृतक गर्भ भी बाहर हो जाता है।

4. बथुवे के बीज दो तोला आधे सेर पानी में पकायें। आधा रहने पर छानकर गर्म-गर्म औरत को पिला दें, गर्भ बाहर आ जायेगा।

5. ढाक के बीजों की राख, हींग पिला देने से, गर्भ बाहर आ जायेगा। एक इन्द्राय (इडोरन) को पीस एक छटांक पानी में पकायें, पक जाने पर रस निचोड़ लें, रूई का फाहा पानी में भिगोकर योनि में बांधें, मृतक गर्भ बाहर हो जायेगा। यदि ताजी इडोरन हो तो पकाने की जरूरत नहीं है, रस निकाल कर गर्म करें।

बंध्या करन योग

1. हाथी की ताजी लीद का रस आधपाव शहद के साथ ऋतु होने के बाद पिये तो गर्भ धारण नहीं होगा।

2. नौसादर फिटकरी बराबर-बराबर पानी में पीसकर रजो धर्म के बाद योनि में रखकर बांधें तो गर्भ धारण नहीं होगा।

3. पुरुष अपने लिंग में नमक व तिल के तेल को चुपड़कर स्त्री के साथ संभोग करे तो गर्भ धारण नहीं होगा।

4. स्त्री ऋतु से शुद्ध होकर तालीस—गेरू बराबर पीसकर छह-छह माशे खाकर गर्म पानी पिये गर्भ धारण नहीं होगा।

5. पलाश का फल शहद और घी से पीसकर योनि में पोटली बांधे तो गर्भ धारण नहीं होगा।

जीवनपर्यंत के लिये कामवासना मिटाने की जड़ी

बहुत से पुरुष अधिक संतान होने पर ऊब जाते हैं। ऐसे पुरुष स्त्री तथा रांडे-रंडूवा जो अपना साधु जीवन व्यतीत करना चाहते हैं उनके लिये यह बूटी विशेष उपयोगी है। इस वूटी का नाम हिंगूजा है, जो बिहार, उड़ीसा प्रान्त में जहां गया का तीर्थ, जगन्नाथ पुरी है, वहां पैदा होती है। इस वूटी को आग में डालकर इसका धुआं सूंघने ही से जीवन पर्यन्त के लिये कामवासना मिट जाती है। स्त्री-पुरुषों को चाह काम की नहीं होती।

श्वेत प्रदर (सोम रोग) प्रयोग

कौड़ी भस्म सिंगरफ भस्म वंग भस्म, नाग भस्म सब एक-एक तोला, संजरापत 2 तोला, मूसली सालम, मिश्री, बालमखाना, लाजवन्ती बीज, रूमा मुस्तगी बीज, वंद प्रत्येक एक-एक तोला लेकर चूर्ण बनाकर छान लें। भस्म मिला दे। आंवले के रस की भावना देकर गोली बना लें अथवा चूर्ण ही शीशी में भर लें। यह वटी एक प्रातः एक शाम को दूध आध सेर, मिश्री युक्त पान करें। सेवन करने पर गर्म चीजें तेल, खटाई, मिर्च का परहेज करें। इससे श्वेत प्रदर (सोम रोग) नष्ट हो जाता है। यह धातु क्षीणता व प्रमेह स्वप्न दोष, कमजोरी, शीघ्र पतन के लिये अत्यंत लाभकारी योग है। स्त्री-पुरुष सभी खा सकते हैं।

इकतीसवां अध्याय

बाल रोग प्रयोग

डब्बा प्रयोग

1. शुद्ध जमालगोटा की दो दालें सड़ी-गली कौड़ीभर बादाम की एक बीजी पानी में पीसकर मूंग के बराबर गोली बनायें। एक गोली बच्चे को दूध से दें तो दस्त से कफ निकल जायेंगा, मल जमा हुआ दूध निकल जायेंगा बाद में मूंग बराबर अभ्रक भस्म दें, सुबह-शाम दूध से दोनों पहर माँ को दोनों वक्त हिंग्वाष्टक चूर्ण छह-छह माशे गर्म दूध से खिलायें, दूध का दोष खतम हो जायेगा, दूध ही से डिब्बा होता है। अभ्रक भस्म, भुना सोहागा मूंग के दाने के बराबर दूध से पिलायें, डिब्बा दूर हो जायेगा।

इडोरन की जड़ सूखी पीसकर चूर्ण करें। 1 रत्ती चूर्ण, 2 रत्ती सेंधा नमक पानी में घोल कर बच्चे को पिला दें तो दस्त से जमा हुआ दूध कफ निकल जाएगा। पसली में नीचे लिखा तेल लगायें, दोनों पहर दवा दूध से दें।

2. रीठे का छिलका पीस लें। यह चूर्ण 4 रत्ती शहद से बच्चे को पिलायें। दस्त होकर कफ निकल जाएगा डब्बा खत्म हो जाएगा, मूंग के प्रमाण अभ्रक दूध में घोलकर पिला दें। इससे कफ शीतांग होना, दूध न पीना, मसूड़े जकड़ जाना—यह सब दूर हो जायेगा, पसली की पीड़ा भी शांत हो जाएगी पसली में सरसों का तेल, हींग, लहसुन पकाकर मालिश करें। छाती में न करें।

ज्वर के प्रयोग

प्रवाल भस्म एक-से-दो साल के बच्चे के लिये आधी रत्ती दूध से दो तो ज्वर उतर जायेगा। यदि गर्मी का पित्ती ज्वर होगा। अभ्रक

भस्म एक से दो साल के बच्चे को उड़द के बराबर दूध से दें तो वादी शीत कफ का ज्वर दूर हो जायेगा।

अकसर बच्चों को गर्मी से ही ज्वर आता है, अतः पहले ठंडी ही दवा प्रवाल भस्म, स्प्रो, आधी गोली देने से बुखार दूर हो जाते हैं। यदि इसके प्रयोग से बुखार न उतरे, फिर चढ़ जाये तो समझ लो कि वादी से बुखार आ रहा है तब अभ्रक भस्म उड़द प्रमाण दें तो बुखार उतर जाएगा लेकिन बुखार बंद करने के लिये बुखार आने से पहले एक घंटे दवा दें। तब बुखार का आना बंद हो जाएगा, खांसी में भी यही देना चाहिये।

खांसी के प्रयोग

गर्मी से आने वाली खांसी में कफ पक कर सूख जाता है, कफ नहीं निकलता। ऐसी हालत में भुनी फिटकरी 1 रत्ती, भुना सोहागा 1 रत्ती, शहद से चटायें या दूध में पिलायें, कफ ढीला होकर खांसी दूर हो जाएगी प्रवाल भस्म से 1/2 रत्ती स्प्रो से ढीला होता है। यदि जुकाम में सूखी खांसी आती है, कफ पतला फेना-सा आता है तो कफ कच्चा है। ऐसी हालत में कफ पकाने वाला प्रयोग करें। भुना सोहागा शहद से चटायें, अभ्रक भस्म मूंग के दाने बराबर दें। आनन्द भैरव रस मूंग के बराबर दें। दिन-रात में 2 या 3 बार कफ पककर खांसी बन्द कर देंगे।

पसली दर्द योग

सरसों के तेल में हींग, लहसुन डालकर पकायें। यही तेल पसली में मालिश करें, दर्द बन्द हो जाएगा। अभ्रक भस्म मूंग के बराबर दूध व शहद से खिलायें। पसली के दर्द को हटाएगा।

उदर-पीड़ा योग

आनन्द भैरव मूंग के बराबर खिलायें अथवा भुनी हर्र, नमक, हींग 1 रत्ती चटाकर पिलायें। दर्द बन्द हो जाएगा। अमृत धारा के 2 बूंद दूध से पान करायें। उदर पीड़ा शान्त हो जाएगी।

कर्ण शूल

सरसों के तेल में 4-5 जवा लहसुन मटर के बराबर हींग डालकर पकायें यह तेल कर्ण शूल को तत्काल दूर करता है।

शराब की 3-4 बूंद कान में डालें तो दर्द बन्द हो जाता है। गर्म करके डालें। सिरसा के पत्तों का रस गर्म कर कान में डालें, पीड़ा बंद हो जाएगी।

तारपीन का तेल 3 बूंद कान में डालें तो दर्द बंद हो जाएगा। लाल फिटकिरी 2 रत्ती प्याज का रस गर्म करके कान में डालें।

मुख-पाक योग

भुनी फिटकरी, पापरी कत्था, इलायची के दाने पीसकर मुख के छालों में लगायें। छाले दूर हो जायेंगे।

सोहागा, फिटकिरी, कत्था पीसकर 3 कवाव चीनी पीस कर लगायें छाले दूर हो जाएंगे।

नेत्र-पीड़ा-लाली प्रयोग

फिटकरी, सेंधा नमक, मिश्री चार-चार आनाभर जल पके हुए में घोलकर शीशी में भर लें। यह अर्क गर्मी की आई आंख में बहुत फायदेमंद है। लाली पीड़ा दूर कर देती है।

अफीम, भुनी हल्दी, भुना सोहागा, पके हुए पानी में घोलकर बनायें। 4 बूंद नेत्रों में डालें, सर्दी की आई आंख का दुखना, सूजन, लाली दूर होती है।

माड़ा-फूला योग

फिटकरी भुनी 1 आनाभर, भुना सोहागा 1 आनाभर, भुना तूतिया 1 आनाभर, कचिया, भुना सोहागा 1 आनाभर, मिश्री 1 तोला पीसकर शीशी में रख लें। यह खूब घोंटना चाहिये ताकि आंख में गड़े नहीं। एक सलाई मामूली लगायें, इससे आंख का माड़ा-फूली-धुंध दूर होते हैं।

रविवार को नीम के कोंपल की कोमल लकड़ी थोड़ी-सी तोड़कर कान में धागे से बांध दें तो आंख की फूली कट जाती है।

बालकों के दस्तों पर

यदि बच्चे को हरे दस्त आते हैं तो नर कचूर घिसकर मां के दूध से घूंटी दो। हरे दस्त बंद हो जायेंगे। दिन-रात में 3 बार दें।

❖ कामराज 1 रत्ती दूध में घोंटकर पिलायें दस्त बंद कर देगा।

❖ प्रवाल भस्म 1 रत्ती शहद दूध से पिलायें, दस्त बंद कर देगा।

❖ यदि शीत वाई से दस्त पतले आ रहें हैं, नहीं रुकते ऊपर के प्रयोग नहीं लाभ करते तो आनन्द भैरव या संजीवनी मूंग के दाने के बराबर तीन-चार बार शहद दूध से पिलायें, दस्त बंद हो जायेंगे।

❖ बाल रोगों में रस पीपरी का जो योग है वह इस रोग में लाभकारी है।

रुके दस्तों को कराना

एलुवा 6 माशे, उसारी रेवन्द 6 माशे, हींग 2 माशे भूनकर पानी से घोंटकर मूंग के बराबर गोली बांधें। एक गोली मां के दूध से दो तो पेट का जमा दूध दस्त से निकल जायेगा।

भुना सुहागा 1 रत्ती, उसारा रेवन्द आधी रत्ती दूध से दें तो दस्त हो जाते हैं। आनन्द भैरव मूंग के बराबर दें।

बालकों के फोड़ों का प्रयोग

यदि बच्चों के फोड़े-फुंसी बहुत होते हों तो पत्थरचटा की जड़ को घिसकर लगाएं। फोड़े बैठ जायेंगे और यही 2 तोला लेकर पाव भर पानी में पीसकर पकायें। एक छटांक रहने पर उतार, छानकर पिलायें फोड़े-फुंसी फिर नहीं पैदा होंगे। शिवाजाल की गोलियां फोड़े-फुंसी को दूर करती हैं। आधी गोली बच्चे को पानी से दें।

बालकों के पेट में कीड़े हों उसका प्रयोग

❖ प्याज का रस 1 माशा मूंग के दाने के बराबर हींग मिलाकर घूटी प्रात:-शाम दें तो पेट के सब कीड़े मर जायेंगे।

❖ इन्द्रायन (इडोरन) की जड़ वकायन की छाल थोड़ी-थोड़ी पीसकर पेट में लेप करें, दस्त होकर कीड़े निकल जायेंगे।

❖ बकाइन की छाल, नीवी की छाल, दोनों पीसकर पूरे पेट में लेप कर दें, सब कीड़े मरकर दस्त के साथ निकल जायेंगे।

❖ कवीला, वायविडंग, हींग भुनी बराबर-बराबर पीसकर घुटी अवस्था के अनुसार दें। पहले गुड़ खिला दें, पेट के कीड़े मर जायेंगे।

रुका हुआ पेशाब खोलना

यदि गर्मी से पेशाब रुका हो तो कवाब चीनी 1 आनाभर, जवाखार 1 आनाभर, कलमी शोरा 1 आनाभर पीसकर दूध में 1 रत्ती पिलायें। कई बार तो गर्मी का पेशाब खुल जाएगा। यह ठंड़ा प्रयोग है। कलमी शोरा मुट्ठी में थोड़ा रखकर चार बूंद पानी डाल दें। यदि वादी शाती से पेशाब बन्द हो, पेट फूला हो, तो ठंडा प्रयोग नहीं करना चाहिए वरना और पेट फूल जाएगा। इसमें आनन्द भैरव रस उड़द के बराबर दूध से पिला दें तो पेट का फूलना बंद हो जाएगा, पेशाब खुल जाएगा।

बाल रोग घुट्टी

जहर मोहरा सलाई, हजरूल यहूद, दरियाई नारियल, हर्र पीली का बकला, बंशलोचन, पीपल, इलायची, जायफल, केसर, गुलाब के फूल सब बराबर-बराबर लेंकर पीस लें। जल से उड़द के बराबर गोली बनायें। मां के दूध में पीसकर पिलायें। दोनों पहर तो ज्वर प्यास, पतले दस्त, कोष्ठ बद्धता, टट्टी न होना, दूध डालना, बच्चे के रोगों की अत्यन्त गुणकारी घुट्टी है।

सूखा नाशक योग

पत्थरचटा की जड़ पानी में घिसकर 4 रत्ती काली मिर्च मां के दूध से पिलायें। सूखा दूर हो जाएगा। 3 दिन पिलायें।

मुलहठी 6 माशे, इलायची 4 आनाभर, दालचीनी 4 आनाभर, तुलसी के पत्ते 4 आनाभर, बंशलोचन 4 आनाभर, केसर 2 रती, मिश्री 8 आना तुलसी रस में घोटकर 1-1 रत्ती की वटी बनाकर मां के दूध से 3-4 बार दें सूखा दूर होगा।

सूखा नाशक तेल

मजीठ आधा पाव, छड़ीला सुंगधवाला, नागर मोथा 2-2 तोला, हल्दी 2 तोला, लौंग, सोंठ, तज, जायफल, दारु-हल्दी, अदरक की घुघचू, पीपल 6-6 माशे पीसकर कचूर 4 तोला, चंदन का बुरादा, लाल चंदन 1-1 तोला पीसें। कपूर 3 माशे सब दवा चार सेर पानी में काढ़ा करें। एक सेर रहने पर आधा सेर तिल के तेल में डाल-डालकर पकाएं। जब काढ़ा जल जाय, सिर्फ तेल ही रह जाय तो उतार छान लें। लाल रतन जोत पीसकर डाल दें और छान लें। कपूर डालकर शीशी में रख लें। यह लाल तेल सूखा नाशक है। ज्वर, बदन की पीड़ा, चमड़े की सिकुड़न, कमजोरी को दूर करके पुष्ट करता है।

बाल संजीवन अर्क

सौंफ, अजवाइन वाय विरंता टका-टकाभर, पीपल, सोहागा भुना नौसादर, मरोड़ फली दाख एक 1तोला, मकोय टकाभर, इन्द्र जौ टकाभर, सनाय छंटाकभर, मुलहठी, हर्र, कचूर, लौंग, मंगोर, अमलतास छटांक-छटांक सबको कूट-पीसकर दस सेर पानी में काढ़ा करें। सवा सेर रहने पर उतार लें। केशर तीन माशे पीसकर डाल दें। पावभर मिश्री डालकर फिर पकायें, जब 1 तार की चाशनी बन जायें उतार लें। बोतल में भर लें यह बाल संजीवन अर्क है। सूखा नाशक बच्चों को मोटा ताजा बनाने वाला, ज्वर खांसी, उदर रोगों को नष्ट करने वाला, हरे पीलें दस्तों को दूर करने वाला है।

कस्तूरी वटी

जायफल, शीतल चीनी, तज, जायपत्री, लौंग, इलायची, बंशलोचन पीपर 6-6 माशे कूट-पीसकर चूर्ण बनायें, फिर केशर 3 माशे कस्तूरी 1 माशे डालकर पानी में घोंटकर उड़द प्रमाण गोली बनायें। यह बच्चों के ज्वर, कफ, खांसी, दूध का ना पचना, दूध डालना, हरे दस्तों का होना, सर्दी जुकाम में लाभकारी है।

रस पीपरी

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक की कज्जली बना लें। 6-6 माशे लेकर फिर हींग भुनी, पीपर सोंठ, तज जायफल, केशर भुना, सोहागा, लाल नमक, भुनी लौंग, अजवाइन, वायविडंग, अतीस, ककरसिंधी 3-3 माशे लेकर चूर्ण बनाकर छान लें और कज्जली में मिला दें। जल से उड़द प्रमाण की गोली बनाए। यह गोली प्रातः-शाम मां के दूध से दें तो बच्चों को सर्दी, जुकाम, खांसी, दूध डालना, हरे दस्तों का होना, पेट की बीमारी को दूर करने वाली है। यह वटी बच्चों के लिये बनाकर हमेशा सेवन कराएं। किसी बीमारी का भय नहीं रहता। यह बच्चों को ज्वर में भी दी जाए तो शीतवाई का ज्वर, कफ ज्वर दूर होते हैं।

मसूरिका प्रयोग

सागौन के बीजों को सकोरे में भरकर कपड़ मिट्टी करके अदहरे में रखकर भस्म कर दें। निकालकर पीसकर शीशी में रख लें। यह भस्म मसूरिका (शीतला) के रुकावट व शमन करने वाला है। अनुपान 1 साल के बच्चे को 1 रत्ती, 2 साल के बच्चे को 2 रत्ती, 3 से 5 वर्ष वालों को 3 रत्ती, शहद व मां के दूध से दें। यदि फाल्गुन-चैत्र मास में बच्चों को खिला दें तो सालभर शीतला निकलने का भय नहीं रहता। यदि शीतला निकली हों तो भी यह दवा खिला दें, बुखार व शीतला शमन हो जायेंगे।

कटेरी (भटकटैया की जड़) 1 तोला, मिर्च 6 माशा पीसकर नीम की पत्ती के रस21 की भावना देकर घोटें। 1-1 रत्ती की गोली बना लें। मसूरिका निकलने पर 1 वटी दोनों प्रहर दूध से खिलायें। माता शांत हो जायेंगी। यदि फाल्गुन-चैत्र में दवा खिला दें तो माता नहीं निकलेंगी।

बत्तीसवां अध्याय

विषधर योग

सर्प विष प्रयोग

● सर्प का काटा रोगी यदि बेहोशी में है तो गुमीठर्रा का रस निकालकर किसी फुफुरी से नाक द्वारा नस्व दें। फूंक से दें। रोगी फौरन होश में आ जाएगा। फिर गुमा का रस बच्चों को आठ आनेभर, बड़ों को 1 तोला काली मिर्च के दाने पीसकर पिला दें। जहर बिलकुल शांत हो जायेगा। सर्प के काटे रोगी को जब तक पूर्ण स्वस्थ न हो जाय सोने नहीं दें।

● पीपल की पतली–पतली लकड़ियां 3-4 अंगुल की 2-2 लाएं और पीपल की मुलायम कोपलें 2 तोला लेकर पीसकर रस निकालकर पिलायें। यदि बेहोशी है तो 1 लकड़ी दोनों कानों के छेदों में डालें। खूब मजबूत पकड़े रहें ताकि अंदर न घुस जाये। क्योंकि वह अंदर को खिंचती है। कुछ समय में रोगी के मुंह से झाग बहने लगता है। कुछ-कुछ प्रलापवाती करने लगता है जब कानों की लकड़ियाँ भी ढीली हो जाती हैं तब जानो जहर शांत् हो गया। तब दूध पावभर में 2 तोला लेथी डालकर पिला दें। भूख लगने पर घी खिचड़ी खिलाना चाहिए। 24 घंटे सोने नहीं देना चाहिए।

● पत्थरचट्टा, गूमा, हुरहुर् का रस 1 तोला रोगी को पिलायें। जहर शांत हो जाएगा। आवश्यकता के अनुसार कई बार पिलाया जाए।

● भेलामा का तेल काटे हुये स्थान में सुई से खोदकर चोभ देते जाएं। जब छाला पड़ जाय, तब बंद कर दें, जहर शांत हो जाएगा। गेलायान मिलने पर मदार के दूध का चौभा देते रहें। जहर शांत हो जाएगा।

सर्प संहार तेल

6 माशा कार्बनिक एसिड, कपूर देशी 2 तोला, मिट्टी का तेल 1

बोतल सफेद तीनों को मिलाकर काग बंद कर दें, फिर उस तेल को दो बोतलों में आधा-आधा भर दें बाकी जो बोतलें खाली रहे उसमें तारपीन तेल एक बोतल लेकर दोनों बोतलें भर दें। काग बंद कर दें। यह सर्प संहार तेल का गमा इसको फीहे से सर्प विच्छू आदि के काटे स्थान में बार-बार चोका दोहर विषैले जीव के काटे विष को तत्काल हरण करेगा। दर्द कान में सरसों के तेल में मिलाकर डाले फोड़े-फुंसी उठने पर तथा घाव में खालिस तेल लगाने पर फायदा होगा दांत दाढ़ के दर्द में मिला हुआ सरसों के तेल को लगाना चाहिये वात रोग को हटाता है।

बिच्छू विष नाशक योग

● गंधक के तेजाब में रुई का फाहा तर करके डंक स्थान में चोभा दे, सेंक करें, जहर शांत हो जाएगा।

● प्याज का रस नौसादर की शीशी में रख लो। यह डंक स्थान में लगाने से जहर शांत हो ज़ाएगा। फाहा भिगोकर डंक के ऊपर रख दें। मुनाग के गोंद की टिकिया बनाकर दूध से धोकर डंक स्थान में चिपका दें जहर शांत हो जाएगा। जहर खींचकर निकल देगा। यह परीक्षित दवा है।

● कुएं में डालने वाली लाल दवा (पोटाश) पीसकर शीशी में भर लें। टाटरी पीसकर दूसरी शीशी में रख लें। दोनों की 2-2 रत्ती दवा डंक स्थान में रखकर पानी की 2 बूंद टपका दें। जहर शांत हो जाएगा। छाला पड़ जाता है।

● नौसादर चूना बिना बुझा या कलई 2-2 रत्ती डंक पर रखकर प्याज का रस या पानी या नींबू का रस डाल दें तो जहर शांत हो जायेंगा।

● हींग, हरताल पीसकर गोली बांध लें। घिसकर डंक में लगायें।

● बीस से उलटी गिनती गिनकर एक तक आये, बंधन लगाता जाये हाथ में नीमें की 5 पत्तियां हथेली में अपने दबाता जाये।

जमालगोटा की बीजी (दातून) बीजी पीसकर आंखों में लगाये, डंक स्थान में भी पीसकर थोप दे जहर शांत हो जायेगा।

नोट—यदि सर्प बिच्छू के काटे रोगी अचेत हो जायें, सांस बंद हो जाय तो उसको मरा मत समझो, उसकी आंखों में नौसादर पीसकर लगा दें यदि मृतक होगा वह हिले-डुलेगा नहीं वरना अगर हिला-डुला तो प्रयोग करने पर होश में आ जायेगा।

टिंचर आयो डीन

आयोडीन पोटाश—स्प्रिट घोलकर शीशी में रख दें, कार्क बन्द कर दें। टिंचर बन जाएगा।

सिरका बनाना

गुड़ 5 सेर में 20 सेर पानी, पावभर राई पीसकर, मेथी आध सेर डाल दें। 40 दिन में सिरका तैयार हो जाएगा, मुंह बांध कर रख दें कोई-कोई तेजपात डाल देते हैं।

जहर खाये हुये व्यक्ति के प्रयोग

● सर्वप्रथम रोगी को ज़्यादा-से-ज़्यादा पाव-आधा सेर घी पिला दें तो पीते ही जहर पच जाएगा या उलटी होकर निकल जायेगा। अफीम के जहर में 2 माशे हींग पानी से पिला दें। 2-3 बार अफीम पिलाने से जहर शांत हो जाएगा। अखरोट की बीजी पानी में पीसकर पिलायें अफीम का जहर शांत हो जाएगा।

● बिनौला आधपाव पानी में पीसकर छान लें। जहर खाये हुये को पावभर पानी पिला दें। इसी प्रकार फिर 3 घंटे बाद पिलायें। जहर शांत हो जाएगा। इससे धतूरे का जहर शांत होता है। नमक पानी में पीसकर पीयें, भट्ठे के टुकड़े-टुकड़े करके पानी में मलकर कई बार पिलावें धतूरे का जहर शांत होता है।

● करेमू एक बेल है जो तालाबों में पानी पर पैदा होती है। एक छटांक पत्ती पावभर पानी में पीसकर 1-2 बार पिलायें। ज़हर शांत हो जाएगा। इसी प्रयोग से पागल मनुष्य उन्माद से हुए को रोज दो-तीन बार पिलायें कुछ मैं पागलपन दूर होकर दिमाग ठीक हो जाएगा।

● सिरसा की पुरानी छाल 7 माशे सांठी चावल के धोवन में पीसकर पी लें तो जहरीले कीड़ों का जहर शरीर में व्याप्त नहीं होता। सर्प-बिच्छू बर्रे आदि के जहरों का असर नहीं होता।

यदि भेलामा खाने से शरीर में खुजली, सूजन हो तो इमली की पतियां 1 सेर भर पानी में पकाकर जब आधपाव रहे पिलायें। 3-4 बार पिलाने से जहर शांत हो जाएगा। या इमली के बीज पीसकर आनाभर

पानी से पीये। चिरौंज़ी मील पीसकर एक-एक तोला भैस के दूध से पीये, अखरोट खाये।

स्फटिक योग—निद्रा लाने वाला प्रयोग

मकड़ी का जाला आग में जलाकर या घी में घोट कर आंख में लगाएं, नींद आने लगेगी। यह प्रयोग रात में करें।

भट्टे को भूनकर जला हुआ छिलका साफ करके उस भट्टे को मसल डालें, शहद मिलाकर खा लें। यह निद्रा को लाने वाला है। शाम को प्रयोग करें दिन में सोये नहीं।

मवेशियों के बीमारयों की दवा—नेहरूपा रोग

नौसादर 1 तोला, गुड़ 2 तोला लें। नौसादर पीसकर गुड़ में घोट दें 6 गोली बनायें। प्रातः-शाम एक गोली खिला दें तो नेहरूपा (रियां) का फूटना बंद हो जाएगा। कीड़े अंदर-ही-अंदर मर जायेंगे।

बहूमूत्र रोग का प्रयोग

यह रोग बड़ा हठीला होता है। दवा करने पर भी फिर से उभड़ जाता है अतः दवा ज़्यादा दिन तक सेवन करें। दही व शक्कर मिलाकर सेवन करते ही रहें। रोगी की शक्ति के अनुसार उड़द की दाल 1 छटांक या आधपाव पानी में रात को भिगो दें प्रातः धोकर छिलके निकाल दें। पीस लें। फिर दाल ही कि बराबर घी कढ़ाही में डालकर दाल को भून लें। सुर्ख होने पर उतारकर शक्कर मिलाकर खा लें। इसी प्रकार दूसरे वक्त के लिये सुबह दाल भिगो कर शाम को बनाकर खायें। एक हफ्ते में बहूमूत्र रोग दूर हो जायेगा।

पुराने ज्वर तथा मलेरिया ज्वर पर योग

शुद्ध हरताल बर्की 1 तोला, फिटकरी 2 तोला, तूतिया 1½ माशा,

हरा कसीस 1 माशा—सब चीजें पीसकर 1 तोला घी कुवार के गूदे में घोट दें। 1 तोला रीठे के क्वाथ या रस में घोट दें। गोला बनाकर सरवा संपुट दो परैयों में करके कपड़ मिट्टी कर भट्टी में दबाकर जब भट्ठी ठंडी हो निकालकर पीस लें। शीशी में रख लें। चावलभर से 4 चावल तक रोगी की शक्ति के अनुसार खूराक बना लें।

मौल श्री दंत मंजन

मौल श्री छाल, आंवला, हर्र, बहेड़ा, सौंठ, मिर्च, पीपल, माजूफल, भुनी फिटकरी, सरसों के तेल 1-1 तोले, सेंधा नमक, नौसादर, सांभर नमक 1-1 तोला, तुतिया 6 माशे—सब चीजें खूब महीन पीसकर कपड़े में छान लें। यह मंजन दांतों का दर्द, मसूढ़ों का फूलना, दांतों का हिलना, टीस मारना, मवाद आना, मैलापन, सर्वदन्त रोग ठीक होकर दांत वज्र हो जाते हैं। अनुभूत योग है।

उदर सुधा साल्ट

नौसादर 4 तोला, सेंधा नमक 2 तोला, काली मिर्च 1 तोला—सब पीसकर चूर्ण बना लें। 4 रत्ती से 1 माशे तक सेवन करें, गर्म जल पीयें उदर के रोगों में बहुत फायदेमंद है। खाने में बर्फ के समान मालूम होता है।

संखिया भस्म बनाने का योग

शुद्ध संखिया 1 तोला, शोरा 4 तोला पीसकर सरवा संपुट से दो परैयों के बीच रखकर कपरौटी करके भस्म कर दें। यह भस्म आधी रत्ती से 1 रत्ती तक दें, ज़्यादा कदापि न दें, मलाई के साथ खाये, दूध पीये, खाली पेट दवा नहीं खाये। यह विषम ज्वर मलेरिया एक तरा तिजारी में सर्वोत्तम है, ज्वर आने के 1-2 घंटे पूर्व सेवन करने से ज्वर कदापि नहीं आयेगा।

दुबले से मोटा होने वाला योग

असगंध स्याह मूसली, सफेद मूसली 25-25 तोला लेकर पीस दूध

में मिला दें जब दूध सूख जाये तब चूर्ण को सुखाकर खल से पीस-कूट चूर्ण बना लें। एक सेर मिश्री मिला दें। 2 तोला नित्य प्रात:-शाम खाने, दूध पीने से दुबला कमजोर मनुष्य बलवान और मोटा हो जाएगा। धातु की क्षीणता नष्ट हो जाएगी। स्वप्नदोष बंद कर देगा।

बेवाई पर मलहम

अंडी के तेल में राल मोम डालकर गर्म करके मलहम बनायें। यह मलहम पैर की बेवाई भर देता है। दर्द बंद हो जाता है।

गंधक का तेल निकालना

गंधक 1 छटांक लेकर मदार के दूध से घोटें। फिर दूध डालें, घोटें। पूरा एक दिन घोटाई करें। फिर टिकिया बनाकर सुखा लें। एक कढ़ाही में 2 सेर पानी में टिकिया डाल दें। आग जला दें। पकाएं। गंधक का तेल पानी के ऊपर कढ़ाही में तैरने लगेगा। तब निकालकर ठंडा कर लें। तेल को हाथ की हथेली में वोर-वोर कर थाली की बांटों में गदेंली तराशतें जायें। जब सब तेल आ जायें तो जो साथ में पानी आ जाए उस पानी को थाली जरा उठा दें। पानी अलग हो जायेगा। फेक दें। तेल शीशी में भर लें। यह तेल दाद-खाज, अपरस, कुष्ठ आदि के लिये लाभकारी है।

पेशाब में रक्त बहने का प्रयोग

बारहसिंगा के सींग को जलाकर 6 माशे भस्म बनायें। घी कुवार के रस में घोट दें। मुख बंदकर भट्ठी में रख दें। भस्म बन जायेगी। यह भस्म 6 माशे, भुनी फिटकरी 6 माशे, गोंद कतीरा 6 माशे, बबूल का गोद 6 माशा, गुलनार 6 माशा, गुलाब के फूल 6 माशे पानी में पीस लें। 3 माशे की टिकिया बनायें। प्रात:-शाम एक टिकिया मिश्री मिलाकर फांक लें। दूध पीएं पेशाब के साथ रक्त का जाना बंद हो जाएगा।

चाकसू के 21 बीज पीस लें। चंदन का बुरादा 3 माशे पानी में पीस लें। शेरवत मिश्री के साथ पीएं मूत्र के साथ रुधिर का जाना बंद करता है।

सुगंध श्रृंगार मसाला

खस चूर्ण 5 तोला, बुरादा चन्दन 1 तोला, धनिया चूर्ण 1 तोला, सौंफ चूर्ण 1 तोला, कपूर 2 तोला, इलायची चूर्ण 1 तोला, फूलीजन का चूर्ण 2 तोला, मुलेंठी चूर्ण 5 तोला, मिश्री पावभर, गोंद बबूल 5 तोला, लौंग 2 तोला—सब चीजें पीसकर कपड़छन करें, फिर छने चूर्ण में 3 माशे नरगिस या केवड़े का सेंट दालचीनी के 1 तोला तेल में मिलाकर डाल दें। कत्था 10 तोला पापरी किसी कटोरी में पीसकर पावभर पानी डालकर पकायें। खाने वाला चूना एक छटांक डाल दें। तो सुर्खी आ जाएगी। इसको चूर्ण में डाल दें। एक छटांक गरी का अच्छा तेल अथवा तिलों का तेल मिला दें। मसाला तैयार है। चाहो तो शीरे से उड़द बराबर वटी बना लो, चाहो तो मसाला ही पान में सुपाड़ी में खाइये। खाने पर दिल को प्रसन्न कर देगा। सुगन्ध से मुख भर जायेगा। पिपरमेन्ट 6 माशे यदि मिला दी जाए तो सोने में सुगन्ध पैदा हो,जाए अद्भुत जायके वस्तु बन जायें। यह घरेलू प्रयोग के लिये है, बाजारू दृष्टि का योग नहीं है।

ताम्बूल अम्बरी वटी

खस चूर्ण 5 तोला, मुलहठी चूर्ण 5 तोला, गोंद बबूल 5 तोला, धनियां चूर्ण 5 तोला, लौंग 1 तोला—सब पीसकर कपड़छन चूर्ण करें। कपूर 2 तोलें दालचीनी तेल 1 तोले, पिपरमेंट 3 माशे डाल दें। मिश्री पावभर पीसकर मिला दें। कत्था आध सेर, पानी पावभर, खाने वाला चूना एक छटांक, एक बड़ी कटोरी में पकाये। सुर्खी आने पर घोटकर चूर्ण में डालें। सेंट नरगिस अथवा केवड़े का 3 माशे गरी का तेल आधपाव में मिलाकर मसालें में डाल दें। आधा खूब मिला दें। फिर वटी बनायें।

विधि—चिकनी थाली की पीठ पर आंवले के बराबर गोला लेकर थाली की पीठ पर पतली-पतली वति बेलकर बनायें रखते जायें। फिर चाकू की धार से 1-1 रत्ती के बराबर टुकड़े काटते चले जाएं। किसी साफ डब्बे या चौड़े मुंह की शीशी में भरते जायें। जब सब वटी काट-काट कर तैयार कर लें तब आधा तेल जो बचाया गया है सब गोलियों में डालकर हिलाते जायें। डब्बे ही में डालकर हिलाएं। यह अति सुगंधयुक्त पान अथवा सुपारी में खाने का मसाला है। दिल-दिमाग मुख को सुंगध से भर देगा।

पान विलास वटी व्यापारिक दृष्टि की

खस का चूर्ण 10 तोला, धनिया चूर्ण 5 तोला, मुलहठी चूर्ण 5 तोला, लौंग 1 तोला सब पीसकर कपड़े में छान लें। शक्कर पावभर, कत्था आधा पाव में पानी पावभर डाल पकाये। जब फुदकने लगे तो खाने वाला चूना एक छंटाक डालकर घोट दें, सुर्ख रंग हो जायेगा, उतार लें। इसमें सब चूर्ण और कपूर 2 तोला गरी के तेल में डालकर गर्म करें। पिघल जाने पर चूर्ण में मिला दें और शीरे में डाल दें। 1½ माशे सेंट भी डालकर खूब मिला दें। ताकि खुशबू सब मसाले में प्रवेश हो जाए फिर वटी 1-1 रत्ती की उड़द बराबर बना डालें। बनाने की विधि ताम्बूल अंबरी में है। जब सवटी बन जाए किसी डब्बे में या चौड़े मुंह की कांच की बड़ी शीशी में भर दें और 1½ माशे सेंट एक छटांक गरी के तेल में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा तेल डालकर शीशी की गोलियों को उछालते जायें ताकि सब गोलियां तेल से भीग जायें। शीशी को बंद करके रख दें। यह पान विलास बटी बाजारू ढंग की है। खाने में अत्यन्त सुगन्धित मन को प्रसन्न करने वाली है।

सुगंधित सफूफ

खस चूर्ण 10 तोला, मुलेठी चूर्ण 5 तोला, धनिया चूर्ण 5 तोला, लौंग 1 तोला, कपूर 3 तोले सब चीजे पीस छानकर कर चूर्ण में क़पूर पीसकर मिला दें। मिश्री पावभर मिला दें। कत्था आधपाव पानी में घोलकर एक छटांक चूना घोल दें। इस पानी को चूर्ण में डाल-डालकर मिलाते जायें। एक छटांक गरी के तेल, 2 माशे सेंट नरगिस अथवा सेंट केवड़ा डालकर चूर्ण में डालकर चूर्ण में डालकर मिला दें। कत्थे का पानी इतना डालें कि गीला न हो जाए। भूरभूरी नमी आ जाये। बस डब्बों में भर लें, बढ़िया सुगंधित पॉऊडर बन गया। यह भी व्यापारिक दृष्टि का है थोड़े खर्च से करीब तीन पाव मसाला बनेगा। छोटी-छोटी डिब्बियों में भर-भर 5-10 रुपये आने में विक्रय करें। खूब लाभ होगा।

नोट

मनुष्य परिश्रम करके ज़्यादा लाभ के भागी होते हैं। बाजारू बनी

चीज खरीदकर विक्रय करने में ज़्यादा-से-ज़्यादा 25 प्रतिशत लाभ उठा सकते हैं। निजी परिश्रम से चीज ज़्यादा तैयार होती है। खर्च कम पड़ता है। अतः यदि व्यापार करना है तो इस भैषज्य भास्कर ग्रंथ में व्योपारिक दृष्टि के सैकड़ों योग हैं जो शीघ्र लाभकारी हैं। आजमूदा प्रयोग जितने भी हैं उन सब में विधान और अनुभूत शब्द लिखा हुआ है। अनुभूत के माने परीक्षित प्रयोग है।

ग्रंथ की समाप्ति भाद्रकृष्ण अष्टमी संवत् 2055 में कर रहा हूं आशा करता हूं कि भावी सन्तानें इस ग्रन्थ के सहयोग से औषधि बनाकर आने वाले रोगों से सुरक्षित रहेंगे। धन की बचत होगी, स्वास्थ्य का सुधार होगा। यह कलिकाल है। मूल से रोगों से जटित है। अतः औषधि को बनाने में आलस न करें। औषधि बनाने में कोई परिश्रम नहीं है।

कमल मधु

असली शुद्ध शहद 10 तोला, विशुद्ध कपूर 3 माशे, रसौत 3 माशे, पराद भस्म 3 माशे, मुक्ता सीप भस्म 3 माशे, शुद्ध सोहागा 3 माशे, ताम्र भस्म 3 माशे—सब वस्तुएं घोटकर शहद में मिला दें। यह मधु नेत्रों के समस्त विकारों को नष्ट करती है। दृष्टि कमजोरी, फूला, माड़ा-जाला, धुंध, ढलका, पानी बहना आदि विकार दूर होते है।

सुरमा ममीरा

सुरमा काला 5 तोला, सुहागा भुना 6 माशे, शुद्ध पारद हिगुलोत्थ 6 माशे, फिटकरी 3 माशे, नीला थोथा 1 माशा, भुना मुक्ता सीप 1 तोला, नौसादर 3 माशे, पिष्टी कल्मी शोरा 6 माशे, शीतल चीनी 6 माशे, शुद्ध रसौत 1 तोला, पशद भस्म 1 तोला, मिर्च स्वेत 6 माशे, त्रिफला का रस, कपूर 6 माशे उड़ाया हुआ—सब पीसकर त्रिफला जल से घोटें बाद में कपूर मिलाकर घोट दें। यह आंखों के धुंध, जाला, फूला, माड़ा को नष्ट करने वाला है।

खूनी बवासीर योग

कुड़ाकी छाल पावभर लेकर कूट डालें, 1½ सेर पानी में काढ़ा करें। ढाई पाव रहने पर उतार लें, छान लें। फिर मोचरस पाठा मजीठ

अतीस, नागरमोथा, बेल का गूदा, धवई के फूल एक-एक तोला लेकर चूर्ण को छान लें और काढ़े में डालकर कड़ाही में पकावें। जब गाढ़ा हो जाये तो 10 तोला मिश्री और आधपाव घी मिलाकर छह माशे की गोली बना लें। यह कुटजाष्टक वटी है। यह खूनी बवासीर, रक्तातिसार का उत्तम योग है। संग्रहणी में लाभकारी है।

खूनी बवासीर संग्रहणी के योग

यह रोग मंदाग्नि से होते हैं। खाया हुआ भोजन जब ठीक तौर से हज़्म नहीं होता तब कोष्ट में मल का संचय होता है। जिससे अर्श रोग (बवासीर) पैदा हो जाती है। फिर बवासीर से रक्त गिरने लगता है। इसके बाद संग्रहणी बन जाती है। पहले पतले-पतले दस्त आते हैं। भूख कम लगती है। अन्न नहीं पचता, कब्ज बनी रहती है। किसी-किसी को कई दिन कब्ज रहकर दिन-रात दस्त होते हैं। किसी को रोज सुबह 3-4 दस्त होते हैं। रात को नहीं, किसी को दिन-रात 8-10 दस्त होते हैं। संग्रहणी के दस्तों का कोई नियम नहीं है। संग्रहणी की पहचान यही है कि दस्त बहुत होते हैं और वेग से दस्त आते हैं। यदि दस्त जल्दी न जायें तो कपड़े खराब हो जायें, दस्त में कुछ आंव का अंश ज़रूर रहता है।

भोजन के बाद टट्टी ज़रूर होती है। पेट में गुड़गुड़ाहट, मुंह आना, मरोड़ होना, दुर्बलता का होना, कमर में दर्द, चंचल नाड़ी होना, भारीपन, कमजोरी, शरीर में रुखापन—यह संग्रहणी के लक्षण हैं। रोग पुराना होने पर कभी-कभी आंव बढ़ जाने पर ज्वर भी बना रहता है।

संग्रहणी, खूनी बवासीर के योग—हिंगुल योग

5 तोला हिंगुल (ईंगुर) कच्चा ही भेलामा 10 तोला, कूटकर थोड़ा-थोड़ा पानी डाल पीठी बना लें। उसमें हिंगुल बीच में रखकर गोला बना लें। फिर कड़ाही में घी, अंडी का तेल, शहद तीन-तीन छटांक डाल दें। गोला भी रख दें। चूल्हे में चढ़ाकर पहले कम आंच से पकाएं। जब धुआं निकलने लगे तब तेज आंच कर दें। थोड़ी देर के बाद जलती हुई लकड़ी से कड़ाही में आग लगा दें और चूल्हे की आग हटा दें जब कड़ाही की जलन दूर हो जाये, सब चीजें जल जायें तब कड़ाही

उतार लें और सब चीजें पीस लें। बाद में जायफल, जायपत्री, लौंग पांच-पांच तोला पीसकर मिला दें। यह संग्रहणी का उत्तम योग है। खुराक 1-1 रत्ती प्रातः-शाम तोर निकालें, दही से खायें। फिर धीरे-धीरे दवा बढ़ाया जायें, यहां तक कि छह रत्ती तक खुराक हो जाते गर्मी करे तो सिर्फ सुबह ही खाए। मट्ठे का सेवन करें। अन्न नहीं खायें। 3-4 दिन में भूख बढ़ जाएगी। संतरा, अनार का सेवन करें। 40 दिन में संग्रहणी दूर हो जाएगी। लेकिन भोजन कदापि ज़्यादा न करें।

1. नागकेशर 1½ माशे, धुले काले तिल 1 तोला पीसकर मक्खन-मिश्री से खाएं। बवासीर से रक्त का जाना बंद हो जाएगा। 2-3 बार खाये।

2. रीठा के फल के बकलें जलाकर भस्म बना लें। 1 माशे भस्म शहद से चाटें तो बवासीर का रक्त का गिरना बंद हो। 2-3 बार खायें।

3. मोती सीप पिष्टी 2 रत्ती मक्खन से 2-3 बार खायें। खून का गिरना बंद हो।

4. सूरन पीसकर भूंन लें, दही से दोनों वक्त खायें। खूनी वादी बवासीर का रक्त का गिरना बंद हो जाएगा। 2-3 बार खायें।

5. गेरू एक छटांक पीसकर धमिरा के रस में भिगो दें। सुखा लें, 3 बार फिर गोला बना सुखाकर अदहरे में रखकर पका लें। पीसकर 4 रत्ती शहद से दोनों वक्त चाटें बवासीर का रक्त गिरना बंद हो जाएगा।

6. चिरचिरा के पत्तों का रस, काली मिर्च 5-6 पीसकर पीएं, बवासीर दूर होगी।

7. चिरचिरा के पत्ते मिर्च पीस गुंवार पट्ठे में पीस बेर के बराबर गोली बना लें। दोनों पहर खाएं बवासीर दूर हो जायेगी।

जहरवात का योग

राल, फिटकरी, गंधक, नैनीसार, सोहागा, कचिया, तूतिया 1-1 तोला खूब महीन पीस लें। धमिरा और नीम की पत्तियां पीसकर 3 तोला सरसों के तेल में पकाएं। यहां तक कि टिकिया जल जाये। फिर उतारकर मोम 1 तोला, चूर्ण डालकर घोट दें। यह मरहम फोड़े-फुंसी, जहर वात, कुष्ठ के सफेद दागों को ठीक करने वाला है। रस में बकुची बीज भी पीसकर मिला दें।

स्वेत कुष्ठ पर हरताल भस्म

हरताल शुद्ध 2 तोला, कंजा की बीजी का चूर्ण 4 आनाभर, फिटकरी 4 तोला अलग-अलग पीस लें। एक सकोरे में पीपल की राख थोड़ी 3 आनाभर पर कंजा का चूर्ण आधा फिर फिटकरी का चूर्ण आधा बिछा दें। शुद्ध हरताल चितावर के रस में घोट गोली बना लें। यह गोली फिटकरी के ऊपर रख दें। फिर फिटकरी चूर्ण, कंजा का चूर्ण और पीपल की राख भर दें। ऊपर से परैया ढककर कपड़ मिट्टी करके सुखा लें। अदहरे में रखकर फूंक दें। 4 प्रहर में भस्म हो जायेगा। एक रत्ती के सेवन से कुष्ट रोग, फोड़े-फुंसी, घाव नष्टकर देता है।

शोरकादि तेल छाजन पर

शोरा पावभर, कैथा की छाल 10 छंटाक, सहजन छाल 10 छंटाक, नीम छाल 10 छटांक, ऊंट की लेंडी 5 सेर—सब दवा कूटकर घड़े में भरकर पाताल यंत्र से तेल निकालें। यह तेल लगाने से छाजन दूर होती है।

मलेरिया ज्वर में

1. सफेद कत्था 1 तोला, मत्ल सिंदूर छह रत्ती पीसकर नीम के रस से घोटकर उड़द प्रमाण गोली बनायें। ज्वर आने के पूर्व 1 वटी खिलायें। जवानों को ज्वर नहीं आएगा। बच्चों और गर्भवती स्त्रियों को यह दवा नहीं देना चाहिए।

2. हरताल 1 तोला, शुद्ध फिटकरी 2 तोला, घी कुवार में पीसकर गोला बना लें। सुखा लें। अरंड, पीपल की राख के बीच में गोला दबाकर सकोरे में कपरौटी करके फूंक दें। 1 रत्ती तक ज्वर आने के पूर्व खिलाने से मलेरिया दूर होती है।

शुगर का योग

चरैता 100 ग्राम, पनीर, डोडी 25 ग्राम, मस्त्यारा 25 ग्राम, मसव्वर 5 ग्राम, काली जीरी 25 ग्राम 2 किलो पानी में रात को भिगो देना चाहिये। सुबह इसे उबालकर उसी पानी का शेष 750 ग्राम रहना चाहिये। इसे

एक कांच की बोतल में रख लें। इस्तेमाल प्रातः कुछ खाये बिना 3 चम्मच पी लें। यह दवा खुश्क होती है। इसके लिए दूध-घी का सेवन ज़्यादा करें। इसे फ्रीज में ही रखें अन्यथा खराब होने का भय रहता है। परहेज अवश्य करें।

शुगर बढ़ने की पहचान व दवा

कमर में दर्द, जोड़ों में दर्द, पेशाब ज़्यादा आना, सुस्ती, पेशाब में बदबू, फोड़ा-फुंसी ठीक न होना, रक्त मीठा होना।

● रात को मेथी 1 चम्मच व आंवला पीसकर एक चम्मच अवश्य लें।

● जामुन के मौसम में 125 ग्राम जामुन रोज़ाना खाने से शुगर नियंत्रित हो जाता है।

आसान नुस्खे अनुभूत

● कास्टिक सोडा, आंवला सार गंधक, एग्जीमा के लिये लेप करें।

अनार का छिलका पीसकर 4 ग्राम पानी में दिन में दो बार खाने से पेशाब बार-बार आना बंद होता है।

● दो टमाटर रोज़ाना नमक, काली मिर्च लगाकर 15-20 दिन खाने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।

● आम के पत्तों को छाया में सुखा कर पीस लें। रोज़ाना दांतों पर मलने से खून आना बन्द होता है। दांत सफेद होते हैं।

● गाजर का रस 125 ग्राम रोज़ाना खाली पेट दो सप्ताह पीने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।

● प्याज गर्म राख में भूनकर उसका पानी निचोड़ कर कान में डालें, आराम होता है।

● अगर पेशाब रुक जाये तो घीये का रस 10 ग्राम, कलमी शोरा 2 ग्राम, 200 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में दो बार पीयें। पेशाब खुलकर आएगा।

● 10 बादाम गिरी रात को भिगोकर पानी में छिलका उतारकर पीस लें। 10 ग्राम मक्खन, 10 ग्राम मिश्री मिलाकर एक महीना खायें। दिमाग की कमजोरी के लिए अच्छा है।

● तुलसी के पत्तों को पीसकर मक्खन में अच्छी तरह से मिला दें। फिर चेहरे पर मलें। कील-झाइयां, काले दाग दूर हो जाते हैं। और चेहरा सुन्दर होता है।

● इन्द्रा वर्णी की जड़ घिसकर पिला दें। बच्चे को पेटदर्द, पेट के कीड़े, खुजली के लिये एक तोला खा लें। बड़ भी खा सकते हैं।

● (पायरिया) करंजी के पेड़ की दातुन करने से दांत-मसूढ़ों का दर्द ठीक हो जाता है।

गैस व कब्ज का योग

हरी हरड़ 100 ग्राम, काली हरड़ 100 ग्राम, बहेड़ा 100 ग्राम, आंवला सूखा 100 ग्राम, काला नमक 100 ग्राम अगर कब्ज रहती हो तो बड़ा चम्मच दूध के साथ रात को लें। अगर गैस हो तो तीनों समय पानी के साथ लें। सभी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

ब्लड प्रेशर का योग

जटामासी, जेब में रखें या सिरहाने में रखें तो ब्लड प्रेशर ठीक रहता है।

□□□

लेखक की ओर से दो शब्द

प्रिय पाठकों व स्वकटुम्बियों से निवेदन है कि इस भैषज्य भास्कर में एक से बढ़कर एक योग कामयाब हैं। लेकिन सही असली जड़ी-बूटियां बाजार से लें। अगर किसी कारण असली का पता न चले तो किसी जानकर व्यक्ति से सही जानकारी लेना ज़रूरी है ताकि योग जो अनुभूत दिये गये हैं, आपको फायदा तभी होगा जब सही प्रयोग किया जाएगा। मैं मंगल कामना करता हूं कि आप सभी को बहुत फायदा पहुंचे।

"जय भोलेनाथ कल्याण करो!"

ॐ स्वास्थ्यपरामर्श ॐ

卐 अन्न को आधा करो, शाक को करो दुगुना।
हंसने को तिगुना करो, पानी को चौगुना॥

अर्थात्—रोटी आप चार खाते हैं तब दो खाइये, खाने के साथ साग आप जितना खाते हैं उससे दो गुना खाइये, सुबह से शाम तक आप जितना हंसते हैं उससे तिगुना हंसिये, प्रतिदिन आप जितना पानी पीते हैं उससे चौगुना पानी पीजिये।

卐 वामशायी द्विभुंजानः षड्मूत्री द्विपुरीषकः।
स्वल्प मैथुन थुनकारी, शतवर्षाणि जीवति॥

—धन्वन्तरि

अर्थात्—बायीं करवट सोने वाला, दो समय खाने वाला, छह बार पेशाब जाने वाला, दो बार शौच जाने वाला, थोड़ा मैथुन करने वाला, सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होता है।

卐 भोजनान्ते पिवेत् तक्रम, वासरान्ते पिवेत् पयः।
निशान्ते च पिवेत् वारि, त्रिभी रोगी न जायते॥

—धन्वन्तरि

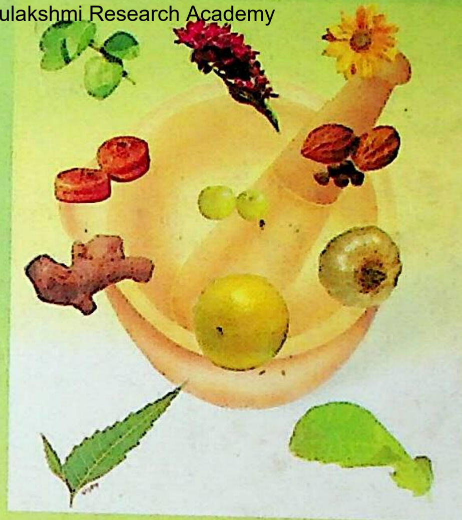
अर्थात्—खाने के बाद मट्ठा पीवे, रात्रि को दूध पीवे, बिस्तर से उठने पर सर्व प्रथम पानी पीवे, यह तीन काम करने से कभी रोग नहीं होता।

卐 हरि हरीतकीम् चैव, सावित्री दिने दिने।

अर्थात्—भगवान का भजन, हरड़ का सेवन और गायत्री जाप नित्य करें।

मनोज

डायमंड
हैल्थ
सीरीज़



A.H.W. SAMEER SERIES

50/-

डायमंड पाकेट बुक्स